फरीदाबाद हरियाणा का नंबर 1 समाचार पत्र

भेदी नज़र

संस्थापक : स्वाधीनता सेनानी सुखवासी लाल शर्मा (ब्रह्मलीन)

ई-पेपर पढ़ने के लिए लॉगऑन करें - www.bhedinazar.com

दिल्ली, शुक्रवार 18 जुलाई 2025

दिल्ली, हरियाणा, चड़ीगढ़, पंजाब, राजस्थान, बिहार, झारखंड, उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश का प्रमुख हिन्दी दैनिक

वर्ष : 22 अंक : 97 Email : bhedinazardaily@gmail.com RNI NO. DEL/HIN/2004/13528 Postal REG. No. HR (FBD) -260/2023/25 पृष्ठ : 12 मूल्य : 1 रुपये

बांग्लादेश में फिल्ममेकर सत्यजीत रे का घर गिराने पर रोक

- भारत ने रोकने की अपील की थी, अब इसे फिर से बनाया जाएगा

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में भारत के मशहूर फिल्म निर्देशक सत्यजीत रे के पैतृक घर के तोड़े जाने पर रोक लगा दी गई है। सत्यजीत रे के पुरखों के घर मैमनसिंह शहर में है। अधिकारियों ने अब यह तय करने के लिए एक समिति बनाई है कि इस घर को दोबारा कैसे बनाया जा सकता है। भारत ने मंगलवार को बांग्लादेश से सत्यजीत रे की पैतृक संपत्ति को ध्वस्त करने के फैसले पर रोक लगाने की अपील की थी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी इस तोड़फोड़ का विरोध करते हुए कहा कि

यह घर बंगाल के सांस्कृतिक इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है। सत्यजीत रे एक प्रसिद्ध भारतीय फिल्म डायरेक्टर, लेखक, संगीतकार और चित्रकार थे। उन्हें विश्व सिनेमा के बड़े फिल्मकारों में से एक माना जाता है। बांग्लादेश में सत्यजीत रे का घर लगभग सौ साल पहले बनाया गया था। 1947 में बंटवारे के बाद यह संपत्ति बांग्लादेश सरकार के अधीन हो गई थी। प्रशासन ने अपनी गलती मानी यह घर दरअसल सत्यजीत रे के दादा, प्रसिद्ध लेखक उपेंद्रकिशोर रे चौधरी से जुड़ा है। हालांकि, बांग्लादेश उच्चायोग के एक अधिकारी फैसल महमूद ने बताया कि सत्यजीत रे खुद कभी इस घर में नहीं रहे थे। उन्होंने यह भी कहा कि उपेंद्रकिशोर भी शायद इस घर में नहीं रहे थे, क्योंकि वह पास के किशोरगंज जिले के कोटियाडी नाम की जगह में रहते थे।

अब बिहार में हॉस्पिटल में घुसकर गैंगस्टर का मर्डर

- 10 हत्या के आरोपी को मारी 4 गोलियां, फुलवारी शरीफ का रहने वाला है शूटर

पटना (एजेंसी)। पटना के पारस अस्पताल में भर्ती गैंगस्टर चंदन मिश्रा की अपराधियों ने अस्पताल के अंदर घुसकर हत्या कर दी। गुरुवार को शास्त्री नगर थाना क्षेत्र में अस्पताल में घुसकर गोली मारी गई। 5 की संख्या में आए अपराधियों ने हॉस्पिटल के बाहर गाड़ी खड़ी की, अस्पताल में घुसकर वारदात को अंजाम दिया और फरार हो गए। वारदात का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। बताया जा रहा है कि अपराधियों ने चंदन को शूट करने का वीडियो भी बनाया। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है। मृतक का नाम चंदन मिश्रा है। चंदन, बेऊर जेल से पैरोल पर इलाज के लिए पारस अस्पताल आया था। उसका

बवासीर का ऑपरेशन हुआ था। चंदन बक्सर का रहने वाला था। बक्सर में राजेंद्र केसरी नाम के चूना व्यवसायी की हत्या के मामले में कोर्ट ने दोषी ठहराया था। उसे उम्रकैद की सजा हुई थी। पटना एसएसपी ने बताया कि चंदन एक कुख्यात अपराधी था। वो10 से ज्यादा मर्डर केस में आरोपी था। मामले की जांच के लिए एसआईटी का गठन किया गया है। पटना पुलिस ने सीसीटीवी की मदद से शूटर की पहचान की है। उसके खिलाफ हत्या, आर्म्स एक्ट समेत एक दर्जन से अधिक केस दर्ज हैं। पुलिस का दावा है कि शूटर पटना के फुलवारी शरीफ का रहने वाला है। इस घटना को लेकर आईजी जितेंद्र राणा का बयान आया है। उन्होंने बताया कि अपराधी चंदन मिश्रा हाल ही में इलाज के लिए जेल से पैरोल पर बाहर आया था।

नीट यूजी रीएग्जाम पर अब सुप्रीम कोर्ट में होगी सुनवाई

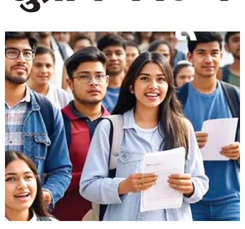

भोपाल (एजेंसी)। नीट यूजी 2025 एग्जाम इंदौर और उज्जैन के सेंटर्स पर दोबारा कराने की मांग अब सुप्रीम कोर्ट में सुनी जाएगी। अदालत ने इस संबंध में दर्ज पिटीशन पर सुनवाई की मांग मान ली है। अगले सप्ताह इस विवाद पर सुप्रीम कोर्ट की बेंच सुनवाई करेगी। 14 जुलाई को एमपी हाईकोर्ट की इंदौर बेंच ने रीएग्जाम की मांग वाली याचिका खारिज की थी। इसके बाद एनटीए ने उन 75 स्टूडेंट्स का रिजल्ट जारी कर दिया था जिनका रिजल्ट रोका गया था। अब याचिकाकर्ता इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंचे हैं। दरअसल, इस साल नीट यूजी परीक्षा 4 मई को देशभर के 552 एग्जाम सेंटर्स पर आयोजित हुई थी।

इंदौर नंबर-1 पर कायम, अहमदाबाद की बड़ी छलांग

स्वच्छ सर्वेक्षण 2024-25 अवॉर्ड का हो गया ऐलान

अहमदाबाद/नई दिल्ली (एजेंसी)। स्वच्छ सर्वेक्षण 2025 में एक बार फिर से मध्य प्रदेश के इंदौर का डंका बजा है लेकिन गुजरात के अहमदाबाद को बड़े शहरों में सबसे स्वच्छ के तौर पर पहली रैंक दी गई है। गुरुवार को नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु की मौजूदगी में 75 शहरों को 74 अवॉर्ड चार कैटेगरी में बांटे गए। देश के सबसे साफ शहरों में इंदौर पहले, छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर को दूसरा और कर्नाटक के मैसरु को तीसरा स्थान मिला है। 10 लाख से अधिक आबादी वाले शहरों की कैटेगरी में गुजरात का अहमदाबाद सबसे स्वच्छ शहर बनकर उभरा है। गौरतलब हो कि केंद्र सरकार ने 2036 ओलंपिक खेलों के लिए अहमदाबाद का चयन किया है। इतना ही केंद्र सरकार ने आधिकारिक तौर पर अहमदाबाद के लिए ही दावेदारी की है। गुजरात के वडोदरा के ओवरऑल 18वीं रैंक मिली है।

पिछले साल शहर 33वें नंबर पर था, हालांकि इससे पहले वडोदरा स्वच्छता में आठवें नंबर तक पहुंच चुका है। स्वच्छ सर्वेक्षण अवॉर्ड में पिछले सालों में टॉप थ्री में रहने वाले शहरों को सुपर स्वच्छ लीग अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इसमें इंदौर और सूरत के साथ नवी मुंबई हैं।

'ईच वन-क्लीन वन' की नई पहल

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि हर शहर की यह इच्छा होती है कि वह आगे रहे। यह अच्छा है, लेकिन अब मंत्रालय एक नई पहल शुरू कर रहा है। इसमें अच्छी रैंक हासिल करने वाले शहरों को कम रैंक हासिल करने वाले शहरों को एजूकेट करना होगा। उन्होंने कहा कि मंत्रालय की ओर नई पहल स्वच्छ सिटी पार्टनरशिप शुरू कर रहे हैं। यह 'ईच वन टीच वन' की तर्ज पर 'ईच वन क्लीन वन' है। उन्होंने कहा कि अब देश स्वच्छ भारत सपन्न भारत के मंत्र से आगे बढ़ रहा है। सूरत को अवॉर्ड समारोह में जहां बेस्ट सिटी इन सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट के लिए अवॉर्ड मिला तो वहीं नवी मुंबई को बेहतर सिटीजन फीडबैक के लिए सम्मानित किया गया। अहमदाबाद को बड़े शहरों में सबसे साफ शहर चुने जाने पर गुजरात के स्वास्थ्य मंत्री ऋषिकेश पटेल ने खुशी जाहिर की है। गुजरात के तीन शहर स्वच्छ सर्वेक्षण 2024-2025 में चमके हैं। इनमें अहमदाबाद, सूरत और गांधीनगर शामिल हैं।

भारत-रूस बनाएंगे ब्रह्मोस हाइपरसोनिक मिसाइल

- चीन से लेकर अमेरिका तक सारे एयर डिफेंस हो जाएंगे फेल, ऐसी है ताकत

मॉस्को (एजेंसी)। ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल की ताकत ऑरपरेशन सिंदूर के दौरान दुनिया देख चुकी है। ब्रह्मोस मिसाइलों ने पाकिस्तान के 11 एयरबेस में तबाही मचा दी थी। सोचिए जिस ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल को आज की तारीख में गिने चुने मोस्ट एडवांस एयर डिफेंस सिस्टम ही इंटरसेप्ट कर सकते हैं, अगर उसका हाइपरसोनिक वैरिएंट भी बन जाए तो क्या होगा।

जी हां... भारत के डिफेंस सेक्टर के लिए बहुत बड़ी खुशखबरी है कि भारत और रूस बहुत जल्द ब्रह्मोस हाइपरसोनिक मिसाइल बनाने के लिए प्रोजेक्ट शुरू कर रहे हैं। ब्रह्मोस एयरोस्पेस

के पूर्व महानिदेशक अतुल राणे ने रूस की सरकारी न्यूज एजेंसी से बात करते हुए कहा है कि ब्रह्मोस हाइपरसोनिक मिसाइल प्रोजेक्ट की 'ईंट रखी जा रही है'। यानि इस प्रोजेक्ट को लेकर काम शुरू हो चुका है। जिसका मतलब है कि भारत अब आधिकारिक तौर पर हाइपरसोनिक मिसाइलों की रेस में शामिल हो चुका है जो आने वाले कुछ सालों में दुनिया की सैन्य शक्ति को बदलकर रख देगा। यानि भारत के पास ब्रह्मोस के तीन वैरिएंट होंगे। एक ब्रह्मोस, जिसका इस्तेमाल हो रहा है। ब्रह्मोस का निर्माण अभी चल रहा है।

सोना तस्करी मामले में रान्या को नहीं मिली जमानत

- कन्नड़ एक्ट्रेस को अदालत से मिली 1 साल की सजा

बंगलुरु (एजेंसी)। कन्नड़ फिल्म एक्ट्रेस रान्या राव को सोना तस्करी मामले में एक साल की सजा सुनाई गई है। बुधवार को यह आदेश विदेशी मुद्रा संरक्षण और तस्करी गतिविधियों की रोकथाम अधिनियम के तहत सलाहकार बोर्ड ने जारी किया। रिपोर्ट के अनुसार, बोर्ड ने रान्या को सजा की पूरी अवधि के दौरान जमानत का अधिकार नहीं दिया है। बता दें कि इससे पहले 20 मई को बेंगलुरु की एक अदालत ने रान्या और सह-आरोपी तरुण राजू को प्रक्रिया संबंधी आधार पर डिफॉल्ट जमानत दी थी। जिसका कारण ये था कि डायरेक्टोरेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलिजेंस यानी डीआरआई तय समय में चार्जशीट दाखिल नहीं कर पाया था। अदालत ने दोनों को 2 लाख रुपये के बॉन्ड और दो जमानती शर्तों पर डिफॉल्ट जमानत दी थी।

ओडिशा स्टूडेंट डेथ केस

कांग्रेस सहित 8 विपक्षी पार्टियों का बड़ा प्रदर्शन

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा में सेक्शुअल हैरेसमेंट की शिकार छात्रा की मौत को लेकर विपक्ष ने गुरुवार को ओडिशा बंद बुलाया। प्रदर्शनकारियों ने भद्रक में ट्रेन को रोक दिया। भुवनेश्वर में बसों का चक्काजाम किया। यात्रियों को पैदल ही घर जाना पड़ा। भद्रक जिले के चेन्नई-कोलकाता हाईवे पर टायर जलाए गए। जिसके चलते ट्रकों की लंबी कतार लग गई। वहीं आसपास की कई दुकानों को बंद रखा गया। मार्केट में सन्नाटा रहा।

मयूरभंज में भी लोग सड़क पर प्रदर्शन करने उतरे। कांग्रेस सहित 8 विपक्षी पार्टियां इस प्रदर्शन में शामिल हुईं। इनमें बीजू जनता दल, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया मार्क्सवादी सीपीएम (एम), सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया के नेता-कार्यकर्ता भी प्रदर्शन में नजर आए।

पेपरलीक से त्रस्त था राजस्थान, सीएम ने बरती सख्ती

- शाह बोले-एसआईटी बनाकर माफिया को दिया कड़ा संदेश
- कहा-हमने पाकिस्तान में घुसकर आतंकी ठिकानों को उड़ाया

जयपुर (एजेंसी)। केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा- राजस्थान पेपर लीक से त्रस्त था। भजनलाल सरकार ने एसआईटी का गठन कर माफिया को कड़ा संदेश दिया। कांग्रेस के कार्यकाल में बार-बार आतंकवादी हमले होते थे। पीएम नरेंद्र मोदी ने आतंकवादियों को बार-बार सबक सिखाया। ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान में घुसकर उनके ठिकानों को तबाह किया गया। इससे पहले उरी, पुलवामा हमले का भी मुंहतोड़ जवाब दिया गया था। ऊंटों का अस्तित्व को बचाने के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है। कोऑपरेटिव का उपयोग कर ऊंटों का नस्ल संरक्षण और ऊंटनी के दूध के औषधीय गुणों पर रिसर्च शुरू किया गया है। इससे आने वाले दिनों में ऊंटों पर कोई

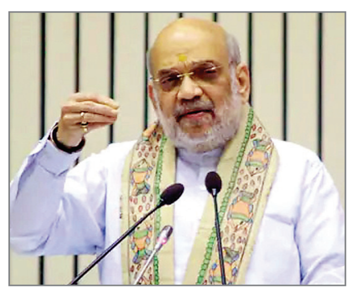

खतरा नहीं आएगा। शाह गुरुवार को जयपुर से करीब 22 किमी दूर दादिया में थे। यहां सहकारिता सम्मेलन के तहत पुलिस के 100 नए वाहनों को हरी झंडी दिखाई। सहकार उत्पादों की प्रदर्शनी देखी। सरकारी नौकरी पाने वालों को नियुक्ति पत्र बांटे। केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह गुरुवार दोपहर करीब सवा बारह बजे जयपुर एयरपोर्ट पहुंचे थे। यहां से दादिया (सभास्थल) के लिए हेलीकॉप्टर से रवाना होना था। खराब मौसम के कारण उनका हेलिकॉप्टर उड़ नहीं पाया। इसके बाद वह सड़क मार्ग से दादिया पहुंचे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा- राजस्थान को पूरा देश ऊंटों की भूमि के रूप में जानता है। कोऑपरेटिव का उपयोग कर ऊंटों का अस्तित्व बचाने का प्रयास किया जा रहा है।

3 करोड़ी कोठी ध्वस्त, यूपी से मुंबई तक तड़ातड़ छापे

- 'तिलिस्मी' छांगुर बाबा पर यूं बरसा योगी सरकार का डंडा

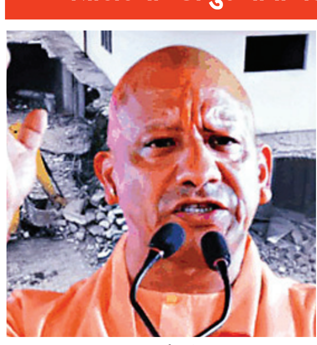

बलरामपुर (एजेंसी)। बीती पांच जुलाई को लखनऊ के एक होटल में ठहरे 76 साल के जलालुद्दीन उर्फ छांगुर बाबा को यूपी एटीएस ने धरदबोचा। साथ में उसकी सहयोगी नीतू उर्फ नसरीन भी मिली। दोनों को रिमांड पर लेकर पुलिस ने पूछताछ शुरू की। फिर जो खुलासे हुए, उसे जानकर हर कोई दंग रह गया। इसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सख्त रुख अख्तियार किया। उन्होंने सीधे शब्दों में कहा कि जलालुद्दीन की गतिविधियां समाज विरोधी ही नहीं बल्कि राष्ट्र विरोधी भी हैं। उसको ऐसी सजा दी जाएगी जो समाज के लिए नजीर बनेगी। फिर छांगुर बाबा के बुरे दिन आ गए। सबसे पहले बलरामपुर की उसकी आलीशान कोठी को बुलडोजर से गिरा दिया गया। तीन करोड़ की इस कोठी में सुख-सुविधा के सभी साधन मौजूद थे। छापेमारी में पुलिस को शक्तिवर्धक दवाएं और मसाल आयल भी बरामद हुआ। इस कोठी को गिराने में प्रशासन का आठ लाख रुपया खर्च हुआ। इसे भी छांगुर बाबा से वसूला जाएगा। छांगुर बाबा के नेटवर्क को तोड़ने के लिए एटीएस ने यूपी के अलग-अलग जिलों में छापेमारी शुरू कर दी। छांगुर बाबा के बेटे और भतीजे को भी गिरफ्तार कर लिया गया। अब पूरे मामले में ईडी की भी एंट्री हो गई। पता चला कि छांगुर बाबा और नीतू के बैंक खातों से 100 करोड़ के अवैध लेन-देन हुआ है।

14 बैंक खातों की मिली जानकारी, 5 विदेश में-

ईडी को छांगुर बाबा के 14 बैंक खातों की जानकारी मिली है। इनमें कई विदेशी देशों से जमकर फंडिंग आई है। बाबा का नेटवर्क नेपाल और दुबई तक फैला हुआ था। विदेश में भी इस गैंग के पांच बैंक अकाउंट के बारे में पता चला है। बताया जा रहा है कि गैंग के सदस्य पिछले कुछ सालों के भीतर 50 इस्लामिक देशों का दौरा कर चुके हैं। इन पैसों को किसने भेजा, इनका क्या उपयोग हुआ, ईडी इसके बारे में छानबीन कर रही है।

- चुनाव से पहले नीतिश सरकार का बड़ा दांव

अब 125 यूनिट फ्री मिलेगी बिजली

पटना (एजेंसी)। बिहार के लोगों को 125 यूनिट बिजली मुफ्त में मिलेगी। साथ ही अगले तीन वर्षों में घरेलू उपभोक्ताओं को सौर ऊर्जा का भी लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने गुरुवार को एक्स पर इसका ऐलान किया। सीएम ने एक्स पर बताया- हम लोग शुरू से ही सस्ती दरों पर सभी को बिजली उपलब्ध करा रहे हैं। अब हमने तय कर दिया है कि 1 अगस्त, 2025 से,यानी जुलाई माह के बिल से ही राज्य के सभी घरेलू उपभोक्ताओं को 125 यूनिट तक बिजली का कोई पैसा नहीं देना पड़ेगा। इससे राज्य के कुल 1 करोड़ 67 लाख परिवारों को लाभ होगा। हमने यह भी तय किया है कि अगले तीन वर्षों में इन सभी घरेलू उपभोक्ताओं से सहमति लेकर उनके घर की छतों पर अथवा नजदीकी सार्वजनिक स्थल पर सौर ऊर्जा संयंत्र लगाकर लाभ दिया जाएगा। कुटीर ज्योति योजना के तहत जो अत्यंत निर्धन परिवार होंगे उनके लिए सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने के लिए पूरा खर्च राज्य सरकार करेगी, बाकी के लिए भी सरकार उचित सहयोग करेगी।

पंजाब ने प्रतिष्ठित 'राष्ट्रीय एक जिला एक उत्पाद पुरस्कार 2024' के लिए राज्य श्रेणी में स्वर्ण पदक जीता : कैबिनेट मंत्री संजीव अरोड़ा

चंडीगढ़ : पंजाब के उद्योग एवं वाणिज्य, निवेश प्रोत्साहन और प्रवासी भारतीय मामलों संबंधी मंत्री संजीव अरोड़ा ने बताया कि पंजाब को प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एक जिला एक उत्पाद पुरस्कार 2024 में राज्य श्रेणी में स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ है। उन्होंने आगे बताया कि इस पुरस्कार की घोषणा 14 जुलाई, 2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा 'एक जिला एक उत्पाद' पहल के अंतर्गत जिला-विशेष उत्पादों को प्रोत्साहित करने में पंजाब की उत्कृष्टता और नवाचार को मान्यता देते हुए की गई थी। संजीव अरोड़ा ने बताया कि यह शानदार उपलब्धि उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के अथक प्रयासों, समर्पण और टीमवर्क को दर्शाती है। एक जिला एक उत्पाद पहल के अंतर्गत पंजाब के सर्वोत्तम अभ्यासों को दर्शाती यह प्रस्तुति एक जिला एक उत्पाद पुरस्कार 2024 के दौरान उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के सचिव कमल किशोर यादव द्वारा दी गई। इस प्रस्तुति के दौरान जिला-आधारित उत्पादों को प्रोत्साहित करने और कारोबार करना सुगम बनाने संबंधी पंजाब के प्रगतिशील और टिकाऊ प्रयासों को उजागर किया गया। यह पुरस्कार पंजाब के उद्योग एवं वाणिज्य विभाग की डायरेक्टर सुरभी मलिक, आई.ए.एस. द्वारा प्राप्त किया गया।

उन्होंने आगे कहा कि यह पंजाब के लिए बहुत गर्व की बात है, यह दर्शाता है कि समन्वित नीति के तहत नवाचार और समावेशी औद्योगिक विकास को कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है। पंजाब की प्रमुख पहलों और परिणामों में ग्रीन स्टैंप पेपर पहल, कारोबार का अधिकार अधिनियम 2020 के तहत शीघ्र अनुमतियाँ, एक जिला एक उत्पाद के माध्यम से फसली विविधता, निर्यात उपलब्धियाँ, बाजार प्रोत्साहन, कौशल निर्माण और नवाचार, प्रभावशाली वृद्धि आदि शामिल हैं।

टी.बी.एस. इंटरनेशनल स्कूल में 'एक पेड़ मां के नाम' मुहिम के तहत पौधारोपण किया

फिरोजपुर : फिरोजपुर-मोगा रोड पर स्थित टी.बी.एस. इंटरनेशनल स्कूल में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय कदम उठाया गया। स्कूल के इको क्लब द्वारा 'हरियाली मिशन' के अंतर्गत 'एक पेड़ मां के नाम' मुहिम को बढ़ावा देने हेतु विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

यह विद्यालय चेयरमैन डॉ. हीरालाल शर्मा, वाइस चेयरमैन विभोर शर्मा, महासचिव शिवम शर्मा और मैनेजिंग डायरेक्टर दीपाली शर्मा के कुशल नेतृत्व में संचालित हो रहा है। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार के पौधे स्कूल में लाकर उनका उत्साहपूर्वक रोपण किया।

इस मौके पर स्कूल प्रबंधन के महासचिव शिवम शर्मा, मैनेजिंग डायरेक्टर दीपाली शर्मा और प्रिंसिपल रेखा पासी ने छात्रों के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए उन्हें पौधों की नियमित देखभाल और पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। 'एक पेड़ मां के नाम' जैसी पहलें न केवल प्रकृति के प्रति प्रेम को जागरूक करती हैं, बल्कि जीवन में स्थिरता और जिम्मेदारी की भावना को भी विकसित करती हैं। टी.बी.एस इंटरनेशनल स्कूल द्वारा भविष्य में भी इस तरह की जागरूकता गतिविधियों को जारी रखने का संकल्प लिया गया।

जनसंख्या विस्फोट पर डीसीएम इंटरनैशनल स्कूल में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

● नेहरू युवा केन्द्र व माई भारत के सहयोग स्कूल में हुई थी प्रतियोगिता

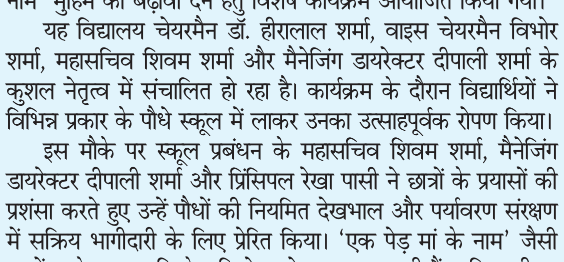

फिरोजपुर : डीसीएम इंटरनैशनल स्कूल द्वारा नेहरू युवा केन्द्र -माई भारत- के सहयोग से विश्व जनसंख्या नियंत्रण दिवस के उपलक्ष्य में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियो ने बढ़ती जनसंख्या के दुष्प्रभावो और लाभ के बारे में विस्तृत चर्चा की। प्रिंसिपल अनुराधा चंदेल ने बताया कि प्रतियोगिता में विद्यार्थियो की टीमे बनाई गई थी, जिसमें उन्होंने विस्तृत रूप से जनसंख्या विस्फोट पर अपने विचार पेश किए। उन्होंने कहा कि बढ़ती जनसंख्या चिंता का विषय है। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रवज्जलन के साथ की गई और नेहरू युवा केन्द्र से आए प्रतिनिधियो का ग्रीन वैल्कम स्कूल स्टॉफ द्वारा किया गया।

प्रतियोगित में खुशमीन कौर और मनसीतर कौर की टीम ने पहला स्थान हासिल किया। उसी तरह आकृति और कृषिका ने दूसरा तथा दिव्यांश व विवानजीत ने तीसरे स्थान पर कब्जा जमाया। विद्यार्थियो ने कहा जनसंख्या का बढना अनेको चुनौतियो को न्यौता दे रहा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में बढ़ती जनसंख्या पर लगाम लगाना समय की बड़ी मांग है। उन्होंने कहा कि आबादी बढने के कारण प्राकृतिक संसाधन खत्म हो रहे है और हरी-भरी भूमि का शहरीकरण हो रहा है।

नेहरू युवा केन्द्र और प्रिंसिपल द्वारा विजेता विद्यार्थियो का सम्मान किया गया। स्कूल प्रशासन ने माई भारत की टीम सदस्यो को भी सम्मानित किया। इस अवसर पर अध्यापक रक्षपाल नूतन, बेनू, रीटा, कविता सहित अन्य उपस्थित थे।

ग्रीन ऊर्जा की ओर कदम जिलों की अनाज मंडियों में 24.5 करोड़ रुपये की लागत से लगेंगे सोलर प्रोजेक्ट, बिजली खर्च में होगी सालाना 3.5 करोड़ रुपये की बचत

जाब भर की मंडियों में 50,000 से अधिक पौधे लगाए जाएंगे : हरचंद सिंह बर्सट

चंडीगढ़ : नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए, पंजाब मंडी बोर्ड ने जालंधर, पटियाला, फिरोजपुर और लुधियाना की विभिन्न मंडियों में 24.5 करोड़ रुपये की लागत से सोलर पावर प्लांट लगाने की योजना बनाई है। इस पर्यावरण-अनुकूल पहल से बिजली खर्च में प्रतिवर्ष लगभग 3.5 करोड़ रुपये की बचत होने की संभावना है। यह जानकारी पंजाब मंडी बोर्ड के चेयरमैन स हरचंद सिंह बरसट ने दी। स.बरसट ने मंडी बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ अनाज मंडियों, फल एवं सब्ज़ी मंडियों, मार्केट कमेटियों और ई-नाम से संबंधित चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा की। चेयरमैन ने आगे बताया कि पंजाब मंडी बोर्ड राज्य की मंडियों में 50,000 से अधिक पौधे लगाएगा। यह प्रयास राज्य की मंडियों और उनके आसपास हरियाली बढ़ाने तथा पर्यावरणीय स्थिरता को प्रोत्साहित करने हेतु मंडी बोर्ड की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। स. बरसट ने अधिकारियों को तलवंडी साबो स्थित गेस्ट हाउस के नवीनीकरण कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए ताकि इसे किसान भवन, चंडीगढ़ की तर्ज़ पर संचालित किया जा सके।

इसके अलावा उन्होंने बोर्ड की आवासीय कॉलोनियों में खाली पड़े मकानों को आवंटित करने की तत्काल कार्रवाई करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि सब्ज़ी मंडियों के आधुनिकीकरण के अंतर्गत पटियाला क सनौर मंडी में बूम बैरियर लगाए गए,

जिससे मंडी फीस में बढ़ोतरी हुई। इस परियोजना की सफलता को देखते हुए इसे राज्य की अन्य मंडियों में भी लागू करने का निर्णय लिया गया है। स. बरसट ने अधिकारियों को राज्य की मंडियों में हुए अवैध कब्जों को तत्काल हटाने और सब्ज़ी मंडियों की स्वच्छता बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने यह भी कहा कि मंडियों में उत्पन्न होने वाले कचरे के दैनिक निष्पादन को सुनिश्चित किया जाए तथा इस बायो-वेस्ट से आय सृजन हेतु कदम उठाए जाएं। बोर्ड की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए चेयरमैन स बरसट ने बताया कि मंडी बोर्ड को इस वर्ष अब तक 842 प्लॉटों की ई-नीलामी से 373 करोड़ रुपये की आय प्राप्त हुई है। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य की मंडियों के कवर शेडों को ऑफ-सीजन के दौरान आम जनता के उपयोग हेतु खोले जाने की पहल को व्यापक सराहना मिली है, जिससे अब तक एक करोड़ रुपये की आय हुई है। यह पहल मंडियों के मौजूदा बुनियादी ढांचे के उपयोग को सुदृढ़ करने की दिशा में मंडी बोर्ड के प्रयासों को दर्शाती है।

विधानसभा में सभी विधेयकों का सर्वसम्मति से पारित होना 'आप' सरकार की दूरदर्शी और ईमानदार सोच की महत्वपूर्ण उपलब्धि : हरपाल सिंह चीमा

चंडीगढ़ : हाल ही में हुए पंजाब विधानसभा सत्र की एक अनोखी और ऐतिहासिक उपलब्धि–जिसके तहत मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली पंजाब सरकार द्वारा प्रस्तुत सभी अधिनियम, विधेयक और प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए–को उजागर करते हुए वित्त मंत्री एडवोकेट हरपाल सिंह चीमा ने इस शानदार एकता का श्रेय आम आदमी पार्टी (आप) सरकार की जनकल्याण और राज्य के विकास के लिए की गई सतत व निष्ठावान कोशिशों को दिया। आज यहां पंजाब भवन में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने कहा कि उन्होंने अपने दोनों कार्यकालों में पहले कभी विधानसभा सत्र के दौरान सभी विधायी मामलों में पूर्ण सहमति नहीं देखी थी। उन्होंने कहा कि यह 'आप' सरकार की सावधानीपूर्ण, योजनाबद्ध और ईमानदार कार्यप्रणाली का संकेत है, जिसका उद्देश्य पंजाब को प्रगति की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना है।

वित्त मंत्री चीमा ने विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस बार विधानसभा सत्र को पहले ही दिन दो दिन बढ़ा दिया गया, जिससे महत्वपूर्ण विधेयकों पर गहराई से चर्चा हो सकी और विपक्ष को भी सार्थक योगदान देने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने विशेष रूप से पंजाब धार्मिक ग्रंथों के विरुद्ध अपराधों की रोकथाम विधेयक, 2025 का उल्लेख किया, जिसे विस्तृत चर्चा के बाद सर्वसम्मति से सिलेक्ट कमेटी को भेजा गया। उन्होंने कहा कि यह विधेयक राज्य सरकार की सभी धार्मिक ग्रंथों की बेअदबी को रोकने हेतु एक सशक्त कानून बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने सत्र के दूसरे दिन जल संसाधन मंत्री बरिंदर गोयल द्वारा प्रस्तुत एक प्रस्ताव के सर्वसम्मति से पारित होने का भी उल्लेख किया, जिसमें बी.बी.एम.बी. संस्थानों में सी.आई.एस.एफ. की तैनाती का कड़ा विरोध किया गया था। उन्होंने बताया कि कांग्रेस पार्टी ने 2021 में बी.बी.एम.बी. में सी.आई.एस.एफ. सुरक्षा के लिए सहमति दे दी थी, और यह कदम केंद्र तथा हरियाणा की भाजपा सरकारों द्वारा कांग्रेस की मिलीभगत से पंजाब के विरुद्ध रची गई एक साजिश माना गया। वित्त मंत्री चीमा ने कहा कि पिछले 70 वर्षों से पंजाब पुलिस ने सख्त सुरक्षा प्रदान की है और कभी भी सुरक्षा से समझौता नहीं किया गया। उन्होंने कांग्रेस पार्टी की सराहना की कि उसने आप सरकार के इस प्रस्ताव का समर्थन कर अपनी पिछली गलती को सुधारा।

उन्होंने कहा कि 'रियात बाहरा प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, होशियारपुर विधेयक-2025' और 'सी.जी.सी. यूनिवर्सिटी, मोहाली विधेयक-2025', जिसका उद्देश्य राज्य के शैक्षणिक ढांचे को सुदृढ़ करना है, को भी विपक्ष द्वारा सर्वसम्मति से समर्थन प्राप्त हुआ।

पंजाब दुकानें और व्यावसायिक प्रतिष्ठान विधेयक 2025 का उल्लेख करते हुए वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने कहा कि 1958 के बाद पहली बार संशोधित हुआ 'पंजाब दुकानें और व्यावसायिक प्रतिष्ठान अधिनियम, 1958', खासकर छोटे व्यापारियों को बड़ी राहत प्रदान करते हुए लंबे समय से चल रहे इंस्पेक्टर राज का अंत करेगा। उन्होंने कहा कि इसके अलावा पंजाब श्रमिक कल्याण कोष विधेयक, 2025 भी प्रस्तुत किया गया, जिसमें संस्थानों के मालिकों की कार्यकुशलता और कर्मचारियों की भलाई–दोनों को ध्यान में रखते हुए संशोधन तैयार किए गए हैं। इस विधेयक को भी सर्वसम्मति से पारित किया गया।

वित्त मंत्री ने बताया कि विधानसभा ने द प्रिवेंशन ऑफ क्रुएल्टी टू एनिमल्स (पंजाब संशोधन) विधेयक, 2025 को भी सर्वसम्मति से पारित किया, जो विशेष रूप से किला रायपुर में बैलगाड़ियों की दौड़ की अनुमति देता है, जिससे पंजाब की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की रक्षा और प्रचार सुनिश्चित होगा।

वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने अपने विभाग से संबंधित दो विधेयकों के भी सर्वसम्मति से पारित होने की जानकारी दी, जिनमें पंजाब राज्य विकास कर (संशोधन) विधेयक, 2025, जो वार्षिक एकमुश्त भुगतान चुनने वालों को 200 रुपये की छूट प्रदान करता है, और पंजाब निरसन अधिनियम (रद्द) विधेयक, 2025 शामिल है, जिसका उद्देश्य 1985 के बाद के पुराने विधेयकों को रपील करना है।

अंत में वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने युद्ध नशों विरुद्ध मुहिम पर हुई व्यापक और रचनात्मक चर्चा का भी उल्लेख किया, जिसमें सभी पार्टियों द्वारा सर्वसम्मति से पंजाब से नशे के खतरे को समाप्त करने के लिए सहयोग का संकल्प लिया गया।

राज्यव्यापी अभियान के तहत गुरदासपुर ज़िले में दो बाल विवाह रोके गए: डॉ. बलजीत कौर

डॉ. बलजीत कौर ने बाल विवाह के मामलों को जड़ से समाप्त करने के लिए जन सहयोग की अपील की

चंडीगढ़ : बाल विवाह रोकथाम अभियान के अंतर्गत पंजाब सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्रयासों के तहत हाल ही में गुरदासपुर जिले में बाल विवाह के दो मामलों को सफलतापूर्वक रोका गया है।

इस संबंध में जानकारी देते हुए पंजाब की सामाजिक सुरक्षा, महिला एवं बाल विकास मंत्री डॉ. बलजीत कौर ने बताया कि जिला प्रशासन, पुलिस विभाग, जिला बाल संरक्षण इकाई (डी सी पी यू), सीडीपीओ, बाल कल्याण समितियों और चाइल्ड हेल्पलाइन टीमों द्वारा समन्वित और तेज कार्रवाई करते हुए ये दोनों बाल विवाह – गांव सहाणे चक्क (ब्लॉक कलानौर) और गांव गाधियां पन्याड (ब्लॉक गुरदासपुर) में रोके गए।

डॉ. बलजीत कौर ने यह स्पष्ट किया कि बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 के तहत 18 वर्ष से कम आयु की लड़की और 21 वर्ष से कम आयु के लड़के का विवाह दंडनीय अपराध है। जैसे ही संभावित बाल विवाह की जानकारी मिली, तुरंत हस्तक्षेप करते हुए दोनों परिवारों को कानून, बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा और भविष्य पर बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया गया।

कैबिनेट मंत्री डॉ. बलजीत कौर ने कहा कि मुख्यमंत्री स भगवंत सिंह मान के नेतृत्व में पंजाब सरकार राज्य को बाल विवाह मुक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा बाल विवाह की घटनाओं को जड़ से समाप्त करने हेतु लगातार जन जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं, ताकि पंजाब को एक प्रगतिशील और बच्चों के लिए सुरक्षित भविष्य वाला राज्य बनाया जा सके।

परिवार के सदस्यों ने अधिकारियों को सहयोग का भरोसा दिया और बच्चों के विवाह को कानूनी उम्र तक के लिए स्थगित करने की सहमति भी जताई। साथ ही भविष्य में ऐसी घटनाओं की तुरंत रिपोर्ट करने के लिए परिवारों और ग्रामीणों को चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 की जानकारी भी दी गई। डॉ. बलजीत कौर ने आम जनता से अपील की कि वे जागरूक रहें और यदि अपने आसपास कहीं भी बाल विवाह की जानकारी मिले तो तुरंत चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 या नजदीकी पुलिस स्टेशन को सूचित करें। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि सूचना देने वाले व्यक्ति का नाम और पता गोपनीय रखा जाएगा।

सोनीपत में आज करेंगे दान अपंनी सम्पति का अमूल्य हिस्सा जनहित कार्यों के लिए शशिकांत कौशिक

चंडीगढ़/ सोनीपत: देश में चर्चित विभिन्न धर्मार्थ कार्यों के लिए चर्चित रहे हरियाणा के दानवीर उद्योगपति शशिकांत कौशिक द्वारा अपनी सम्पत्ति, का अहम हिस्सा शशिकान्त इंटरनेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा एक अत्यंत महत्वपूर्ण परोपकारी कार्य के लिए करोड़ों रूपये की भूमि सहित तीन सामाजिक सेवा प्रकल्पों की स्थापना हेतु भूमि विभिन्न संस्थाओं को दान (गिफ्ट) स्वरूप गुरूवार 17 जुलाई को दान की जायेगी। यह कार्यक्रम सुबह यूनिक माल मुरथल रोड सोनीपत में गणमान्य हस्तियों की उपस्थिति में केंद्रित रहेगा । जिसमे आंखों के लिए निःशुल्क दृष्टि नेत्र जांच केंद्र स्थापित होगा। इसके साथ ही फिजियोथैरेपी एवं एक्यूप्रेशर सेंटर भी जायेगा जबकि पुस्तकालय (पुस्तकालय) भी शामिल है। यह कार्यक्रम की जानकारी देते हुए खास मेहमान रूप में गुलजारीलाल नंदा फाउंडेशन नई दिल्ली के चेयरमेन श्री कृष्णराज अरुण ने बताया कि यह एक बड़ा कदम है शशिकांत कौशिक जी का जो देश में अपनी सम्पत्ती का अधिकतर हिस्सा जनहित के कार्यों में दान करते आये हैं। एक मशहुर उद्यमी जिन्होंने हजारों बच्चे शिक्षा से वंचित ना हों उनके लिए हरिदवार से लेकर राजस्थान हरियाणा के गुरुकुल स्कुल व संस्थाओं को संसाधन उपलब्ध कराये हैं। वे कई असहाय बच्चों और राष्ट्र के लिए अपना जीवन लगाने के इच्छुक छात्रों के धर्म पिता बनकर ऐतिहासिक कार्य किया है। श्री अरुण ने कहा कि यह कार्यक्रम गरिमापूर्ण बनेगा चूंकि देश प्रदेश से उपस्थित विशेष आयोजन में हवन, पूजन, संतों का आशीर्वचन, जलपान एवं भंडारा सहित गणमान्यों की गरिमा मय उपस्थिति का हवाला दिया गया है।

करीब 7,000 गांवों में नशा विरोधी कार्यक्रम आयोजित, 4,500 से ज्यादा गांव हुए नशा मुक्त : गर्ग

● 'नशा मुक्त और रंगला पंजाब' का सपना अब जल्द ही हकीकत में बदलेगा : गर्ग ● एक तरफ राजा वड़िंग जैसे लोग कहते हैं कि पंजाब कभी नशा मुक्त नहीं हो सकता, दूसरी तरफ मुख्यमंत्री मान नशा खत्म करने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं : गर्ग

चंडीगढ़ : आम आदमी पार्टी के नेता और प्रवक्ता नील गर्ग ने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत मान के नेतृत्व में आप सरकार नशे को जड़ से खत्म करने के लिए लगातार काम कर रही है। अब %युद्ध नशयां विरुद्ध% अभियान के नतीजे जमीनी स्तर पर दिखने लगे हैं।

नशे के खिलाफ सरकार द्वारा शुरू किए गए अभियान की सराहना करते हुए नील गर्ग ने कहा कि हाल ही में %आप% सरकार ने पंजाब के गांवों में नशा विरोधी सेमिनार आयोजित किए थे। जहां लोगों ने शपथ ली कि वे अपने गांवों में न तो नशा बिकने देंगे और न ही किसी को नशा करने देंगे। ये सेमिनार 7,000 से ज़्यादा गांवों में आयोजित किए गए, जिसका नतीजा यह हुआ कि आज 4,500 से ज़्यादा गांव पूरी तरह से नशा मुक्त हो चुके हैं।

कांग्रेस नेता राजा वड़िंग पर निशाना साधते हुए गर्ग ने कहा कि वड़िंग जैसे नेता दावा करते हैं कि पंजाब कभी नशा मुक्त नहीं हो सकता। इसके उलट मान सरकार ने बड़े नशा तस्करों के ख़िलाफ कार्रवाई करके उन्हें जेल भेजा। उन्होंने कहा कि अगर इरादे मजबूत हो, तो कामयाबी जरूर मिलती है।

गर्ग ने कहा कि मान सरकार ने नशे की सप्लाई चेन तोड़ने के लिए कड़े कदम उठाए हैं। अब नशा तस्कर या तो पंजाब छोड़ रहे हैं या सलाखों के पीछे पहुंच चुके हैं। इसके साथ ही, हर गली, मोहल्ले और गांवों में नशे के खिलाफ जन-जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं ताकि युवाओं को नशे से दूर किया जा सके।

गर्ग ने आगे कहा कि युवाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए भी सरकार ने बड़े कदम उठाए हैं। मान सरकार ने अगले 6 महीनों में पंजाब के विभिन्न गांवों में 3,000 खेल मैदान बनाने का ऐलान किया है। युवाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित किया जा रहा है और उन्हें रोज़गार के अवसर भी प्रदान किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि नशे की लत में फंसे युवा अपराधी नहीं, बल्कि मरीज हैं और मान सरकार उनका इलाज करवाकर उन्हें समाज के मुख्यधारा में लाने के प्रयास कर रही है। गर्ग ने कहा कि पिछली कांग्रेस और अकाली-भाजपा सरकारों ने नशा तस्करों को राजनीतिक संरक्षण दिया, जबकि आम आदमी पार्टी की सरकार इन तस्करों के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर रही है। आज पंजाब बदलाव की ओर बढ़ रहा है और हम पूरी उम्मीद के साथ कह सकते हैं कि मुख्यमंत्री भगवंत मान का नशा मुक्त और रंगला पंजाब बनाने का सपना जल्द ही साकार होगा।

युवा सशक्तिकरण, राष्ट्र निर्माण और कौशल विकास पहलों में अग्रणीः समूह ट्राइडेंट

चंडीगढ़। विश्व युवा कौशल दिवस (वर्ल्ड यूथ स्किल डे) के अवसर पर ट्राइडेंट ग्रुप ने युवाओं को उद्योग-प्रासंगिक कौशल से सशक्त बनाने के वैश्विक संकल्प के साथ अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है। गौरतलब हो कि वर्ष 2025 के थीम 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल कौशल के माध्यम से युवा सशक्तिकरण', ट्राइडेंट ग्रुप के इस दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसमें ट्राइडेंट ग्रुप एक कुशल और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार योग्य बनाने और उनकी आजीविका में सुधार लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए ट्राइडेंट ग्रुप ने ड्यूल सिस्टम ट्रेनिंग (डीएसटी) योजना के अंतर्गत सरकारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) के साथ पांच समझौतों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इन समझौतों के तहत बरनाला स्थित ट्राइडेंट की इकाइयों में फिटर, इलेक्ट्रीशियन, सिलाई तकनीक तथा टेक्सटाइल वेट प्रोसेसिंग टेक्नीशियन जैसे उच्च मांग वाले ट्रेड्स में 100 विद्यार्थियों को छह माह का ऑन-द-जॉब प्रशिक्षण (ओजेटी) प्रदान किया जाएगा। प्रशिक्षण अवधि के दौरान प्रत्येक प्रशिक्षु को 18,000 मासिक स्टाइपेंड भी दिया जाएगा। टेक्सटाइल शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका को और आगे बढ़ाते हुए ट्राइडेंट ग्रुप भारत सरकार के नेशनल स्किल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (एन एस टी आई), लुधियाना के

साथ मिलकर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना करेगा, जिसका उद्देश्य टेक्सटाइल क्षेत्र में नवाचार, प्रशिक्षण और उत्कृष्टता का प्रमुख केंद्र बनना है।

इस पहल के तहत ट्राइडेंट समूह के चेयरमैन एमेरिटस श्री राजिंदर गुप्ता को इंस्टिट्यूट मैनेजमेंट कमेटी (आईएमसी) का चेयरमैन नियुक्त किया गया है। इस के साथ ही, ट्राइडेंट ने पंजाब और हरियाणा के विभिन्न सरकारी आईटीआई संस्थानों से जुड़कर नेशनल अप्रेंटिसशिप प्रमोशन स्कीम (एनएपीएस) के तहत ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग एवं अप्रेंटिसशिप कार्यक्रमों का भी विस्तार कर रहा है। ट्राइडेंट ग्रुप युवाओं को डिजिटल युग में सफलता के लिए आवश्यक कौशल से सशक्त बनाने और शिक्षा व रोजगार के बीच की दुरी को कम करने के लिए एक माध्यम बनने के अपने संकल्प को फिर से दोहराता है।

संक्षिप्त समाचार

क्या है एक रोड-एक दिन योजना? जिससे दिल्ली की सड़कों के कायाकल्प की तैयारी

नईदिल्ली, एजेंसी। राजधानी दिल्ली की बदहाल सड़कों की हालत सुधारने के लिए एमसीडी ने एक रोड-एक दिन नई योजना शुरू करने का ऐलान किया है। इस योजना के तहत, दिल्ली के प्रत्येक जोन में हर दिन एक सड़क की मरम्मत और सुधार का काम पूरा किया जाएगा। एमसीडी का दावा है कि यह पहल दिल्ली की सड़कों को व्यवस्थित और सुरक्षित बनाने में मदद करेगी। एक रोड-एक दिन योजना का लक्ष्य दिल्ली की सड़कों पर गड्ढों, टूटे-फूटे फुटपाथ, खराब स्ट्रीट लाइट्स और अवैध अतिक्रमण जैसी समस्याओं का समाधान करना है। एमसीडी के अनुसार, प्रत्येक सड़क पर एक दिन में मरम्मत, सफाई, साइनेज की स्थापना और सौंदर्यीकरण का काम पूरा होगा। यह योजना स्वच्छ भारत मिशन के तहत शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने की दिशा में एक कदम है। एमसीडी ने बताया कि यह योजना 1 सितंबर 2025 से शुरू होगी। स्थायी समिति की अध्यक्ष सत्या शर्मा ने कहा, हमारा लक्ष्य 2 अक्टूबर 2025, स्वच्छ भारत मिशन की वर्षगांठ तक दिल्ली की सड़कों की स्थिति में सुधार करना है। इस दौरान, प्रत्येक जोन में चुनी गई सड़कों पर काम तेजी से पूरा किया जाएगा। एमसीडी का दावा है कि इस योजना से दिल्लीवासियों को कई लाभ मिलेंगे। बेहतर सड़कें और फुटपाथ ट्रैफिक जाम और दुर्घटनाओं को कम करेंगे। स्ट्रीट लाइट्स की मरम्मत से रात में यात्रा सुरक्षित होगी, जबकि सौंदर्यीकरण से शहर का स्वरूप बेहतर होगा। हालांकि, स्थानीय लोगों का कहना है कि योजना की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि काम कितनी तेजी और गुणवत्ता के साथ पूरा होता है। एमसीडी की स्थायी समिति की अध्यक्ष सत्या शर्मा ने कहा, यह योजना दिल्ली की सड़कों को नया रूप देगी और स्वच्छ भारत मिशन के लक्ष्यों को मजबूत करेगी। वहीं, कुछ स्थानीय नेताओं और निवासियों ने इस पहल का स्वागत किया है, लेकिन समयबद्ध कार्यान्वयन पर जोर दिया है।

दिल्ली वाले तैयार रहें! दो दिन बारिश का अलर्ट

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली-एनसीआर में मौसम ने एक बार फिर करवट ली है। बुधवार को राजधानी के कई हिस्सों में हल्की से मध्यम बारिश ने लोगों को उमस भरी गर्मी से राहत दी। गुरुवार सुबह से ही घने बादल छाए हुए हैं और मौसम विभाग ने अगले दो दिनों तक बारिश का अलर्ट जारी किया है। बुधवार को हुई बारिश से दिल्लीवासियों को ठंडक का अहसास हुआ और उमस भरी गर्मी से राहत मिली। बुधवार को दिल्ली के कई इलाकों में सुबह से ही बादलों की आवाजाही देखी गई। दिन के समय बीच-बीच में धूप ने उमस को बढ़ाया, लेकिन दोपहर 11ः30 बजे से 2ः30 बजे के बीच हल्की से मध्यम बारिश ने मौसम को सुहाना बना दिया। सफदरजंग मौसम केंद्र में 15 मिमी और लोधी रोड मौसम केंद्र में 17 मिमी बारिश दर्ज की गई। इस बारिश ने तापमान को सामान्य से नीचे रखा, जिससे दिल्लीवासियों को गर्मी से काफी हद तक राहत मिली। सफदरजंग वेधशाला के अनुसार, बुधवार को अधिकतम तापमान 34 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.2 डिग्री कम है। न्यूनतम तापमान 26.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 0.8 डिग्री कम है। आर्द्रता का स्तर 72 से 100 प्रतिशत के बीच रहा, जिसने मौसम को उमस भरा लेकिन बारिश के कारण सहनीय बनाए रखा। मौसम विभाग का अनुमान है कि गुरुवार को अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री और न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। मौसम विभाग ने गुरुवार और शुक्रवार के लिए दिल्ली-एनसीआर में हल्की से मध्यम बारिश का अनुमान जताया है। बादलों की मौजूदगी के साथ कुछ इलाकों में तेज हवाएं भी चल सकती हैं। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार, मानसून की सक्रियता के कारण दिल्ली में अगले कुछ दिनों तक ऐसा ही मौसम बना रहेगा। दिल्लीवासियों को छाता और रेनकोट साथ रखने की सलाह दी जा रही है। बारिश और मौसमी गतिविधियों के कारण दिल्ली की हवा साफ बनी हुई है। दिल्ली का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक 67 अंक रहा, जो संतोषजनक श्रेणी में आता है।

पत्नी पहली हो या दूसरी, दोनों को गुजारा भत्ता का हक... दिल्ली हाई कोर्ट की टिप्पणी

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली हाई कोर्ट ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में स्पष्ट किया है कि घरेलू हिंसा कानून के तहत अलग रह रहे जीवनसाथी को भरण-पोषण देने के मामले में पहली और दूसरी शादी के बीच कोई अंतर नहीं किया जाता।

जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा की पीठ ने कहा कि यदि कोई पुरुष स्वेच्छा से दूसरी शादी करता है, तो वह अपनी दूसरी पत्नी और बच्चों को गुजारा भत्ता देने से इनकार नहीं कर सकता। यह टिप्पणी एक व्यक्ति की याचिका पर सुनवाई के दौरान आई, जिसमें उसने दूसरी पत्नी को भरण-पोषण देने के खिलाफ उच्च न्यायालय का रुख किया था। याचिकाकर्ता ने तर्क दिया कि यह उसकी दूसरी शादी है और पहली शादी से भी उसके बच्चे हैं। कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि याचिकाकर्ता ने स्वेच्छा से दूसरी शादी की और प्रतिवादी (दूसरी पत्नी) व उसके बच्चों को स्वीकार किया। ऐसे में वह अब अपने वैधानिक दायित्वों से बचने के लिए दूसरी शादी को बहाना नहीं बना सकता।

महिला ने कोर्ट को बताया कि 1987 में अपने पहले पति की मौत के बाद वह अपने दो बेटों की अकेले परवरिश कर रही थी। उस समय इस व्यक्ति ने उसके बच्चों की देखभाल और पिता के स्नेह का वादा करते हुए शादी का प्रस्ताव रखा था। वहीं, पुरुष ने दावा किया कि उसकी पत्नी ने स्वेच्छा से ससुराल छोड़ दिया और वापस लौटने या सुलह करने का कोई प्रयास नहीं किया।

यह साधारण अपमान नहीं; महिला को अपशब्द कहने पर अदालत ने जमकर लगाई फटकार: किसी महिला को चरित्रहीन और सेक्स वर्कर बताने के लिए अक्सर एक अपशब्द का इस्तेमाल किया जाता है। दिल्ली की एक अदालत ने इस शब्द के इस्तेमाल को लेकर एक आरोपी को

जमकर फटकार लगाई और कहा कि यह अपराध है। अदालत ने कहा कि यह शब्द एक महिला के सम्मान को ठेस पहुंचाने वाला है क्योंकि इसका मतलब है कि वह चरित्रहीन और बेवफा है।

द्वारका अदालत में ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट फर्स्ट क्लास हरजोत सिंह औजिला ने विक्रांत ग्रेवाल नाम के एक आरोपी को महिला के अपमान फोन पर धमकाने का दोषी करार देते हुए यह टिप्पणी की। मामला 2021 का है।

अदालत ने कहा कि यह शब्द किसी व्यक्ति का साधारण अपमान के लिए नहीं है, बल्कि यह एक मेहनतकश महिला की मर्यादा को अपमानित करता है। जब इस शब्द का इस्तेमाल एक महिला के लिए किया जाता है तो यह संकेत करता है कि वह महिला विश्वासी नहीं है। दूसरा, यह शब्द सिर्फ साधारण अपमान नहीं है बल्कि सीधे तौर पर एक महिला के यौन पर प्रहार है और यह शब्द महिला को चरित्रहीन दर्शाता है और उसके चरित्र पर संदेह उत्पन्न करता है। अदालत ने कहा कि आरोपी की ओर से इस्तेमाल किया गया यह शब्द उसे आईपीसी की धारा 509 का दोषी ठहराता है। अदालत ने यह भी कहा कि आरोपी की मांग नहीं मानने पर महिला को रेप और हत्या की धमकी दी गई और यह आपराधिक कृत्य है। अदालत ने कहा, आरोपी ने सीधी धमकी दी, जैसे- दरवाजा नहीं खोला तो गोली मार दूंगा। यह आईपीसी की धारा 503 के तहत सीधे आपराधिक कृत्य है।पति और बेटी के साथ एक किराये के घर में रहने वाले महिला ने ग्रेवाल के खिलाफ फोन पर धमकाने और अपशब्दों के इस्तेमाल का आरोप लगाया था।

10 हजार फर्जी छात्र, करोड़ों का बजट.. केजरीवाल की फ्री कोचिंग योजना की होगी जांच?

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली में आम आदमी पार्टी की पिछली सरकार के दौरान दलित छात्रों के लिए शुरू की गई मुफ्त कोचिंग योजना में अनियमितता का मामला सामने आया है। दिल्ली की भाजपा सरकार ने बुधवार को आरोप लगाया कि जांच में दस हजार फर्जी छात्र पाए गए।

राज्य सरकार ने प्रारंभिक जांच के बाद उपराज्यपाल से मामले की जांच कराने की मांग की थी। एलजी ने इस मामले में बुधवार को जांच के आदेश दे दिए। अब भ्रष्टाचार निरोधक शाखा (एसीबी) पूरे मामले की जांच करेगी।

दिल्ली सचिवालय में बुधवार को पत्रकारों से बातचीत में शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने बताया कि आम आदमी पार्टी की सरकार ने वर्ष 2018 में दलित छात्रों के लिए जय भीम मुख्यमंत्री प्रतिभा विकास योजना की शुरुआत की थी। उन्होंने आरोप लगाया कि इस मुफ्त कोचिंग योजना के तहत वर्ष 2021-22 में 10 हजार ऐसे छात्रों की कोचिंग का बिल लगाया गया, जिनका कोचिंग के पास कोई रिकॉर्ड ही नहीं है। शिक्षा मंत्री के मुताबिक, जांच में तीन हजार

छात्र ही मिले। इसके बाद वित्तीय अनियमितता की फाइल एलजी विनय सक्सेना को भेजी गई।

पिछली सरकार के दौरान जुलाई 2021 से अगस्त 2022 के बीच योजना के तहत 13 हजार छात्रों का 145 करोड़ रुपये का बिल कोचिंग की तरफ से सरकार के पास भेजा गया। जबकि पूरी योजना सिर्फ 15 करोड़ रुपये की थी। शिक्षा मंत्री सूद ने कहा कि हमने जब योजना को लेकर थोड़ा अध्ययन किया तो पाया कि यूपीएससी तैयारी के लिए अधिकतम शुल्क एक लाख रुपये था। अगर 13 हजार छात्रों ने पढ़ाई की तो उसके हिसाब से कुल बिल 130 करोड़ रुपये से अधिक नहीं होना चाहिए था, तो सवाल यह है कि 145 करोड़ का बिल कैसे बना। इससे साफ है कि पिछली सरकार में सबकुछ मिलीभगत से हो रहा था। दलित छात्रों के नाम पर सरकारी खजानों को लूटा जा रहा था। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि मामले में गंभीर वित्तीय अनियमितताएं सामने आई हैं। आप की राजनीति दलितों के नाम पर दिखावा करती रही है।

साबरमती की तर्ज पर दिल्ली में यमुना किनारे बनेगा रिवर फ्रंट

नईदिल्ली, एजेंसी। यमुना रिवर फ्रंट 25 हेक्टेयर (ढाई लाख वर्गमीटर) में विकसित किया जाएगा। यह रिंग रोड साइड पर मिलेनियम बस डिपो वाले स्थान पर बनेगा। दिल्ली सरकार ने आईटीओ के हाथी घाट और सराय काले खां के बीच पड़ने वाले इस स्थान को लगभग तय कर लिया है। साथ ही, इस प्रस्ताव के बारे में केंद्र को भी अवगत करा दिया है। सूत्रों की मानें तो जून 2026 तक योजना को तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है। यमुना रिवर फ्रंट मिलेनियम बस डिपो के आस-पास विकसित करने का मकसद बेहतर कनेक्टविटी देना है।

यहां वाया रिंग रोड के अलावा दूसरे सार्वजनिक परिवहन साधनों से पहुंचना आसान है। रिवर फ्रंट पर सांस्कृतिक आयोजनों के लिए अलग से जगह बनाई जाएगी। लोगों के बैठने के लिए सीढ़ीनुमा जगह (स्टेप्ड सीटिंग) बनाई जाएगी। फव्वारे, बगीचे/पार्क और मूर्तियां के अलावा बस कैफे जैसी व्यवस्था भी की जाएगी। आधिकारिक सूत्रों की मानें तो दिल्ली सरकार यमुना रिवर फ्रंट को गुजरात के साबरमती रिवर फ्रंट की तर्ज पर विकसित करना चाहती है। इसके लिए सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण मंत्री प्रवेश वर्मा के नेतृत्व में एक टीम गुजरात दौरे पर भी जाने वाले थी, लेकिन मानसून के चलते वह दौरा फिलहाल रद्द हो गया है। दिल्ली सरकार ने यमुना किनारे पर पहले से बने पार्क में अब फूड कोर्ट खोलने का फैसला किया है। इसके तहत असिता पूर्व पार्क में फूड कोर्ट, कंटेनर कैफे, टेंट कैफे खुलेंगे। इसी तरह यमुना वाटिका में बस कैफे और कालिंदी अविरल विस्तार में भी जैविक हाट, शिकारा-कन्वेंशन सेंटर भी खोला जाएगा।

यमुना रिवर फ्रंट के अलावा सरकार ने यमुना तटबंध में ग्रीन मोबिलिटी कॉरिडोर (हरित गतिशीलता कॉरीडोर) यानि साइकिल लिंक परियोजना भी तैयार की है। इसके तहत यमुना तटबंध पर कुल 51 किलोमीटर का साइकिल ट्रैक बनाया जाएगा।

आप इंडिया गठबंधन का हिस्सा नहीं, संजय सिंह बोले- लोकसभा चुनाव तक ही था अलायंस

नईदिल्ली, एजेंसी।
आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह ने बुधवार को एक बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि उनकी पार्टी लोकसभा चुनाव समाप्त होने के बाद से ही इंडिया गठबंधन का हिस्सा नहीं है। बता दें कि साल 2024 का लोकसभा चुनाव आप और कांग्रेस ने इंडिया गठबंधन के तहत लड़ा था। हालांकि, बाद में

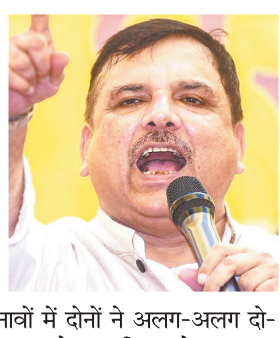

हरियाणा और दिल्ली विधानसभा चुनावों में दोनों ने अलग-अलग दो-दो हाथ किया था। संजय सिंह ने बुधवार को कहा कि हमने साफ कर दिया है कि इंडिया गठबंधन लोकसभा चुनाव तक ही था। जहां तक संसद का सवाल है तो हम हमेशा सरकार की सभी गलत नीतियों का विरोध करते रहे हैं। हम संसद के मानसून सत्र के दौरान दिल्ली में झुग्गियों को तोड़े जाने का मुद्दा उठाएंगे। हमने आधिकारिक तौर पर कहा है कि आम आदमी पार्टी आज से भारत गठबंधन के साथ नहीं है। हमारा गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए था। इसके साथ ही आप सांसद ने आगे कहा कि संसद के मानसून सत्र में उनका रुख पहले की तरह कायम रहेगा। वह इस सत्र में दिल्ली में झुग्गियों के कथित विध्वंस का मुद्दा उठाएंगे। बता दें कि हाल ही में आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में झुग्गियों के कथित विध्वंस को लेकर भाजपा के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार पर निशाना साधा था। केजरीवाल ने भाजपा सरकार पर गरीबों को बेघर बनाने का आरोप लगाया था। केजरीवाल ने जंतर-मंतर पर एक विरोध रैली को संबोधित करते हुए कहा कि 50एष्ट की इतनी गर्मी में गरीबों की झुग्गियां तोड़ी जा रही हैं। सरकार आम लोगों को असहाय बना रही है। सरकार के लोग आम लोगों को सड़कों पर रहने के लिए मजबूर कर रहे हैं। गरीब आदमी अपनी झुग्गी के पास काम करता है। ऐसे में यदि झुग्गी नष्ट हो जाती है तो उनकी आजीविका भी बर्बाद हो जाती है।

12 साल के बच्चे ने दी दिल्ली के स्कूल को बम से उड़ाने की धमकी?

नईदिल्ली, एजेंसी। राजधानी दिल्ली में बुधवार को सात स्कूलों को बम की धमकी भरे ईमेल मिले, जिससे अभिभावकों, छात्रों और स्कूल स्टाफ में दहशत फैल गई। यह लगातार तीसरा दिन था जब शहर के स्कूलों को इस तरह की धमकियां मिलीं। धमकी मिलने के बाद स्कूलों को खाली करवाया गया, बच्चों को घर भेज दिया गया और बम निरोधक दस्तों ने तलाशी अभियान चलाया। हालांकि सभी धमकियां झूठी निकलीं।

पुलिस ने खुलासा किया कि मंगलवार को मिली एक धमकी के पीछे साउथ दिल्ली का एक 12 साल का बच्चा था। इस नन्हे शरारती ने अपने निजी मोबाइल फोन से सेंट थॉमस स्कूल और सेंट स्टीफंस कॉलेज को धमकी भरा ईमेल भेजा था। डीसीपी (द्वारका) ने बताया, 'बच्चे से पूछताछ की गई, उसे समझा कर घर भेज दिया गया। उसने बताया कि यह सब मजाक में किया था। बच्चे की मेंटल हेल्थ का भी इलाज चल रहा है।' (जिसे मंगलवार को भी धमकी मिली थी), वसंत कुंज का वसंत वैली स्कूल, हौज खास का मदर्स इंटरनेशनल स्कूल, पश्चिम विहार का रिचमंड ग्लोबल स्कूल, लोदी एस्टेट का सरदार पटेल विद्यालय और पीतमपुरा और अशोक विहार का प्रूडेंस स्कूल शामिल हैं।

लास्ट वॉर्निंग है, पैसे वापस कर; फाजिलपुरिया पर हमले की सुनील ने ली जिम्मेदारी

गुरुग्राम एजेंसी। हरियाणवी गायक और रैपर राहुल यादव उर्फ फाजिलपुरिया पर हुए जानलेवा हमले के बाद एक नया मोड़ आ गया है। बुधवार शाम को सुनील सरधानिया नामक एक युवक ने सोशल मीडिया पर इस हमले की जिम्मेदारी ली है। वहीं, रेकी करने वाले को सोनीपत से गिरफ्तार कर लिया। इस चौंकाने वाली पोस्ट के वायरल होने के बाद साइबर पुलिस जांच में जुट गई है। बताया जा रहा है कि पुलिस सुरक्षा के साथ फाजिलपुरिया गुरुग्राम से बाहर किसी दूसरे शहर चले गए हैं। फाजिलपुरिया पर फायरिंग मामले में गुरुग्राम पुलिस की अपराध शाखा सेक्टर-40 ने इस मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान 25 वर्षीय विशाल निवासी सोनीपत के रूप में हुई है। पुलिस पूछताछ में आरोपी ने खुलासा किया है कि वह गुरुग्राम में फाजिलपुरिया पर फायरिंग से पहले चार बार आया था। उसके गांव में घर,सोसाइटी के घर और वह कहां आता जाता है,पूरी रेकी की गई थी।

14 जुलाई को फायरिंग वाले दिन भी वह गुरुग्राम में मौजूद था। इसके अलावा आरोपी ने पूछताछ में खुलासा किया किराए पर कार दिलाने के लिए भी सोनीपत में इसी ने मदद की थी। बुधवार शाम को सुनील सरधानिया नाम के इस व्यक्ति ने फाजिलपुरिया को संबोधित करते हुए एक लिखित चेतावनी जारी की है। इस चेतावनी में स्पष्ट कहा गया है कि अगर उसे फाजिलपुरिया को मारना होता, तो उसके ऑफिस के बाहर ही मार दिया जाता। धमकी देने वाले का दावा है कि उन्हें अपने पैसे चाहिए जो दीपक नांदल ने अपने और अपने हर परिचित से लेकर फाजिलपुरिया पर लगवाए थे ताकि वह सेलिब्रिटी बन सके। धमकी भरी पोस्ट में यह भी दावा किया गया है कि कुल पांच करोड़ रुपये लगाए गए थे। सुनील सरधानिया ने आरोप लगाया है कि जब फाजिलपुरिया का काम चला नहीं, तो उसने अपनी जमीन बेचकर पैसे देने की बात कही थी। धमकी में यह भी कहा

गया है कि दीपक नांदल ने अपनी जिंदगी के दस साल इस काम के लिए खराब किए और अपने पांच करोड़ रुपये भी गंवा दिए। सुनील सरधानिया ने पोस्ट में फाजिलपुरिया पर पिछले दो साल से अपनी राजनीतिक रसूख दिखाने और किसी की बात न समझने का आरोप लगाया है। चेतावनी में यह भी कहा गया है कि यह लास्ट वॉर्निंग है। धमकी भरे लहजे में फाजिलपुरिया को अपने पैसे वापस देकर बात खत्म करने के लिए एक महीने का समय दिया गया है। सोशल मीडिया पर यह पोस्ट तेजी से वायरल हो रही है, जिसके बाद पुलिस ने मामले की गहन जांच शुरू कर दी है। फायरिंग की घटना के बाद, गुरुग्राम पुलिस ने फाजिलपुरिया को सुरक्षा मुहैया कराई है। मंगलवार देर रात को गुरुग्राम पुलिस के दो जवानों को फाजिलपुरिया की सुरक्षा के लिए उनके घर भेजा गया। ये भी बताया गया कि वह कहीं और चला गया है। मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए पुलिस सभी पहलुओं से जांच कर रही है, जिसमें यह धमकी भरी पोस्ट और दीपक नांदल से जुड़ा वित्तीय विवाद भी शामिल है।

कूड़े से बनी बायो सीएनजी से हर रोज चल सकती हैं 17 हजार कारें, इतना पैदा होता है कूड़ा

नईदिल्ली, एजेंसी।
अगर ठीक से उपयोग किया जाए तो राजधानी में पैदा होने वाला कचरा बहुत फायदेमंद साबित हो सकता है। गीले कचरे से हर दिन एक लाख 74 हजार किलो बायो सीएनजी बनाई जा सकती है। बायो सीएनजी की यह मात्रा इतनी बड़ी है कि इससे हर दिन सत्रह हजार से ज्यादा कारों की ईंधन खपत पूरी हो सकती है।

पर्यावरण और प्रदूषण पर काम करने वाली संस्था विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र (सीएसई) ने बायो सीएनजी को लेकर विस्तृत रिपोर्ट जारी की है। बायो सीएनजी फ्रॉम म्यूनिसिपल सॉलिड वेस्ट नाम से जारी इस रिपोर्ट में इस बात का आकलन किया गया है कि देश के किस राज्य में गीले कचरे से कितनी बायो सीएनजी पैदा करने की क्षमता है। इस सूची में महाराष्ट्र पहले नंबर पर है। संस्था का आकलन है कि यहां पर गीले कचरे से हर दिन 389 टन बायो-सीएनजी बनाई जा सकती है। इस सूची में दिल्ली छठवें स्थान पर है।

दिल्ली में हर दिन पांच हजार 210 टन गीला कचरा पैदा होता है। इस गीले कचरे से हर दिन 174 टन यानी एक लाख 74 हजार किलो बायो-सीएनजी तैयार की जा सकती है। दिल्ली में दिनभर चक्कर लगाने वाली एक कार अगर पूरे दिन में औसतन दस किलो सीएनजी खर्च करती है तो इस हिसाब से कचरे से पैदा होने वाली बायो सीएनजी से 17 हजार 400 कारों की ईंधन जरूरत पूरी हो सकती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में आमतौर पर गीले कचरे के प्रबंधन के लिए खाद बनाने पर ही

जोर दिया जा रहा है, लेकिन बायो-सीएनजी के उत्पादन की तरफ ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योंकि कचरे से बायो-सीएनजी पैदा करना एक बेहतर विकल्प हो सकता है। खासतौर पर बड़े स्थानीय निकायों को इस तरह के संयंत्र लगाने चाहिए जिससे बायो-सीएनजी का उत्पादन किया जा सके। गीले कचरे से बायो सीएनजी बनाने के सामने सबसे बड़ी बाधा है। रिपोर्ट कहती है कि गीले और सूखे कचरे को पूरी तरह से अलग करके एकत्रित किया जाना चाहिए। ताकि, उसका उपयोग बेहतर तरीके से किया जा सके। इसके साथ ही शहरों को हर तीन साल में अपने यहां कचरे का ऑडिट कराना चाहिए। इसके जरिए यह पता लगाया जाना चाहिए कि किसी खास शहर में कितना कचरा पैदा हो रहा है और जो कचरा पैदा हो रहा है वह किस किस्म का है। ताकि, उसी अनुसार उसके प्रबंधन की योजना बनाई जा सके। गीले कचरे से खाद बनाने की तुलना में बायो सीएनजी बनाने को पर्यावरण के ज्यादा मुफीद माना जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक गीले कचरे से खाद बनाने के दौरान बदबू की शिकायत आसपास के लोग करते हैं। जबकि, इसका सही प्रबंधन नहीं होने की स्थिति में कचरा सड़ते समय उससे निकलने वाला द्रव (लीचेट) भूमिगत जल में चला जाता है और भूमिगत जल तो जहरीला बनाता है। इसमें ज्यादा लोगों के काम करने की भी जरूरत होती है। इसकी तुलना में बायो सीएनजी संयंत्र के पास बदबू नहीं होती और खाद बनाने के संयंत्र की तुलना में दोगुना से तीन गुना कम जमीन पर ही काम कर सकता है।

दिल्ली में बड़े स्तर पर मॉक ड्रिल, किसी भी इमरजेंसी के लिए दी जाएगी ट्रेनिंग

नईदिल्ली, एजेंसी।
राजधानी दिल्ली में सुरक्षा को और पुख्ता करने के लिए एजेंसियां बड़े स्तर पर मॉक ड्रिल का आयोजन कर रही हैं। 17 और 18 जुलाई को एक बड़े पैमाने पर आतंकवाद रोधी मॉक ड्रिल होगी। दिल्ली पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियां मिलकर इस अभ्यास को अंजाम देंगी, जिसमें शहर के कई महत्वपूर्ण स्थानों पर सघन अभ्यास होगा। सुरक्षा बलों की त्वरित प्रतिक्रिया और आपसी तालमेल को परखना। आतंकी हमले, बंधक स्थिति या अन्य आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने की तैयारियों को जांचने के लिए यह अभ्यास खास तौर पर तैयार किया गया है। दिल्ली पुलिस का कहना है कि यह ड्रिल शहर को और सुरक्षित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह मॉक ड्रिल दिल्ली के प्रमुख और व्यस्त स्थानों जैसे मेट्रो स्टेशन, शॉपिंग मॉल, बाजार, और रेलवे स्टेशन पर आयोजित होगी। गोपनीयता बनाए रखने के लिए सटीक स्थानों और समय का खुलासा नहीं किया गया है।

संपादकीय

यौन उत्पीड़न -प्रशासन और शासन की लापरवाही

किसी भी आपराधिक घटना में न्याय मिलने में जरूरत से ज्यादा विलंब या न्याय मिलते नहीं दिखना, पीड़ित व उसके परिवार की पीड़ा को कई गुना बढ़ा देता है। कई बार तो पीड़ित व्यक्ति इतना आहत हो जाता है कि उसके जीने की इच्छा तक दम तोड़ देती है। ओड़ीशा में बालासोर के एक कालेज की छात्रा के साथ भी संभवतः यही हुआ। इस छात्रा ने अपने एक शिक्षक के खिलाफ यौन उत्पीड़न की शिकायत दर्ज कराई थी, जिस पर समय रहते कार्रवाई नहीं होने पर पीड़िता आत्मदाह जैसा चरम कदम उठाने पर मजबूर हो गई और अब उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। सवाल है कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है? कालेज प्रशासन ने इस मामले में तत्काल गंभीरता और संवेदनशीलता क्यों नहीं दिखाई? पीड़िता को ऐसा क्यों महसूस हुआ कि उसे न्याय नहीं मिल पाएगा? गौरतलब है कि पीड़ित छात्रा ने संबंधित कालेज की आंतरिक अनुपालन समिति में यौन उत्पीड़न की शिकायत दर्ज कराई थी। खबरों के मुताबिक, न सिर्फ उस पर तत्काल जांच जैसी कोई कार्रवाई नहीं हुई, बल्कि मामले को दबाने के लिए दबाव भी बनाया गया। इससे आहत होकर पीड़िता ने खुद को आग लगा ली। अब वह अस्पताल में जिंदगी की जंग लड़ रही है। इस घटना के बाद कालेज के प्राचार्य और विभागाध्यक्ष को निलंबित कर दिया गया है और मामले में मुख्य आरोपी शिक्षक को गिरफ्तार कर लिया गया है। साथ ही सरकार ने घटना की जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति भी गठित की है। सवाल है कि अगर कालेज प्रशासन की ओर से ऐसी सक्रियता पहले दिखाई गई होती, तो क्या छात्रा को खुद को आग लगाने की हद तक पहुंचने से रोका नहीं जा सकता था? अक्सर देखा गया है कि जब कोई घटना तूल पकड़ लेती है, तो उसके बाद ही शासन और प्रशासनिक अमला हरकत में आकर चुस्ती दिखाने लगता है। जबकि ऐसे मामलों में त्वरित कार्रवाई की उम्मीद की जाती है। सरकार को इस तरह की घटनाओं को गंभीरता से लेना चाहिए। यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि आरोप और घटना की गहन जांच हो, सच्चाई सामने आए, दोषी को सजा मिले और लापरवाही बरतने वालों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई हो।

विश्व बैंक की इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत इस रैंकिंग में चोटी के चार देशों में शामिल हो गया है, जबकि दुनिया की नंबर एक और नंबर दो अर्थव्यवस्थाएं यानी अमेरिका और चीन उससे पीछे हो गए हैं। भारत से आगे स्लोवाक गणराज्य, स्लोवेनिया और बेलारूस हैं। दिलचस्प यह है कि जिस समय यह रिपोर्ट आई, ठीक उन्हीं दिनों ऑक्सफैम जैसी दूसरी एजेंसियों की ओर से आई रिपोर्टों के हवाले से भारत में बढ़ती आर्थिक आर्थिक असमानता को लेकर सवाल उठ रहे थे। ऐसे में विश्व बैंक की इस रिपोर्ट का आना और उसके समानता सूचकांक में भारत का बेहतर प्रदर्शन करना सुखद आश्चर्य का कारण तो बनता ही है। विश्व बैंक के समानता सूचकांक को गिनी सूचकांक भी कहा जाता है। एक तरह से यह आर्थिक विकास को सामाजिक समानता से जोड़ने का सूचकांक है। इस आंकड़े के अनुसार, भारत का गिनी इंडेक्स 25.5 है।

समानता रिपोर्ट में बेहतरी की ओर भारत

(उमेश चतुर्वेदी)

विश्व बैंक के समानता सूचकांक को गिनी सूचकांक भी कहा जाता है। एक तरह से यह आर्थिक विकास को सामाजिक समानता से जोड़ने का सूचकांक है। इस आंकड़े के अनुसार, भारत का गिनी इंडेक्स 25.5 है। इस सूचकांक के अनुसार, भारत 'सामान्?य से कम' असमानता श्रेणी में है।

इसे संयोग कहें या कुछ और, जिस समय भारतीय संविधान की प्रस्तावना में आपातकाल के दिनों जोड़े गए शब्दों 'धर्मनिरपेक्ष' और 'समाजवादी' को लेकर बहस हो रही है, ठीक उसी वक्त आई विश्व बैंक की रिपोर्ट ने भारतीय समाज को ज्यादा समतामूलक बताया है। विश्व बैंक की इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत इस रैंकिंग में चोटी के चार देशों में शामिल हो गया है, जबकि दुनिया की नंबर एक और नंबर दो अर्थव्यवस्थाएं यानी अमेरिका और चीन उससे पीछे हो गए हैं। भारत से आगे स्लोवाक गणराज्य, स्लोवेनिया और बेलारूस हैं। दिलचस्प यह है कि जिस समय यह रिपोर्ट आई, ठीक उन्हीं दिनों ऑक्सफैम जैसी दूसरी एजेंसियों की ओर से आई रिपोर्टों के हवाले से भारत में बढ़ती आर्थिक आर्थिक असमानता को लेकर सवाल उठ रहे थे। ऐसे में विश्व बैंक की इस रिपोर्ट का आना और उसके समानता सूचकांक में भारत का बेहतर प्रदर्शन करना सुखद आश्चर्य का कारण तो बनता ही है।

विश्व बैंक के समानता सूचकांक को गिनी सूचकांक भी कहा जाता है। एक तरह से यह आर्थिक विकास को सामाजिक समानता से जोड़ने का सूचकांक है। इस आंकड़े के अनुसार, भारत का गिनी इंडेक्स 25.5 है। इस सूचकांक के अनुसार, भारत 'सामान्?य से कम' असमानता श्रेणी में है। मानकों के अनुसार, इस श्रेणी के लिए स्कोर 25 से 30 के बीच होता है। यह 'कम असमानता' वाले समूह के मानक से कुछ ही ज्यादा है। इस श्रेणी में स्लोवाक गणराज्य शामिल है। स्लोवाक का गिनी इंडेक्स 24.1 है। इसी तरह दूसरे स्थान पर रहे सोवियत संघ के पूर्व हिस्से और मौजूदा स्लोवेनिया देश का सूचकांक 24.3 है। इसके बाद 24.4 अंकों के साथ बेलारूस है। इन तीनों के बाद भारत का नंबर है। गौरतलब है कि विश्व बैंक ने दुनिया के 167 देशों का गिनी इंडेक्स जारी किया है। इनमें भारत की स्थिति बहुत बेहतर है। विश्व बैंक की इस रिपोर्ट के अनुसार, सिर्फ़ 30 देश 'सामान्?य से कम' असमानता वाली श्रेणी में आए हैं। जिनमें अत्?यधिक लोक कल्याण वाले अनेक यूरोपीय देश जैसे आइसलैंड, नॉर्वे, फ़िनलैंड, बेल्जियम और पोलैंड शामिल हैं। इसमें संयुक्त अरब अमीरात जैसा धनी देश भी शामिल है। इस सूचकांक के लिहाज से भारत का प्रदर्शन विगत के डेढ़ दशक की तुलना में बहुत बेहतर है। साल 2011 में भारत का गिनी सूचकांक 28.8 था। साल 2022 में यह 25.5 पर पहुंच गया।

गिनी सूचकांक के जरिए यह समझने की कोशिश की जाती है कि देश विशेष के घरों या व्यक्तियों के बीच आय, संपत्ति और उसके उपभोग के वितरण में कितनी समानता है। इसे शून्य से लेकर 100 के सूचकांक के स्तर पर मापा जाता है। इस सूचकांक के अनुसार, जिस देश का स्कोर शून्य है, उसका मतलब है कि उस देश में पूरी तरह समानता है यानी आय का वितरण पूरे नागरिकों में समान है। इस सूची में 100 स्कोर का अर्थ है कि एक ही व्यक्ति के पास पूरी आय और संपत्ति है और वही सबसे ज्यादा उपभोग करता है, जबकि

दूसरों के पास कुछ भी नहीं है। इसका मतलब यह होता है कि उस देश विशेष में पूरी तरह असमानता व्याप्त है। मोटे तौर पर समझ सकते हैं कि जिस देश का गिनी इंडेक्स जितना ज्यादा होगा, उस देश में उतनी ही असमानता होगी।

विश्व बैंक का मानना है कि गिनी इंडेक्स में भारत की मजबूत स्थिति की वजह उसके गरीबी हटाओ उपाय हैं। जिनके जरिए ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में गरीबी को कम करने में देश लगातार आगे बढ़ रहा है। इस रिपोर्ट के अनुसार, बीते दशक में 17.1 करोड़ लोगों को अत्यधिक गरीबी से बाहर निकालने में कामयाबी हासिल की गई है। विश्व बैंक ने गरीबी के लिए रोजाना 2.15 अमेरिकी डॉलर से नीचे की आय को रखा है। इस लिहाज से भारत में 2011-12 के दौरान करीब 16.2 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे जी रहे थे, उनकी संख्या में साल 2022-23 में घटकर सिर्फ 2.3 प्रतिशत रह गई है।

भारत में समानता लाने में मोदी सरकार की योजनाओं का बहुत योगदान है। इसमें नई योजनाएं हैं और पुरानी का बेहतर कार्यान्वयन भी है। इन योजनाओं के जरिए लोगों तक आर्थिक पहुंच में सुधार करना, राज्य की ओर से दिए जा रहे कल्याणकारी फायदों को जमीनी स्तर तक पहुंचाना और इस पूरी प्रक्रिया में समाज के कमज़ोर और कमजोर प्रतिनिधित्व वाले समूहों का सहयोग करना है। इसमें प्रधानमंत्री जन धन योजना को पहले स्थान पर रखा जा सकता है। जिस योजना के तहत 25 जून, 2025 तक 55.69 करोड़ से ज़्यादा लोगों के पास जन धन खाते थे। इनके जरिए ना सिर्फ लोगों को राज्य की ओर से मिलने वाली कल्याणकारी योजनाओं का फायदा सीधे पहंच रहा है, बल्कि वित्तीय कामकाज के लिए बैंकों तक इन लोगों का जुड़ाव बढ़ा है। इससे लोगों की आर्थिक स्थिति सुधर रही है।

आधार और डिजिटल पहचान के जरिए कल्याणकारी योजनाओं की पहुंच अंतिम व्यक्ति तक सुनिश्चित हुई है। तीन जुलाई, 2025 तक देश के 142 करोड़ से अधिक लोगों के आधार कार्ड जारी किए जा चुके थे। राज्य के कल्याणकारी योजनाओं का भुगतान और सब्सिडी आदि को अब सीधे लोगों के खातों में पहुंचाया जा रहा है। इसकी वजह से देश की बचत बढ़ी है। एक आंकड़े के अनुसार, मार्च 2023 तक देश की संचयी बचत ?3.48 लाख करोड़ तक पहुंच चुकी थी। जाहिर है कि इनमें से ज्यादातर लोगों का पैसा प्रत्यक्ष और सीधे खातों तक वित्तीय मदद पहुंच रहा है। भारत की आर्थिक और सामाजिक असमानता को कम करने में आयुष्मान भारत योजना का भी हाथ मान सकते हैं। इसके जरिए इससे कवर परिवार को सालाना 5 लाख रूपए तक का स्वास्थ्य बीमा मिल रहा है। केंद्र सरकार के आंकड़ों के अनुसार तीन जुलाई, 2025 तक देशभर में 41.34 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड जारी किए जा चुके हैं। जिसके दायरे में देश भर के 32,000 से अस्पताल शामिल हैं। इस योजना के तहत 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी नागरिकों के लिए आयुष्मान वय वंदना योजना शुरू की जा चुकी है, चाहे उनकी आय जो भी हो। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन की वजह से यह प्रयास और मजबूत हुआ, जिसमें लोगों को डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने के लिए 79 करोड़ से अधिक स्वास्थ्य खाते बनाए जा चुके हैं। भारत में आर्थिक और सामाजिक असमानता को दूर करने में स्टैंड-अप इंडिया जैसी योजना के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। देश में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए स्थापित इस योजना के जरिए दलित और आदिवासी एवं महिला उद्यमियों को ग्रीनफील्ड उद्योग स्थापित करने के लिए 10 लाख से एक करोड़ रूपए तक का कर्ज दिया जा रहा है। केंद्र सरकार के आंकड़ों के अनुसार इस साल जुलाई के पहले हफ्ते तक इस योजना के तहत पूरे देश में 2.75 लाख से अधिक आवेदन स्वीकृत किए जा चुके थे। इसके तहत नव उद्यमियों को 62,807.46 करोड़ रूपए दिये जा चुके हैं। एक तरह से इस योजना के जरिए वंचित समुदाय की आर्थिक तरक्की हो रही है। आर्थिक तरक्की की राह सामाजिक विकास को भी प्रभावित करती है।

भारत में जारी प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना देश की खाद्य और सामाजिक सुरक्षा का मजबूत स्तंभ बन चुका है। कोरोना महामारी के दौरान शुरू की गई इस योजना तहत 80.67 करोड़ लोगों को खाद्यान्न दिया जा रहा है। मुफ़्त मिल रहे खाद्यान्न का उद्देश्य है कि देश का कोई भी व्यक्ति भूखे पेट ना सोए। भारत में गरीबी कम करने में प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना का भी अपना विशेष योगदान मान सकते हैं। इसके तहत पारम्?परिक कारीगरों और शिल्पकारों बिना किसी जमानत के ऋण, टूलकिट, डिजिटल प्रशिक्षण और मार्केटिंग सहायता दिए जा रहे हैं। इस साल जुलाई के पहले सप्ताह तक इस योजना के तहत 29.95 लाख व्यक्तियों को फायदा मिल चुका है। इससे शहरी और ग्रामीण, दोनों तरह की गरीबी दूर करनें में मदद मिली है। इसका यह मतलब नहीं कि ऑक्सफैम की रिपोर्ट को अनदेखा कर दिया जाए। इसके अनुसार देश में आर्थिक असमानता बहुत ज्यादा है। इस रिपोर्ट के अनुसार देश के सबसे अमीर महज एक प्रतिशत लोगों के पास देश की चालीस फीसद से ज्यादा की संपत्ति है, जबकि सबसे गरीब आधी आबादी के पास सिर्फ तीन प्रतिशत संपत्ति है। यह असमानता आय, संपत्ति और अवसरों में भी साफ तौर पर दिखती है। ऑक्सफैम की रिपोर्ट के अनुसार, भारत के शीर्ष दस प्रतिशत लोगों के पास कुल राष्ट्रीय संपत्ति का 77 फीसद त हिस्सा है। इस रिपोर्ट के अनुसार, देश में 119 अरबपति हैं। 2000 में इनकी संख्या केवल 9 थी, जो 2017 में बढ़कर 101 हो गई और अब यह बढ़कर सौ से ज्यादा हो गई है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, देश में अरबपतियों की संपत्ति में एक दशक में करीब 10 गुना की बढ़ोतरी हुई है।

एससीओ बैठक में जयशंकर और इशाक डार के भाषणों के विश्लेषण से कई बड़ी बातें सामने आईं

(नीरज कुमार दुबे)

जयशंकर का फोकस भारत की 'वसुधैव कुटुंबकम' की नीति और 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन को क्षेत्रीय सहयोग से जोड़ने पर रहा। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि साझा विकास तभी संभव है जब क्षेत्र में शांति और आतंकवादमुक्त माहौल हो।

चीन के तियानजिन शहर में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक में भारत और पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों के भाषण ने एक बार फिर यह साफ कर दिया कि दोनों देशों के बीच भले ही मंच साझा हो, लेकिन उनके दृष्टिकोण, प्राथमिकताएं और वैश्विक भूमिका को लेकर सोच में गहरी खाई कायम है। जहां भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर का वक्तव्य एक परिपक्व, आत्मविश्वासी और वैश्विक दृष्टिकोण से परिपूर्ण था, वहीं पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार का भाषण पुरानी शिकायतों, पाकिस्तान की विक्टिम कार्ड वाली छवि और कश्मीर के घिसे-पिटे मुद्दों के इर्द-गिर्द ही सिमटा रहा।

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अपने भाषण में एससीओ की प्रासंगिकता, क्षेत्रीय स्थिरता और आतंकवाद के खिलाफ साझा जिम्मेदारियों पर जोर दिया। उन्होंने न सिर्फ भारत की उभरती हुई वैश्विक भूमिका को रेखांकित किया, बल्कि इस मंच के माध्यम से पाकिस्तान सहित सभी पड़ोसी देशों को स्पष्ट संदेश भी दिया कि आतंकवाद और सीमा-पार हिंसा किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं है। पहलगाम आतंकवादी हमले के जवाब में भारत की कार्रवाई को उचित ठहराते हुए जयशंकर ने एससीओ को आतंकवाद और चरमपंथ से निपटने के अपने स्थापना उद्देश्य से नहीं भटकने की सलाह भी दी। साथ ही जयशंकर का फोकस भारत की 'वसुधैव कुटुंबकम' की नीति और 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन को क्षेत्रीय सहयोग से जोड़ने पर रहा। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि साझा विकास तभी संभव है जब क्षेत्र में शांति और आतंकवादमुक्त माहौल हो। ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, कनेक्टिविटी और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर भारत के रुख ने एक जिम्मेदार और परिपक्व वैश्विक शक्ति की छवि भी पेश की।

दूसरी ओर, पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार का भाषण कहीं न कहीं भारत के विरुद्ध पूर्व निर्धारित एजेंडे और पुराने दावों का ही विस्तार प्रतीत हुआ। इशाक डार ने अप्रत्यक्ष रूप से कश्मीर का मुद्दा उठाकर इसे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर घसीटने की कोशिश की, जबकि एससीओ का मापदंड है कि यह मंच द्विपक्षीय विवादों के लिए नहीं, बल्कि साझा क्षेत्रीय हितों के लिए है। डार के भाषण में पहलगाम हमले से पल्ला झाड़ने, भारत के खिलाफ बेबुनियाद आरोप लगाने और भारत के साथ संवाद की आवश्यकता भी जताने जैसी बातें मुख्य बिंदू रहीं। इशाक डार ने कहा कि पिछले तीन महीनों में दक्षिण एशिया में ''बेहद परेशान करने वाली घटनाएं'' हुईं। इशाक डार ने कहा, ''पाकिस्तान संघर्ष-विराम और स्थिर क्षेत्रीय संतुलन कायम करने की अपनी प्रतिबद्धता पर अडिग है। हालांकि, हम यह स्वीकार नहीं कर सकते कि बल का मनमाना प्रयोग सामान्य हो जाए।'' देखा जाये तो पाकिस्तान एक ओर खुद को पीड़ित दिखाने की कोशिश करता रहा, वहीं दूसरी ओर क्षेत्रीय स्थिरता और विकास की बातें करता रहा, जो उसकी नीति में अंतर्विरोध को ही उजागर करता है।

भारत और पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों के भाषण पर गौर करेंगे तो एससीओ मंच पर दोनों देशों के दृष्टिकोण में जमीन-आसमान का फर्क दिखाई देगा। जहां भारत आर्थिक विकास, आतंकवाद के विरुद्ध एकजुटता और क्षेत्रीय स्थिरता की बात कर रहा था, वहीं पाकिस्तान अब भी कश्मीर राग और भारत-विरोधी विमर्श में उलझा हुआ दिखा। भारत वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ रहा है, तो पाकिस्तान अब भी अपनी पहचान और अस्तित्व की राजनीति में उलझा है। इस बैठक से स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तान अपने पुराने एजेंडे से बाहर आने को तैयार नहीं है जबकि भारत हर वैश्विक मंच पर रचनात्मक, समाधानपरक और विकासोन्मुखी दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ रहा है।

हम आपको यह भी बता दें कि एससीओ के शीर्ष नेताओं की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाग लेने की संभावना है। चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने बताया है कि 20 से अधिक देशों के नेता और 10 अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रमुख अगले महीने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के तियानजिन शिखर सम्मेलन एवं संबंधित कार्यक्रमों में भाग लेंगे। एससीओ तियानजिन शिखर सम्मेलन 31 अगस्त से एक सितंबर तक आयोजित किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और एससीओ सदस्य देशों के अन्य नेताओं के इस शिखर सम्मेलन में भाग लेने की संभावना है। यदि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस सम्मेलन में जाते हैं तो सबकी निगाहें खासतौर पर भारत और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के भाषण पर लगी रहेंगी। बहरहाल, एससीओ जैसे मंच पर भारत और पाकिस्तान के दृष्टिकोण में दिखा अंतर महज भाषणों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दोनों देशों की व्यापक विदेश नीति और भविष्य के कूटनीतिक रास्तों का संकेतक भी है।

अमर्यादित नहीं हो सकती है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

नागरिकों को भी समझना चाहिए कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की एक मर्यादा है, उसे लांघना किसी के भी हित में नहीं है। उचित होगा कि नागरिक समाज इस दिशा में गंभीरता से चिंतन करे। सर्वोच्च न्यायालय ने उचित ही कहा है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गलत इस्तेमाल समाज में नफरत और विघटन को जन्म दे सकता है। इसलिए नागरिकों को चाहिए कि वे जिम्मेदारी से बोलें, संयम रखें और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करें। हमारे यहाँ तो महापुरुषों ने भी कहा है कि जो व्यवहार हम अपने लिए अपेक्षित करते हैं, वही व्यवहार हमें सामने वाले के साथ करना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ के सामने आया वजाहत खान का मामला ऐसा ही है।

(लोकेन्द्र सिंह राजपूत)

सर्वोच्च न्यायालय ने उचित ही कहा है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गलत इस्तेमाल समाज में नफरत और विघटन को जन्म दे सकता है। इसलिए नागरिकों को चाहिए कि वे जिम्मेदारी से बोलें, संयम रखें और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करें। जब हम विरोध, आलोचना और असहमति के वास्तविक स्वरूप को भूलते हैं तब हमारी अभिव्यक्ति घृणा और नफरत में बदल जाती है। मौजूदा समय में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रीय विचार के संगठनों एवं कार्यकर्ताओं पर टिप्पणी का स्वर ऐसा ही दिखायी पड़ रहा है, जो अमर्यादित है। सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसी ही अमर्यादित अभिव्यक्ति के मामलों की सुनवाई के दौरान बहुत महत्वपूर्ण बातें कहीं है, जिन पर हमें गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की रीढ़ है। इस पर किसी प्रकार के बाहरी प्रतिबंध लगाना उचित नहीं होगा। लेकिन यदि इसी प्रकार अमर्यादित लिखा-पढ़ी, बयानबाजी और कार्टूनबाजी जारी रही तब समाज में वैमनस्य और सांप्रदायिक तनाव को फैलने से रोकने के लिए कुछ न कुछ युक्तियुक्त प्रबंध करने ही पड़ेंगे। सोशल मीडिया के इस दौर में किसी को भी अमर्यादित और असीमित अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती है। नागरिकों को भी समझना चाहिए कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की एक मर्यादा है, उसे लांघना किसी के भी हित में नहीं है। उचित होगा कि नागरिक समाज इस दिशा में गंभीरता से चिंतन करे। सर्वोच्च न्यायालय ने उचित ही कहा है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का गलत इस्तेमाल समाज में नफरत और विघटन को जन्म दे सकता है। इसलिए नागरिकों को चाहिए कि वे जिम्मेदारी से बोलें, संयम रखें और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करें। हमारे यहाँ तो महापुरुषों ने भी कहा है कि जो व्यवहार हम अपने लिए अपेक्षित करते हैं, वही व्यवहार हमें सामने वाले के साथ करना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ के सामने आया वजाहत खान का मामला ऐसा ही है, जिसमें हिन्दू देवी पर तो आपत्तिजनक पोस्ट कर रहा है लेकिन इस्लाम के बारे में आपत्तिजनक पोस्ट करने वालों के विरुद्ध शिकायत दर्ज करा है। जब पलटकर किसी ने हिन्दू धर्म का अपमान करने के आरोप में उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज करा दी, तो वह न्यायालय में पहुँच गया है। याद हो कि सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर शर्मिष्ठा पनौली ने ऑपरेशन सिंदूर के समय भावावेश में आकर कोई आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। हालांकि जब उसे अपनी गलती का अहसास हुआ तो उसने बिना शर्त माफी भी माँग ली और अपना वह वीडियो भी हटा लिया था। लेकिन इसके बावजूद वजाहत खान ने उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज करा दी थी। हालांकि ऐसा करते समय वजाहत खान ने अपने गिरेबां में झांककर नहीं देखा कि वह क्या कर रहा है? जब आप अपनी आस्था पर कोई आपत्तिजनक टिप्पणी सुनना पसंद नहीं करते तब आपको दूसरों के देवी-देवताओं पर अभद्र टिप्पणियां करने का अधिकार किसने दे दिया है? अच्छा ही हुआ कि वजाहत खान जैसों को आईना दिखाने के लिए हिन्दू देवी-देवताओं पर आपत्तिजनक टिप्पणियां करने पर उनके विरुद्ध भी प्रकरण दर्ज करा दिया गया है। अब उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मोल समझ आएगा। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ ने कहा है कि लोगों को हेट स्पीच क्यों अटपटे और गलत नहीं लगते हैं। ऐसे कंटेंट पर नियंत्रण होना चाहिए। साथ ही लोगों को भी ऐसे नफरत भरे कंटेंट को शेयर करने और लाइक करने से बचना चाहिए।

इसी प्रकार, सर्वोच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया और न्यायमूर्ति अरविंद कुमार की पीठ ने इंदौर के कार्टूनिस्ट हेमंत मालवीय के बेहद आपत्तिजनक कार्टून

को लेकर चिंता व्यक्त करते हुए सख्त टिप्पणी की है। न्यायालय ने कार्टूनिस्ट की मानसिकता पर प्रश्न उठाया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को लेकर बनाए गए इस आपत्तिजनक कार्टून को लेकर सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि आजकल कार्टूनिस्ट और स्टैंडअप कॉमेडियन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर रहे हैं। क्या ये लोग कुछ भी बनाने और बोलने से पहले सोचते नहीं है? न्यायालय ने यह भी स्पष्ट किया कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर इस प्रकार के घृणित व्यंग्य चित्रों को संरक्षण नहीं दिया जा सकता है। हेमंत मालवीय के कार्टून में कोई परिपक्वता नहीं है। ये वास्तव में भड़काऊ है। याद हो कि इस कार्टूनिस्ट के मामले में मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय भी फटकार लगा चुका है। उच्च न्यायालय ने जब कार्टूनिस्ट की जमानत याचिका खारिज की तो उसने सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था लेकिन यहाँ भी उनके कृत्य पर कोई राहत नहीं मिली है। हेमंत मालवीय के कार्टून में कोई कलात्मक अभिव्यक्ति भी नहीं है। अपनी वैचारिक और राजनीतिक खुन्नस निकालने के लिए इस प्रकार के लोग कला को भी बदनाम करते हैं, जो अभिव्यक्ति की सशक्त माध्यम हैं। मजेदार तथ्य यह कि हेमंत मालवीय का बचाव कर रहे उनका भी वकील यह मानता है कि हाँ, ये घटिया कार्टून है। लेकिन क्या ये अपराध है? नहीं, यह अपराध नहीं हो सकता। यह आपत्तिजनक हो सकता है लेकिन अपराध नहीं। अब यह अपराध है या नहीं, यह तो न्यायालय तय करेगा लेकिन मालवीय का वकील कम से कम यह तो स्वीकार ही कर रहा है कि कार्टून घटिया है। आरोप यह हैं कि उनका कार्टून प्रधानमंत्री और एक राष्ट्रीय संगठन का अपमान ही नहीं करता है अपितु सांप्रदायिकता को भी भड़काता है। हेमंत मालवीय की शिकायत दर्ज करानेवाले सामाजिक कार्यकर्ता विनय जोशी आरोप लगाए हैं कि मालवीय ने सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक सामग्री अपलोड करके हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाई और सांप्रदायिक सद्भाव बिगाड़ा। उनकी ओर से दर्ज करायी गई एफआईआर में कई 'आपत्तिजनक' पोस्ट का उल्लेख किया गया है, जिनमें भगवान शिव पर कथित रूप से अनुचित टिप्पणियों के साथ-साथ मोदी, आरएसएस कार्यकर्ताओं और अन्य लोगों के बारे में कार्टून, वीडियो, तस्वीरें और टिप्पणियाँ शामिल हैं। इससे स्पष्ट होता है कि हेमंत मालवीय ने पहली बार आपत्तिजनक कार्टून नहीं बनाया था, बल्कि यह उनका नियमित अभ्यास है। न्यायालय के अनुसार, इस प्रकार की प्रवृत्तियों को रोका जाना अत्यंत आवश्यक है।

संक्षिप्त समाचार

घर में घुसकर लाठी-डंडों से पीटने के मामले में 10 पर केस

हरिद्वार, एजेंसी। ग्राम बोडाहेड़ी में घर में घुसकर लाठी-डंडों से महिला और उसके परिवार के लोगों की मारपीट करने के मामले में पुलिस ने 10 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मामले की जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी मनोज नौटियाल ने बताया कि सलमान पुत्र अब्बास निवासी बोडाहेड़ी ने तहरीर देकर बताया कि 12 जुलाई की सुबह करीब 9~30 बजे उसकी भाभी महराना घर में अकेली थीं। तभी पड़ोस में रहने वाला अब्दुल जब्बार उर्फ माणू घर में घुस आया और अभद्रता करने लगा। शोर मचाने पर फरार हो गया। आरोप है कि कुछ देर बाद अब्दुल जब्बार अपने साथ 12 अन्य लोगों को लेकर लाठी-डंडों और सरियों से लैस होकर दोबारा महराना के घर पहुंचा। आरोप है कि सुलेमान, सत्तार, अब्दुल जब्बार, गुफरान, गफ्फार, सत्तार, शाहिन, माज, सालिम, अहसान घर में घुसते ही महराना, महताब, अब्बास, मुदस्सिर और मेहरबान के साथ मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान महताब की उंगली टूट गई और अन्य लोगों को गंभीर चोटें आईं। मारपीट के दौरान गाली-गलौज कर महिलाओं को अपमानित किया और भविष्य में जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। ये पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई।

शिविर में 23 विवाहितों ने पंजीकरण कराया

ऋषिकेश, एजेंसी। आंगनबाड़ी केंद्र जोगियाणा में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) और मुख्यमंत्री एकल स्वरोजगार योजना के लिए एक शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 23 विवाहितों ने अपना पंजीकरण कराया। जौलीग्रांट सेक्टर के तहत आंगनबाड़ी केंद्र बड़ोंवाला में मुख्यमंत्री एकल महिला रोजगार योजना की जानकारी के लिए एक शिविर का आयोजन किया गया। सुपरवाइजर अनिता पटवाल ने कहा कि निराश्रित महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए प्रदेश सरकार ने यह योजना चलाई है। जोगियाणा में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता नीमा सकलानी और बड़ोवाला में सुनीता राणा ने लोगों को यूसीसी और एकल महिला योजना की जानकारी दी। सारंधरवाला में भी सुपरवाइजर सलिता अग्रवाल और आंगनबाड़ी कनुप्रिया पुण्डीर ने जानकारी दी। पूर्व प्रधान पंकज रावत, अमित राणा, भारत नेगी, सोनिका कुड़ियाल, मानवेंद्र, कमला रतूड़ी, कुसुम, सुषमा, सीमा आदि उपस्थित रहे।

सेक्टर-4 पीठ बाजार से मोटरसाइकिल चोरी

हरिद्वार, एजेंसी। भेल सेक्टर-4 में लगने वाली पीठ बाजार से एक व्यक्ति की मोटरसाइकिल चोरी कर ली गई। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर वाहन चोरों की तलाश शुरू कर दी है। ग्राम भारुवाला गोवर्धनपुर निवासी सन्नी कुमार ने पुलिस को बताया कि 10 जुलाई की रात वह अपनी बाइक पर बीएचईएल सेक्टर 4 पीठ बाजार में सामान लेने आया था। कुछ देर बाद लौटने पर उसकी बाइक मौके से गायब मिली। आसपास तलाश के बावजूद बाइक नहीं मिली। एसएचओ कमल मोहन भंडारी ने बताया कि केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

दो दिन में 8399 शिवभक्तों का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

ऋषिकेश, एजेंसी। नीलकंठ मंदिर में दर्शन करने आ रहे शिवभक्तों को जिला प्रशासन की ओर से स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध की जा रही है। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने मेला क्षेत्र में स्वास्थ्य कैंप लगाकर करीब 8,399 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर चुकी है। डीएम स्वाति एस भदौरिया के निर्देशन में स्वास्थ्य विभाग ने विकास खंड यमकेश्वर अंतर्गत नीलकंठ मंदिर यात्रा मार्ग पर स्वास्थ्य जांच कैंप स्थापित किए हैं। यात्रा मार्ग पर मौनी बाबा, धांधलापानी, नीलकंठ, पुण्डरासू, वानप्रस्थ, बाघखाला, गरुड़चट्टी, लक्ष्मणझूला और पीपलकोटी में स्वास्थ्य कैंप बनाए गए हैं। 14 जुलाई को इन कैंप में स्वास्थ्य टीम की ओर से 3508 शिव भक्तों का परीक्षण किया गया। स्वास्थ्य विभाग की ओर से यात्रियों को बुखार, उल्टी-दस्त, सांस फूलने, दुर्घटना से चोटिल और उच्च रक्त चाप की शिकायत की जांच की गई।

नैनीताल के चोपड़ा गांव के पत्थरों में छिपी है पौराणिक कहानी, ग्रामीण मानते हैं महाभारत कालीन शिलापट्ट

रामनगर, एजेंसी।
नैनीताल जिले के रामनगर क्षेत्र में स्थित एक छोटा लेकिन रहस्यमयी गांव है चोपड़ा. ये गांव इन दिनों इतिहास प्रेमियों की रुचि का केंद्र बना हुआ है. साल के घने पेड़ों से घिरा यह गांव हाल ही में राजस्व गांव घोषित हुआ है. मगर इसकी पहचान इसके प्राकृतिक सौंदर्य से ही नहीं, बल्कि उन रहस्यमयी पत्थरों से भी है, जो यहां रखे हुए हैं. ग्रामीणों की मानें तो ये पांडवकालीन शिलापट्ट हैं, जिन पर की गई प्राचीन नक्काशी आज भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है.

गांव में बिखरा इतिहास~ चोपड़ा गांव के बीचोंबीच पत्थरों के कुछ अवशेष रखे हैं. इन पर अद्भुत नक्काशी की गई है. ग्रामीणों का कहना है कि ये मूर्तियां उनके पूर्वजों को खुदाई के दौरान मिली थीं. तब से यहीं पर रखी हुई हैं. इन पत्थरों की भाषा आज तक किसी के समझ में नहीं आई, लेकिन स्थानीय लोगों का दृढ़ विश्वास है कि यह पांडवों के समय की निशानियां हैं.

ग्रामीण प्रताप चंद्र कहते हैं इन पत्थरों में जो आकृतियाँ बनी हैं, वे

भगवान जैसी प्रतीत होती हैं. समय के साथ इनमें बनी नक्काशी अब धुंधली होने लगी हैं. कई बार लोगों ने इन्हें यहां से हटाने की कोशिश की लेकिन उनके साथ कुछ न कुछ अनहोनी घटित हो गई और वह इन्हें वापस यहीं छोड़ गए.

वर्ष 2021 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (ߋस्ढ) की एक टीम ने यहां का दौरा किया था, लेकिन आज तक कोई ठोस जानकारी या रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की गई. इससे स्थानीय ग्रामीणों में नाराजगी भी है. ग्रामीणों का मानना है कि अगर इन पत्थरों का वैज्ञानिक अध्ययन और संरक्षण हो, तो यह स्थान धार्मिक और ऐतिहासिक पर्यटन का बड़ा केंद्र बन सकता है. स्थानीय इतिहासकार और संस्कृति के जानकार गणेश रावत ने बताया कि यह संरचनाएं 10वीं से 12वीं शताब्दी की मानी जाती हैं. इन्हें वीरखंभ कहा जाता है. इस क्षेत्र में 20 से अधिक वीरखंभ मौजूद हैं. माना जाता है कि इनका निर्माण उत्तराखंड के प्राचीन कत्यूरी वंश के शासनकाल में हुआ था. गणेश रावत बताते हैं कि-

दिगंत नायक ने आगे बताया कि भविष्य में यहा टूरिज्म सर्किट भी विकसित किया जा सकता है, जिससे पर्यटक इस क्षेत्र में आकर इतिहास से रूबरू हो सकें. हम कोशिश करेंगे कि इन शिलापट्टों को संरक्षित किया जाए, ताकि इस स्थान की ऐतिहासिक पहचान बनी रहे और यह पर्यटन के नक्शे पर उभर कर आए.

पर्यटन की अपार संभावनाएं~ सीतावनी और चोपड़ा गांव का यह इलाका न केवल पौराणिक कथाओं से जुड़ा है, बल्कि यहां की प्राकृतिक सुंदरता भी अनूठी है. यदि सरकार और प्रशासन का सहयोग मिले, तो यह गांव आने वाले समय में उत्तराखंड का एक प्रमुख धार्मिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थल बन सकता है.

ग्रामीणों की उम्मीदें जिंदा~ आज भी चोपड़ा गांव के लोग इस उम्मीद में हैं कि कभी न कभी सरकार या पुरातत्व विभाग इस क्षेत्र की ओर ध्यान देंगे. इन रहस्यमयी पत्थरों के पीछे छिपा इतिहास सबके सामने आएगा. इससे न केवल गांव की विरासत संरक्षित होगी, बल्कि नई पीढ़ी को भी अपने अतीत से जोड़ने का काम होगा. रामनगर का चोपड़ा गांव आज भले ही एक छोटा सा नाम हो, लेकिन इसके गर्भ में छिपा इतिहास इसे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिला सकता है. अब जरूरत है केवल उचित संरक्षण, वैज्ञानिक अध्ययन और प्रशासनिक इच्छाशक्ति की, जो इस धरोहर को उजागर कर सके. चोपड़ा गांव नैनीताल जिले में रामनगर के पास स्थित है. चोपड़ा गांव पहुंचने के लिए निकटतम हवाई अड्डा उधम सिंह नगर जिले के पंतनगर में है. पंतनगर से रामनगर की दूरी सड़क मार्ग से करीब 85 किलोमीटर है. पंतनगर से रामनगर बस और ट्रेन से भी आ सकते हैं. यहां से टैक्सी भी किराए पर उपलब्ध होती हैं. रामनगर के लिए ट्रेन और बस भी पहुंचने का माध्यम है. रामनगर को कॉर्बेट नगरी भी कहते हैं. रामनगर से चोपड़ा गांव के लिए बस और टैक्सी की सुविधा उपलब्ध है. दिल्ली या अन्य शहरों से आने वाले यात्री ट्रेन के माध्यम से पहले रामनगर पहुंच सकते हैं. यहां से चोपड़ा गांव जाने के लिए टैक्सी या बस सेवा उपलब्ध है. ये ट्रांसपोर्ट के साधन सुबह 11 बजे से लेकर शाम 4 बजे तक विभिन्न समयों पर पाटकोट और बेतालघाट की ओर जाते हैं. रामनगर से 22 किमी है दूरी~ नैनीताल जिले का चोपड़ा गांव रामनगर भंडारपानी-पाटकोट-बेतालघाट मार्ग पर स्थित है, जो रामनगर से लगभग 19 किलोमीटर की दूरी पर है. सड़क से गांव की पैदल दूरी करीब 3 किलोमीटर है. इस तरह कुल 22 किलोमीटर की दूरी चोपड़ा गांव तक पहुंचने में तय करनी पड़ती है. यहां का बस किराया लगभग 50 है. टैक्सी का किराया 1000 से 1500 तक हो सकता है.

कांवड़ यात्रा में अश्लीलता फैलाने पर युवती समेत चार गिरफ्तार, डीजे कंपटीशन के लिए माइक पर कर रहे थे अनाउंसमेंट

नारसन, एजेंसी। नारसन में बुधवार की देर शाम मोहम्मदपुर कट के पास कुछ कांवड़ यात्री गोस्वामी डीजे सिहानी गाजियाबाद डीजे लगा वाहन सड़क पर खड़ा कर अन्य डीजे संचालकों को कंपटीशन के लिए बुला रहा थे।

साथ ही माइक पर अश्लील फब्तियां भी कस रहे थे। इस दौरान मौके मौके पर जाम लग गया। माइक पर बुलन्दशहर के राजपूत डीजे को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई।

इसे लेकर पुलिस ने मौके पर पहुंच युवती समेत चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने इनका शांति भंग में चालान किया है। सभी लोग गाजियाबाद के निवासी हैं।

एनएच-74 पर दो बाइकें भिड़ीं, फैक्टरी कर्मी की मौत

रुद्रपुर, एजेंसी। नेशनल हाईवे-74 पर दो बाइकें टकरा गईं। हादसे में गंभीर रूप से घायल बाइक सवार को जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां डाक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। सीओ भूपेंद्र सिंह धौनी ने बताया कि हादसे की सूचना परिजनों को दे दी गई है। परिजनों के आने पर पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

मंगलवार की सुबह नेशनल हाईवे- 74 पर स्थित मलसा गिरधरपुर गांव में पेट्रोल पंप के पास दो बाइकों के बीच टक्कर हो गई। दोनों बाइकों पर सवार लोग सड़क पर गिर गए। एक बाइक सवार के सिर पर गंभीर चोटें आने से वह अचेत हो गया। हादसे के बाद वहां लोगों की भीड़ जमा हो गई। राहगीरों की सूचना पर 108 एंबुलेंस घटनास्थल पर पहुंची और गंभीर रूप से घायल व्यक्ति को जिला अस्पताल ले गई। अस्पताल पहुंचने तक वह दम तोड़ चुका था। मृतक के पास मिले दस्तावेज से उसकी पहचान मूल रूप से बरेली के बहेड़ी स्थित ग्राम आदलपुर व हाल निवासी जगतपुरा रुद्रपुर चंद्रपाल सिंह (40) के रूप में हुई। चंद्रपाल सिडकुल की एक फैक्टरी में काम करता था।

पहाड़ से उतरने को छटपटाते रहे हैं उत्तराखंड के गांव

देहरादून, एजेंसी।
त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव की दहलीज पर खड़े उत्तराखंड में खाली होते पहाड़ के सवाल पहाड़ की भांति ही जस के तस खड़े हैं। इस समय बेशक ग्रामीण आबादी की वृद्धि दर में गिरावट और शहरी आबादी में तेज विस्तार चुनौती बनते दिख रहे हैं, लेकिन इसकी शुरुआत राज्य गठन के समय से ही हो चुकी थी।

वर्ष 2000 में जब उत्तराखंड राज्य अस्तित्व में आया तो अभाव में जी रहे गांव के लोग प्रदेश के मैदानी शहरों की तरफ रुख करने को आतुर हो उठे। वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि ग्रामीण आबादी में 11.51 प्रतिशत का इजाफा हुआ, जबकि हमारे शहर करीब 40 प्रतिशत की असामान्य दर से ओवरलोड होने लगे थे। समय के साथ यह रफ्तार और बढ़ी है।

वर्ष 2011 की जनगणना में पौड़ी और अल्मोड़ा ऐसे जिले भी थे, जहां आबादी की दर ऋणात्मक रही थी। जिससे इस बात की आशंका और बढ़ गई है

कि आगे होने वाली जनगणना में गांवों के खाली होते चले जाने की तस्वीर बेहद स्याह हो सकती है। लिहाजा, समय रहते सरकारी मशीनरी को पहाड़ के वीराने को तोड़ने के लिए संसाधनों की राह गांवों की तरफ मोड़नी होगी।

मौजूदा समय में आबादी के दबाव में हांफ रहे शहरों में डेमोग्राफिक चेंज (जनसांख्यिकी बदलाव) को पकड़ पाना आसान नहीं। जिस तरह के डेमोग्राफिक चेंज को लेकर सरकारी मशीनरी सशंकित रहती है, उसे पहचान पाना चौतरफा पसरे शहर में आसान नहीं रहता। ऐसी ही कुछ चुनौती उत्तराखंड के शहरों में सामने भी आ रही है।

उत्तराखंड में ग्रामीण क्षेत्रों के मतदाताओं की आबादी अभी भी अधिक है और हिस्सेदारी निरंतर घट रही है। वहीं, राजधानी देहरादून में यह हिस्सेदारी घटकर 35 प्रतिशत रह गई है। जबकि वर्ष 2011 की जनगणना में ग्रामीण आबादी 44 प्रतिशत थी। राज्य की भांति ही देहरादून में गांवों में जुड़े शहरी मतदाताओं को कम कर दिया जाए तो ग्रामीण क्षेत्रों में न के बराबर आबादी रह जाती है।

डिप्टी जेलर और जवान को पॉक्सो कैदी से मारपीट पड़ी भारी, हाईकोर्ट ने किया निलंबित

नैनीताल, एजेंसी।
उत्तराखंड हाईकोर्ट ने जेल में बंद पॉक्सो कैदी के साथ मारपीट मामले में सख्त फैसला सुनाया है. हाईकोर्ट ने मामले का संज्ञान लेते हुए सितारगंज जेल के डिप्टी जेलर और जवान को निलंबित कर दिया है. साथ ही कोर्ट ने इसमें शामिल अन्य लोगों के नाम भी प्रस्तुत करने के आदेश दिए हैं. मामले की सुनवाई मुख्य न्यायाधीश जी नरेंद्र व न्यायमूर्ति आलोक महरा की खंडपीठ में हुई.

मामले के अनुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण उधम सिंह नगर के सचिव योगेंद्र कुमार सागर के द्वारा 11 जुलाई 2025 को जेल का निरीक्षण किया. 14 जुलाई को अपनी रिपोर्ट पेश की. जेल का निरीक्षण के दौरान उनकी मुलाकात कैदी सुभान से भी हुई, जो

काफी डरा व सहमा हुआ था और उसके शरीर मे जख्म के कई घाव थे. पूछने पर उसने बताया कि 28 जून को कांस्टेबल व डिप्टी जेलर समेत अन्य ने उसके साथ मारपीट की. जब कैदी से पूछताछ चल रही थी तो कांस्टेबल व अन्य लोग उसे इशारा करके उसे धमकाने की कोशिश करने लगे.

जिसका संज्ञान लेते हुए सचिव के द्वारा जल्द कार्रवाई करने के आदेश दिए और अपनी रिपोर्ट उच्च न्यायालय को भेजी. जिस पर कोर्ट ने संज्ञान लेते हुए यह आदेश पारित किया कि जेल प्रशासन के द्वारा कैदी को कोर्ट में पेश किया. कोर्ट ने उसको आई चोटों को भी देखा. आरोपी पॉक्सो के केस के मामले में जेल में साल 2024 से जेल में बंद है. सुनवाई पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव भी वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से पेश हुए. कोर्ट ने उनसे जेल का दौरा समय-समय पर करने को भी कहा है. कैदी के साथ मारपीट करने वाले अनील यादव व सुनील शर्मा का नाम भी सामने आया है. कोर्ट ने कहा कि जेलों में इस तरह की घटनाएं क्यों हो रही हैं, जो जेल नियमों के खिलाफ है.

चालक-परिचालकों ने सात घंटे तक रोका बसों का संचालन

काशीपुर, एजेंसी। रोडवेज बस स्टेशन से अनुबंधित बसों का विभागीय बसों से पहले संचालन के मौखिक आदेश को लेकर चालकों-परिचालकों में रोष फैल गया और डिपो से बसों का संचालन रोक दिया। आरोप लगाया कि सवारियां न होने पर उन्हें डिपो बुला लिया जाता है। आरोप लगाया कि 250 किलोमीटर की जगह 56 किलोमीटर का ही रुपया दिया जा रहा है। प्रभारी एआरएम से वार्ता के बाद चालक-परिचालकों ने लगभग सात घंटे बाद बसों का संचालन शुरू कर दिया।

रोडवेज डिपो से निगम की बसों के अलावा अनुबंधित लगभग 24 बसों का संचालन होता है। मंगलवार को निगम के अधिकांश बसों के चालक-परिचालक रोजाना की तरह ड्यूटी पर पहुंचें। इस दौरान उन्हें पता चला कि वरिष्ठ केंद्र प्रभारी के एक मौखिक आदेश पर पहले अनुबंधित बसें जाएंगी। इसके बाद निगम बसों का संचालन होगा। इससे चालकों-परिचालकों में रोष फैल गया। इस आदेश को गलत बताते हुए डिपो से सुबह छह बजे से बसों का संचालन रोक दिया। साथ ही इस संबंध में रामनगर डिपो एआरएम व काशीपुर के प्रभारी एआरएम नवीन आर्य को अवगत कराया।

दोपहर लगभग 12 बजे एआरएम काशीपुर डिपो पहुंच गए। जहां बताया कि सावन में यात्रियों की संख्या कम हो जाती है। ऐसे में जब वह बस लेकर रामनगर डिपो पहुंचते हैं, तो उन्हें वहां से अन्य रूटों पर जाने के लिए सवारियां नहीं मिल पा रही हैं।

बताया जब वह इस बाद तो डिपो के अधिकारियों को बताते हैं तो वह बसों को वापस डिपो बुला लेते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें महज 56 किलोमीटर का रुपया मिल पाता है। जबकि उन्हें प्रतिदिन 250 किलोमीटर का रुपया मिलना चाहिए। कहा कि जब से नए वरिष्ठ केंद्र प्रभारी आए हैं तब से नए-नए आदेशों के चलते परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

गेट लगाने के विवाद में दूसरे पक्ष के आठ लोगों पर क्रॉस केस दर्ज

हरिद्वार, एजेंसी। ज्वालापुर कोतवाली क्षेत्र में कॉलोनी में गेट लगाने को लेकर हुए विवाद में दूसरे पक्ष के आठ लोगों के खिलाफ पुलिस ने क्रॉस मुकदमा दर्ज कर लिया है। बिल्डर के चालक की तहरीर पर पुलिस ने मामला दर्ज किया गया है। दूसरे पक्ष की तरफ से 15 अज्ञात कर्मचारियों के खिलाफ पहले ही मुकदमा दर्ज कराया जा चुका है।

पुलिस के अनुसार, बिल्डर सतीश त्यागी के चालक मोनू कुमार पुत्र सुभाष चंद निवासी लोधामंडी ज्वालापुर ने पुलिस को बताया कि मयूर विहार निकट सोंधी नर्सिंग होम आर्यनगर में स्थानीय लोगों ने कॉलोनी की गली के मुहाने पर गेट लगाने का निर्णय लिया। 12 जुलाई को सभी गली के बाहर खड़े होकर गेट लगाने पर विचार कर ही रहे थे। तभी संदीप अरोड़ा, उसका पुत्र जतिन अरोड़ा, पत्नी मोनिका अरोड़ा, पुत्री आयुषी अरोड़ा, संदीप अरोड़ा का भाई सचिन अरोड़ा और परमानन्द पोपली, उसकी पत्नी गीता पोपली व 10-12 लोग आ गए।

आरोप लगाया कि सभी ने गाली-गलौज करते हुए गेट लगाने पर जान से मारने और झूठे मुकदमों में फंसाने की धमकी दी। 13 जून की दोपहर संदीप अरोड़ा, उसके परिजनों और परमानंद पोपली ने उसे देखते ही मारना शुरू कर दिया। आरोप है कि संदीप अरोड़ा, मोनिका अरोड़ा, आयुषी अरोड़ा, संदीप अरोड़ा का आई सचिन अरोड़ा, परमानंद पोपली, गीता पोपली ने उसकी गाड़ी की चाबी निकालकर मारपीट की।

पिथौरागढ़ में भूस्खलन से चीन सीमा मार्ग बाधित, कई गांव अलग-थलग

पिथौरागढ़, एजेंसी।
तवाघाट और मलघाट के पास चट्टाने खिसकने से चीन सीमा का संपर्क कटा है। टनकपुर-तवाघाट हाईवे में चेतलकोट के पास और तवाघाट-लिपुलेख मार्ग पर मलघाट के पास मार्ग बंद है।

उधर, मुनस्यारी-मिलम मार्ग बंद होने से जिले से लगी सम्पूर्ण चीन सीमा का संपर्क भंग है। पांच दर्जन गांव अलग-थलग पड़े है। जिले में 14 मार्ग बंद है।

अतिक्रमण पर चली प्रशासन की जेसीबी

नैनीताल, एजेंसी। भवाली रोड पर भूमियाधार में लोगों के दोबारा अतिक्रमण करने पर प्रशासन, पुलिस और लोनिवि की टीम ने जेसीबी चला दी। इस दौरान दुकानदारों और टीम के बीच नोकझोंक भी हुई। लोगों के विरोध के बीच टीम ने अतिक्रमण हटाकर सामान जब्त कर लिया।नैनीताल विधायक सरिता आर्य का गृह क्षेत्र भूमियाधार सड़क किनारे अतिक्रमण के कारण चर्चाओं में बना हुआ है। बीते शुक्रवार को जिला प्रशासन व पुलिस अतिक्रमण हटाने पहुंची तो लोगों ने जमकर विरोध किया था। एसडीएम ने सख्ती कर दुकानों को हटवा दिया था। अभियान के दो दिन बाद फिर सड़क किनारे दुकानें सज गईं। सूचना मिलने पर एसडीएम नवाजिश खलिक पुलिस व लोनिवि टीम के साथ मंगलवार को दोबारा मौके पर पहुंचे जहां कई दुकानें लगी हुई मिलीं। टीम को देख दुकान संचालकों में खलबली मच गई। एसडीएम की चेतावनी के बाद कुछ लोग तो सामान लेकर भाग गए लेकिन कुछ लोगों ने दुकान नहीं हटाईं।

संक्षिप्त समाचार

किशोरी से दुष्कर्म करने वाले को सात साल की जेल

उन्नाव , एजेंसी। न्यायालय ने नाबालिग से दुष्कर्म करने वाले युवक को सात साल कारावास की सजा सुनाई है। दोषी पर 10 हजार रुपये के अर्थदंड भी लगाया गया है।

औरास थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पिता ने दो अक्तूबर 2017 को पुलिस को तहरीर देकर बताया था कि उसकी नाबालिग बेटी को क्षेत्र के रामपुर गढ़ौवा निवासी हजारी बहला फुसलाकर ले गया था। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर किशोरी की तलाश शुरू की थी। करीब एक सप्ताह बाद किशोरी को लुधियाना से खोज लिया था। किशोरी ने बताया था कि हजारी उसे धमकाकर लुधियाना ले गया था, और उसके साथ दुष्कर्म किया। पुलिस ने हजारी के खिलाफ पॉक्सो सहित अन्य धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर जेल भेजा था। पुलिस सात नवंबर 2017 को न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था। विशेष सत्र न्यायाधीश एकादश पॉक्सो एक्ट की न्यायालय में विचाराधीन मुकदमे की बुधवार को सुनवाई पूरी हुई। दोष साबित होने पर, न्यायाधीश विवेकानंद विश्वकर्मा ने हजारी को सात साल कारावास की सजा सुनाई।

ननद-भाभी में मारपीट, वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल

कानपुर , एजेंसी। घरेलू विवाद के चलते ननद व भाभी आमने सामने आ गईं और एक-दूसरे के साथ मारपीट करने लगीं। इसी दौरान वहां मौजूद किसी ने मारपीट का वीडियो बना लिया और सोशल मीडिया पर पोस्ट कर वायरल कर दिया। थाने पहुंचे दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ कार्रवाई को लेकर पुलिस को तहरीर दी। पुलिस ने दोनों पक्षों की तहरीर के आधार पर बुधवार को रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। थानाध्यक्ष जेपी शर्मा ने बताया कि घरेलू विवाद के चलते दोनों पक्षों के खिलाफ कार्रवाई की गई है।

12 लाख से अधिक सालाना कारोबार पर लें बड़ा लाइसेंस

तिर्वा। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा कस्बे में खाद्य सुरक्षा को लेकर बुधवार को एक विशेष जागरूकता अभियान चलाया गया। इस दौरान टीम ने मिठाई, नमकीन, बेकरी व डेयरी उत्पाद विक्रेताओं की दुकानों पर खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता, साफ-सफाई और लाइसेंस की अनिवार्यता का निरीक्षण किया। बताया कि जिन दुकानदारों का सालाना कारोबार 12 लाख रुपये से अधिक है, उन्हें बड़ा लाइसेंस लेना अनिवार्य है।

सहायक सहायक आयुक्त (खाद्य) उमेश प्रताप सिंह के नेतृत्व में अरविंद साहू, मंजरी मिश्रा और सर्वेश कुमार की टीम ने कस्बे की विभिन्न दुकानों का निरीक्षण किया। मिठाई की दुकानों पर खाद्य सुरक्षा अधिकारी मंजरी मिश्रा ने दुकानदारों को मिठाइयों में मिलावट न करने और उचित लेबल सुनिश्चित करने के दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने मिठाई के निर्माण में प्रयुक्त सामग्रियों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने को कहा। अभियान के अंतर्गत दुकानदारों को फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के नियमों की जानकारी दी गई और उन्हें समय-समय पर खाद्य पदार्थों की जांच व साफ-सफाई बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। टीम ने चेतावनी दी कि नियमों की अनदेखी करने वालों पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। सहायक आयुक्त (खाद्य) ने बताया कि आम जनमानस के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने वाले मिलावटी खाद्य विक्रेताओं के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि किसी भी खाद्य व्यवसायी के लिए लाइसेंस प्राप्त करना अनिवार्य है।

युवक का घर के पास पेड़ पर फंदे से लटका मिला शव

सोनिक (उन्नाव) , एजेंसी। मांधाताखेड़ा गांव में बुधवार दोपहर ढाई बजे युवक का शव घर के पास पेड़ में फंदे से लटका मिला। पुलिस ने जांच की तो पता चला कि उसने दो शादियां की थी, इसलिए वह परेशान रहता था। दही थानाक्षेत्र के मांधाता खेड़ा निवासी अनिल (35) शटरिंग का काम करता था। वह मां सावित्री के साथ रहता था। पत्नी अंजू से अप्रैल महीने में मारपीट के बाद वह शुक्लागंज में अपनी बहन के घर के पास में किराए का कमरा लेकर बेटी प्रीता और प्रज्ञा के साथ रह रही थी। मां सवित्री के मुताबिक बेटे की दूसरी पत्नी रीना थी, उसका भी एक बेटा अजय था।

यूपी के प्राचीन शिव मंदिरों का कायाकल्प करेगी सरकार

लखनऊ , एजेंसी। पर्यटन विभाग, यूपी प्रोजेक्ट कॉर्पोरेशन लि. और यूपी स्टेट टूरिज्म डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि. के सहयोग से प्रदेश भर में पर्यटन ढांचे को मजबूत करने के लिए कई परियोजनाएं शुरू करने की तैयारी है। इसके तहत सरकार कई प्राचीन शिव मंदिरों का कायाकल्प करेगी। इनमें से अधिकांश मंदिर, पिछली सरकारों में उपेक्षा के कारण दुर्दशा के शिकार थे। बीते आठ साल में प्रदेश सरकार ने 188 प्राचीन मंदिरों का कायाकल्प व सौंदर्याकरण कराया है। सीएम के निर्देश से हो रहे इन कार्यों से न सिर्फ धार्मिक पर्यटकों व तीर्थयात्रियों की संख्या बढ़ रही है बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार के अवसरों को भी बल मिल रहा है। इसी क्रम में आगरा के फतेहाबाद में भट्टा की पिपरी मौजा मेवाली खुर्द स्थित शिव मंदिर परिसर, फिरोजाबाद में चकलेश्वर महादेव मंदिर और समौर बाबा मंदिर क्षेत्र में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास के कार्य यूपी प्रोजेक्ट कॉर्पोरेशन लि. से कराने की तैयारी है। गोरखपुर में भूलेश्वर मंदिर, खजनी महादेव शिव मंदिर और झारखंडी महादेव मंदिर के साथ गोंडा में तीरे मनोरमा मंदिर का पर्यटन विकास यूपी स्टेट टूरिज्म डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि. द्वारा किया जाएगा। तो मैनपुरी जिले में घंटाघर का सौंदर्याकरण यूपी प्रोजेक्ट कॉर्पोरेशन लि. से कराया जाएगा। वहीं, ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए मिर्जापुर मंडल के तीन जिलों मिर्जापुर, भदोही और सोनभद्र में ग्रामीण पर्यटन विकास रणनीति तैयार करने और ग्रामीण होमस्टे विकसित करने के लिए एक एजेंसी का चयन किया जा रहा है। इसके तहत कुल 8 गांव में इस योजना को लागू करते हुए ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जाएगा।

रोजगार और आर्थिक विकास को मिलेगा बढ़ावा

पर्यटन के माध्यम से स्थानीय हस्तशिल्प, खाद्य उत्पादों और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी। इन पर्यटन विकास परियोजनाओं से होटल, रेस्तरां, परिवहन, गाइड सेवाओं और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में नए रोजगार के द्वार खुल रहे हैं।

यूपी बन रहा देश का अग्रणी पर्यटन गंतव्य

उत्तर प्रदेश देश के अग्रणी पर्यटन गंतव्य स्थल बन रहा है। प्रदेश सरकार हैरिटेज पर्यटन को भी बढ़ावा दे रही है। सरकार 11 विरासत स्थलों को विकसित करने की रूपरेखा बना चुकी है।

सजधज कर अपनी 41 वीं वर्षगांठ पर नई दिल्ली के लिए रवाना हुई प्रयागराज एक्सप्रेस

प्रयागराज , एजेंसी। प्रयागराज जंक्शन से नई दिल्ली जाने वाली प्रयागराज एक्सप्रेस बुधवार को 41 वर्ष की हो गई। वीआईपी ट्रेन प्रयागराज की वर्षगांठ के मौके पर ट्रेन को विशेष साज सज्जा की गई। इस खास मौके पर प्रयागराज एक्सप्रेस के पहले सफर के साक्षी रहे सेवानिवृत्त लोको पॉयलट डीएन सक्सेना एवं कोच कंडक्टर रहे शीतला प्रसाद श्रीवास्तव भी सपरिवार जंक्शन पहुंचे। इन दोनों सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने ही प्रयागराज एक्सप्रेस के 41 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर केक भी काटा।

केक काटने के बाद दोनों ही सेवानिवृत रेलकर्मियों ने अपने अनुभव भी साझा किए। डीएन सक्सेना ने बताया कि पहले सफर के दौरान उनकी ड्यूटी लोको पॉयलट डा. नकीब उद्दीन के साथ ट्रेन में लगी थी। तब वह प्रयागराज जंक्शन से कानपुर तक ट्रेन को ले गए थे। पहले सफर में ही ट्रेन कानपुर के साथ नई दिल्ली स्टेशन समय से पहले पहुंची। तब इसकी रवानगी का समय रात नौ बजे था और सुबह छह बजे ट्रेन नई दिल्ली पहुंच जाती थी।

कांवड़ मार्ग पर दौड़ रहे वाहन, पिकअप से कुचलकर राजस्थान के कांवड़िये की मौत

मेरठ , एजेंसी। कांवड़ यात्रा शुरू होने के बावजूद कांवड़ मार्गो पर वाहन दौड़ रहे हैं। सरधना थाना क्षेत्र के चौधरी चरण सिंह गंगनहर कांवड़ पटरी मार्ग पर नानू पुल के पास राजस्थान के अलवर जनपद के चांदौली थाने के गांव गांव डेहरा निवासी कांवड़िया लेखराम (45) को पिकअप गाड़ी ने कुचल दिया। हादसा मंगलार सुबह हुआ और मेडिकल ले जाने के दौरान उनकी मौत हो गई। घटना के बाद डीआईजी कलानिधि नैथानी ने मौके पर पहुंचकर जायजा लिया। वहीं, एनएच-58 पर दो सड़क हादसों में तीन कांवड़िये घायल हो गए।

एसपी देहात राकेश कुमार मिश्रा के मुताबिक, लेखराम अपने छह साथियों के साथ शुक्रवार को कांवड़ लेकर अलवर जा रहे थे। मंगलवार सुबह अपने साथी सुनील के साथ कुछ दूरी ही चला था। जबकि उसके चार साथी पीछे चल रहे थे। इसी दौरान पीछे से आ रही तेज रफ्तार पिकअप ने उन्हें टक्कर मार दी। इससे वह सड़क पर गिरकर गंभीर घायल हो गए। सुनील ने एंबुलेंस की मदद से घायल कांवड़िये लेखराम को उपचार के लिए सीएचसी में भर्ती कराया। जहां से उनकी हालत गंभीर देखते हुए मेरठ मेडिकल के लिए रेफर कर दिया। मेडिकल पहुंचने से पहले ही उनकी मौत हो गई। कांवड़िये की मौत से प्रशासन में हडकंप मच गया। डीआईजी कलानिधि नैथानी ने घटना के बाद मौके पर पहुंचकर सुरक्षा की जायजा लिया। लापरवाही को लेकर उन्होंने ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों को जमकर पटकार लगाई। पीड़ित पक्ष की ओर से कोई तहरीर नहीं दी गई है। एसपी देहात ने बताया कि पुलिस ने अपनी ओर से मामला दर्ज कर लिया है। हादसे के बाद चालक पिकअप लेकर भाग गया। कांवड़ पटरी मार्ग पर लगे सीसीटीवी की मदद से पिकअप और चालक की तलाश की जा रही है। गंगनहर कांवड़ पटरी मार्ग पर हर तरह के वाहनों का आवागमन बंद कर दिया गया है।

बरेली में ऑटो चालक को आया हार्ट अटैक, दरोगा ने सीपीआर देकर बचाई जान

बरेली , एजेंसी। बरेली में सेटेलाइट बस अड्डे के पास बुधवार शाम ऑटो चला रहे चालक को अचानक हार्ट अटैक आ गया। चालक की हालत बिगड़ता देख वहां ड्यूटी पर तैनात यातायात पुलिस के दरोगा और सिपाही ने सीपीआर देकर उनकी जान बचा ली। हालत में सुधार होने पर ऑटो चालक ने दरोगा और सिपाही को आभार जताया और दुआएं दीं।

ऑटो चालक टिंकू गुप्ता ने बताया कि उनकी बाईपास सर्जरी हो चुकी है। वह महीने भर पहले स्वस्थ हुए हैं। परिवार का भरण-पोषण करने के लिए दोबारा ऑटो चलाने लगे हैं। बुधवार शाम जब वह सेटेलाइट बस अड्डे पर अपने ऑटो में सवारी बैठाकर चलने वाले थे, तभी उन्हें हार्ट अटैक आ गया।

सीपीआर देकर बचाई जान : चालक की हालत बिगड़ता देख ऑटो में बैठी सवारियां घबरा गईं। इस दौरान सेटेलाइट पुलिस चौकी पर ड्यूटी कर रहे टीएसआई सत्यवीर सिंह और हेड कांस्टेबल इरशाद दौड़कर मौके पर पहुंच गए। दरोगा ने टिंकू की हालत बिगड़ता देख तत्काल सीपीआर देने का काम किया, जिससे वह होश में आ गए। हालत में सुधार होने पर उन्हें पानी पिलाया, फिर उन्हें अस्पताल में भर्ती करा दिया गया। पुलिसकर्मी की मदद से ऑटो चालक टिंकू गुप्ता की जान बच गई और उन्होंने बरेली पुलिस का आभार जताया।

मुझे कमरे में बंद करके पीटा... कई दिन भूखा भी रखा, पति ने तलाक मांगा तो हाथ-पैर पर सुसाइड नोट लिख दी जान

बागपत , एजेंसी। उत्तर प्रदेश के बागपत जिले से दिल दहालने वाला मामला सामने आया है। सात जन्म तक साथ निभाने का वादा करने वाले पति ने दो साल बाद ही बागपत जिले के रठौड़ा गांव की मनीषा (24) से तलाक मांग लिया। इस पर महिला ने मंगलवार रात कीटनाशक निगल कर खुदकुशी कर ली। परिजनों को उसका शव बुधवार की सुबह घर में पड़ा मिला। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। जान देने से पहले मनीषा ने अपने शरीर पर सुसाइड नोट लिखा और उसमें अपनी मौत के लिए पति समेत अन्य ससुराल वालों को जिम्मेदार बताया।

कीटनाशक निगलने से पहले मनीषा ने शादी के बाद अपनी हर पीड़ा को हाथ और पैर पर लिखा। उसने सुसाइड नोट में लिखा कि मेरी मौत के जिम्मेदार पति, सास, ससुर और दो देवर हैं, जो रठौड़ा आकर मेरे पूरे परिवार को खत्म करने की धमकी देकर गए हैं। उसने लिखा कि पति ने मेरी बहुत पिटाई की और कमरे में बंद करके कई दिनों तक भूखा भी रखा।

इसके बाद दहेज की मांग पूरी नहीं होने पर गोलियां खिलाकर मेरा गर्भपात भी कराया गया। गांव में हुई पंचायत में पति ने मुझे जान से मारने की धमकी भी दी और गांव वालों के सामने मेरे परिवार वालों की बेइज्जती करके तलाक के लिए कहा।

दो बार पंचायत के बाद भी नहीं बनी बात: रठौड़ा निवासी विवेक ने बताया कि वर्ष 2023 में मनीषा की शादी में दहेज में बुलेट बाइक दी गई थी। इसके बाद ससुराल वाले ज्यादा दहेज मांगने लगे। आरोप लगाया कि मांग पूरी नहीं होने पर मनीषा को उसका पति शराब पीकर कमरे में बंद करके पीटता था।

बताया कि शादी के पांच माह बाद ही अपनी बहन को लेकर रठौड़ा आना पड़ा। गांव समाज के लोगों की पंचायत हुई तो दो बार दोनों पक्षों में समझौता हुआ लेकिन ससुराल में मनीषा का उत्पीड़न बंद नहीं हुआ। मृतका मनीषा चार भाई बहनों में तीसरे नंबर की थी। उसके बड़े भाई विवेक की शादी हो चुकी है, जबकि दो भाई अविवाहित हैं।

यह है पूरा मामला: रठौड़ा गांव के रहने वाले गाजियाबाद एमसीडी कर्मी तेजवीर ने बताया कि उसने अपनी बेटी मनीषा की शादी वर्ष 2023 में सिद्धिपुर जिला गाजियाबाद के रहने वाले युवक के साथ की थी। शादी के पांच माह बाद ही बेटी के ससुराल वाले दहेज में थार गाड़ी और लाखों रुपये की मांग करने लगे।

आरोप है कि दहेज नहीं देने पर मनीषा का ससुराल में उत्पीड़न किया गया और उसका गर्भपात भी करा दिया गया। वे जुलाई 2024 में मनीषा को मायके ले आए। तेजवीर ने बताया कि चार दिन पहले ससुराल पक्ष के लोगों के साथ बातचीत हुई। पंचायत में रिश्तेदार व अन्य लोग भी रहे और दोनों पक्षों में तलाक के लिए सहमति बन गई।

मनीषा ने फसलों में डालने के लिए रखा कीटनाशक निगला: इसके बाद पति ने मनीषा से तलाक के कागजों पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा तो उसने मना कर दिया। तभी से मनीषा उदास रहने लगी। मंगलवार देर रात मनीषा ने घर में माता सुनीता, नीरज, बाबा जयभगवान, भाई रितिक और हार्दिक के सोने के बाद फसलों में डालने के लिए रखा कीटनाशक निगल लिया।

बुधवार की सुबह परिवार वालों को नींद से जागने पर मनीषा का शव पड़ा हुआ मिला। इसकी सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने फोरेंसिक टीम से घटनास्थल की जांच कराई और ग्रामीणों से भी पूछताछ की। पुलिस के अनुसार, मामले में जांच की जा रही है और शिकायत के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

जिले में सुबह से हो रही है लगातार बारिश, कई स्कूलों में कर दी गई छुट्टी

प्रयागराज , एजेंसी। जनपद में बृहस्पतिवार के दिन की शुरुआत भारी बारिश और तेज आंधी के साथ हुई। इससे जनजीवन अस्तव्यवस्थ हो गया है। इस बारिश को किसानों के लिए जहां फायदेमंद माना जा रहा है वहीं शहर और नगरीय इलाकों में यह आफत बन गई है। बारिश के चलते बिशप जॉनशन स्कूल एंड कॉलेज और आईपीईएम इंटरनेशनल स्कूल में भी छुट्टी कर दी गई है। इसके अलावा कई स्कूलों ने बरसात के कारण स्कूलों में अवकाश घोषित कर दिया है। तेज बारिश और हवाओं के झोंके के चलते दफ्तर जाने वालो के साथ ही यात्रा पर जाने वालों को काफी दिक्कत हुई। लोग रेन कोट और छाता लेकर निकले। सबसे ज्यादा दिक्कत सवारी वाहनों और दो पहिया वाहन से यात्रा करने वालों को हुई।

बारिश के कारण अल्लापुर, दारागंज, राजरूपपुर, धूमनगंज, कटरा, जानसेनगंज, मुट्ठीगंज, सिविल लाइंस आदि इलाकों में सड़कों पर पानी भर गया है। सिविल लाइंस से पुराने शहर को जाने वाले निरंजन पुल के नीचे पानी भरने के कारण लोगों को काफी दिक्कत हुई। यही स्थित हाइकोर्ट पानी टंकी से लीडर रोड को जोड़ने वाले पुल के दोनों तरफ रही। जल भराव के चलते लोगों को काफी दिक्कत हो रही है। गंगा और यमुना पहले से ही उफान पर हैं। कछारी इलाकों के लोग पलायन की तैयारी में हैं। सामान पैक करके गंतव्य स्थान को निकलने की तैयारी कर रहे हैं। बारिश के चलते उनकी परेशानी और भी बढ़ गई है।

हाईकोर्ट से नहीं जारी होगी प्रतिकूल प्रविष्टि

इलाहाबाद हाईकोर्ट से बृहस्पतिवार को कोई प्रतिकूल प्रविष्टि जारी नहीं किया जाएगा। बारिश के कारण मुकदमो में सुनवाई के लिए कोर्ट में हाजिर न हो पाने वाले वादकारियों के खिलाफ आज हाईकोर्ट प्रतिकूल आदेश नहीं जारी करेगा। बारिश को देखते हुए हाईकोर्ट ने यह राहत वादकारियों और अधिवक्ताओं को दी है। इसका आदेश भी जारी कर दिया गया है।

छांगुर के शहजाद से भी मिले कनेक्शन, एक करोड़ दिया गया था... पुणे में भी होगी जांच, ईडी की कार्रवाई जारी

बलरामपुर , एजेंसी। अवैध धर्मांतरण के आरोप में एटीएस की ओर से गिरफ्तार किए गए जमालुद्दीन उर्फ छांगुर मामले में प्रवर्तन निदेशालय 14 ठिकानों पर तलाशी ले रहा है, जिनमें से 12 उत्तर प्रदेश के बलरामपुर के उतरौला में और दो मुंबई में हैं। तलाशी आज सुबह 5 बजे शुरू हुई। ईडी ने उसके कांप्लेक्स की पड़ताल के साथ ही मधुपुर स्थित उसके आवास को भी खंगालना शुरू कर दिया है। इसके साथ ही ईडी छांगुर के करीबियों के घरों पर पहुंच कर छानबीन कर रही है। छांगुर को मधपुर में जमीन बेचने वाले पूर्व प्रधान जुम्मन के घर भी ईडी ने दस्तक दे दी। वहीं, सुबह से शहर के अन्य ठिकानों पर ईडी जांच कर रही है।

प्रवर्तन निदेशालय की टीम उतरौला के 12 ठिकानों के साथ ही मुंबई में भी छानबीन कर रही है। मुंबई के शहजाद शेख के घर ईडी पहुंच गई है। इसके अलावा एक और ठिकाने की पड़ताल कर रही है। पुणे में भी जांच की तैयारी है। सूत्रों की मानें तो शहजाद के खाते में एक करोड़ जमा हुए थे। ईडी छांगुर की ओर से रुपए के बंटवारे का तार जोड़ने में जुटी है।

इससे पहले, उतरौला में बुधवार की देर रात एसटीएफ की टीम पहुंची थी। रात करीब 11 बजे उतरौला बस अड्डा रोड पर टीम पहुंची। वहां एक बैंक के सामने खड़ी बाइक पर बैठे एक युवक से एसटीएफ ने पूछताछ की। इसके बाद उसे बैठा लिया। बाद में पता चला एसटीएफ की टीम ने छांगुर के भतीजे सोहराब को हिरासत में लिया है। इस पर आजमगढ़ में धर्मांतरण कराने का आरोप है। हालांकि, पूछताछ के बाद उसे छोड़ दिया गया है।

जानकारी के अनुसार, अवैध धर्मांतरण के आरोपी छांगुर के ठिकानों की पड़ताल बृहस्पतिवार की सुबह से ही शुरू हो गई। एटीएस के साथ ही ईडी की टीम ने भी छानबीन तेज कर दी है। उतरौला पहुंची टीम ने छांगुर से जुड़े करीब 12 ठिकानों की पड़ताल की। उतरौला में बने छांगुर के प्रतिष्ठान का ताला खुलवा कर जांच शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि छांगुर के दूसरे जिलों और प्रदेशों में ठिकानों की छानबीन भी हो रही है। ईडी छांगुर मामले में मनी लांड्रिंग के साथ ही विदेशी फंड की जांच कर रही है। उतरौला में सुबह से ही टीम पड़ताल में जुटी है।

कांप्लेक्स के साथ घर भी तलाश रही ईडी

जमालुद्दीन उर्फ छांगुर के संपत्तियों की पड़ताल ईडी ने तेज कर दी है। उसके कांप्लेक्स की पड़ताल के साथ ही मधुपुर स्थित उसके आवास को भी ईडी ने खंगालना शुरू कर दिया है। इसके साथ ही ईडी छांगुर के करीबियों के घरों पर पहुंच कर छानबीन कर रही है। छांगुर मधपुर में जमीन बेचने वाले पूर्व प्रधान जुम्मन के घर ईडी ने दस्तक दी। वहीं, सुबह से शहर के अन्य ठिकानों पर ईडी जांच कर रही है।

एटीएस के गवाह पर छांगुर के गुर्गों ने किया हमला, बयान न बदलने पर दी हत्या की धमकी: इससे पहले, अवैध धर्मांतरण के मामले में बयान न बदलने पर जमालुद्दीन उर्फ छांगुर के गुर्गों ने एटीएस के गवाह हरजीत कश्यप पर हमला कर दिया। उन्हें बुरी तरह से पीटा और हत्या की धमकी दी। पुलिस ने तीन के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। ग्राम रसूलाबाद निवासी हरजीत एटीएस के गवाह हैं।

उन्होंने छांगुर पर जबरन धर्मांतरण कराने का आरोप लगाया है। इसी बात को लेकर हरजीत से छांगुर के गुर्गों रियाज, कमालुद्दीन व नव्वाब ने मारपीट की। हरजीत के अनुसार उन्हें धमकाया गया कि रसूलाबाद गांव पाकिस्तान है। यहां रहकर मुसलमानों से बगावत करते हो। इसका अंजाम तुम सबको भुगतना पड़ेगा। योगी सरकार कब तक रहेगी, जब यह सरकार जाएगी तो तुम्हें सबक सिखाया जाएगा। हरजीत ने बुधवार को बताया कि तीन जुलाई को लखनऊ में छांगुर पीर के खिलाफ सताए व जबरन धर्म परिवर्तन कराए जाने के मामले में बयान दिया था। पुलिस ने कार्रवाई शुरू की।

हरजीत ने बताया कि वह सात जुलाई को दवा लेने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गैड़ास बुजुर्ग जा रहे थे। उतरौला चौराहा डुमरियागंज रोड पर पहले से खड़े रियाज, कमालुद्दीन व नव्वाब ने रोक लिया और मारने लगे। जान-माल की धमकी दी। कहा कि 24 घंटे के अंदर लखनऊ जाकर बयान बदलो। पिटाई करते हुए कह रहे थे कि छांगुर के खिलाफ आवाज उठाने वालों को मिट्टी में मिला दिया जाएगा। प्रभारी निरीक्षक उतरौला कोतवाली अवधेश राज सिंह ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है। जल्द ही सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

समय पर अनुमतियां देकर खनन क्षेत्र में बढ़ाएं निवेश, रोजगार और राजस्व : टी. रविकान्त

जयपुर। खान, भू विज्ञान एवं पेट्रोलियम के प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने कहा है कि प्रमुख खनिजों की नीलामी में समूचे देश में अग्रणी होने के साथ ही अब नीलाम खानों को परिचालन में लाने में भी राज्य अग्रणी राज्यों में शुमार हो जाएगा। अगले तीन से चार माह में आवश्यक अनुमतियों की औपचारिकताएं पूरी करवाकर करीब 10 प्रधान खनिज खानों को परिचालन में लाया जा सकेगा। उन्होंने स्टेक होल्डर्स से कहा कि वे तय समय सीमा में आवश्यक औपचारिकताएं व संबंधित स्थानों पर आवेदन प्रस्तुत करें ताकि समय पर अनुमतियां जारी हो सकें।

टी. रविकान्त बुधवार को आरआईसी में खान, वन एवं पर्यावरण, सीया, जीएसआई, आईबीएम व स्टेक होल्डर्स के साझा मंच को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि नीलाम खानों को जल्द से जल्द परिचालन में लाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है और मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा लगातार इस बात पर जोर दे रहे हैं कि संबंधित विभाग परस्पर सहयोग व समन्वय से

नीलाम खानों को आवश्यक अनुमतियां जारी कर परिचालन के समन्वित प्रयास करें ताकि प्रदेश में खनिज क्षेत्र में निवेश, रोजगार और राजस्व में बढ़ोतरी हो सके। उन्होंने बताया कि वर्ष 2016 से नीलामी प्रावधान के बाद से अब तक केवल 5 खानों में कार्य आरंभ हो सका है। हमारा प्रयास है कि अगले महीनों में प्राथमिकता से कार्य करते हुए 10 नई खानों में कार्य आरंभ हो जाए। रविकान्त ने कहा कि स्टेक होल्डर्स अनुमतियों के लिए आवश्यक आवेदन करने में देरी ना करें। रविकान्त ने सीया से आग्रह किया कि वे एक मानक चैक लिस्ट उपलब्ध करवा दें ताकि स्टेक होल्डर्स द्वारा उसी के अनुसार दस्तावेज प्रस्तुत किए जा सकें। इसी तरह से अन्य अनुमतियों की भी एसओपी उपलब्ध हो जाए तो स्टेक होल्डर्स उसके अनुसार कार्रवाई कर सकें। उन्होंने केन्द्र सरकार की पर्यावरण स्वीकृति के पहले स्टडी के केन्द्र सरकार के अनुमोदित सलाहकारों की सूची भी उपलब्ध करा दें व आवश्यक समझे जाने पर स्टेक होल्डर्स व सलाहकारों का ओरिएंटेशन भी करवाया जा सकता है। उन्होंने सभी संबंधित संस्थाओं से आग्रह किया कि नीलाम खानों की अनुमतियों के लिए प्राप्त प्रस्तावों पर प्राथमिकता से निर्णय ले ताकि समय पर जरूरी अनुमतियां जारी होने से परिचालन आरंभ हो सके। वन विभाग के नोडल अधिकारी अरुण प्रसाद, सीया के सदस्य सचिव विजय एन. ने औपचारिकताओं के संबंध में विस्तार से जानकारी दी और चेक लिस्ट उपलब्ध करवाने पर सहमति दी। सेक के सदस्य राजीव महनोत ने भी सुझाव दिए।

भारतीय खान ब्यूरो के क्षेत्रीय नियंत्रक चन्द्रेश बोहरा ने बताया कि प्राप्त माइनिंग प्लानों के अनुमति के कार्य में तेजी लाई गई है और शीघ्र ही प्लसन जारी कर दिया जाएगी। खान निदेशक दीपक तंवर ने कहा कि सरकार के द्वारा नीलाम खानों को परिचालन में लाने पर जोर दिया जा रहा है और इसके लिए अभियान के तौर पर कार्य आरंभ कर दिया है। उन्होंने बताया कि संबंधित विभागों और स्टेक होल्डर्स की कार्यशाला का उद्देश्य भी यही है कि कार्य को गति दी जा सके। अंबुजा, डालमिया, जेके लक्ष्मी, नुवाको, जेएसडब्लू सीमेंट सहित एक दर्जन से अधिक स्टेक होल्डर्स ने एक स्वर में राज्य सरकार की पहल की सराहना करते हुए विश्वास दिलाया कि उनके स्तर पर पेंडिंग औपचारिकताओं को शीघ्र पूरा कर दिया जाएगा। कार्यशाला में अतिरिक्त निदेशक महेष माथुर, एसएमई, सतर्कता प्रताप मीणा, एसजी संजय सक्सेना ने विभिन्न स्तरों पर पेंडिंग प्रकरणों की जानकारी दी। कार्यशाला में संयुक्त सचिव खान आशु चौधरी, अतिरिक्त निदेशक एमपी मीणा, अतिरिक्त निदेशक भूविज्ञान आलोक जैन, एसएमई एनएस शक्तावत, भीम सिंह, ओएसडी श्रीकृष्ण शर्मा, एसजी सचिवालय सुनील वर्मा सहित संबंधित विभागों के अधिकारी व स्टेक होल्डर्स ने हिस्सा लिया।

लॉरेंस गैंग ने प्रॉपर्टी कारोबारी से मांगी 20 करोड़ रुपए की फिरौती

जयपुर। शहर में लॉरेंस गैंग की ओर से फिरौती मांगने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। इस बार लॉरेंस गैंग के गुर्गे रोहित गोदारा से जुड़े हरि बॉक्सर ने एक प्रॉपर्टी कारोबारी को इंटरनेट कॉल से धमकी देकर 20 करोड़ रुपए की फिरौती मांगी है। इतनी बड़ी रकम मांगने की सूचना जब पुलिस को लगी तो एकबारगी हड़कम्प मच गया। अब धमकी देने वालों की पुलिस की कई टीमों ने तलाश शुरू कर दी है। इसमें सीएसटी, डीएसटी ईस्ट और अन्य पुलिसकर्मियों को लगाया है। पुलिस ने पीड़ित के घर और आसपास सुरक्षा बढ़ा दी है। जानकारी के अनुसार गांधी नगर थाना इलाके में रहने वाले प्रॉपर्टी कारोबारी मुकेश शाह को सोमवार को एक कॉल आया, उसने खुद को लॉरेंस गैंग से जुड़ा होना बताकर उसे जान से मारने की धमकी दी।

उसने कहा कि यदि 20 करोड़ रुपए नहीं दिए तो जान से मार देंगे। घबराए कारोबारी ने तुरंत पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। साइबर थाना पुलिस कॉल डिटेल के आधार पर फोन करने वाले का रिकॉर्ड निकालने का प्रयास कर रही है। इससे पहले भी लॉरेंस गैंग के नाम पर फिरौती मांगने की प्रदेशभर में कई घटनाएं हो चुकी है। पुलिस ने कई मामलों में गिरफ्तारियां भी हैं। पुलिस ने लॉरेंस गैंग पर तगड़ा शिकंजा कस रखा है।

तस्करी की आशंका : एटीएम कैश डिपॉजिट वैन से 11 करोड़ रुपए की चांदी बरामद

उदयपुर। जिले की गोगुंदा पुलिस ने एटीएम में कैश डिपॉजिट करने वाली वैन में 1100 किलो ग्राम चांदी की तस्करी करते गनमैन सहित पांच आरोपियों को हिरासत किया है। बरामद चांदी की अनुमानित कीमत करीब 11 करोड़ रुपए आंकी गई है। थानाधिकारी श्यामसिंह ने बताया कि दोपहर 12 बजे यह कार्रवाई सीएमएस कनेक्टिंग कॉमर्स नाम की कंपनी की वैन के खिलाफ की गई। यह देशभर में बैंकिंग से जुड़े एटीएम में कैश लाने और ले-जाने का काम करती है। सूचना पर आयकर विभाग और जीएसटी विभाग की टीम भी थाने पहुंच गई। हिरासत में लिए गए युवकों से पूछताछ की जा रही है।

थानाधिकारी ने बताया कि गाड़ी गुजरात की थी, लेकिन उसके आगे नंबर नहीं थे। पीछे नंबर अंकित थे। शक होने पर गाड़ी को रुकवाया गया। उसमें बैठे युवकों से पूछताछ की तो वे सही जवाब नहीं दे पाए। इसके बाद गाड़ी की चेकिंग की गई तो उसमें 1100 किलो ग्राम चांदी निकली। कुछ दस्तावेज भी मिले हैं। चांदी सहित गाड़ी को जब्त कर लिया है। पांचों युवकों को डिटेन कर चांदी कहां और किस काम के लिए ले जा रहे थे। इस बारे में पूछताछ की जा रही है। चांदी की तस्करी की आशंका है।

लोक परिवहन बस परमिट के लिए आवेदन शुरू, विभाग ने तय की प्राथमिकताएं

जयपुर। राजस्थान में लोक परिवहन सेवा के तहत बस परमिट जारी करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। परिवहन विभाग ने इसके लिए स्पष्ट प्राथमिकता क्रम तय किया है। विभाग की प्राथमिकता बसों के पंजीयन की स्थिति, सीट क्षमता, एसी या नॉन-एसी होने, संचालन अनुभव और मार्ग के प्रकार के आधार पर तय की गई है। इसको लेकर परिवहन विभाग ने आदेश जारी किए हैं। यदि बस आवेदन के समय पंजीकृत है, तो उसे सबसे पहले परमिट मिलेगा। सुनवाई के समय पंजीकरण होने पर दूसरी, और केवल चैसिस होने पर तीसरी प्राथमिकता मिलेगी। जिन बसों का न पंजीकरण है और न ही चैसिस, उन्हें अंतिम वरीयता दी जाएगी। एसी बसों को नॉन-एसी बसों की तुलना में प्राथमिकता मिलेगी। सीट संख्या के आधार पर 50 से अधिक सीट वाली बसों को पहले, 46-50 सीट पर दूसरे, 41-45 पर तीसरे और 37-40 सीट वाली बसों को अंतिम प्राथमिकता दी जाएगी। एकल अधिसूचित मार्ग पर आवेदन को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलेगी, जबकि दो या अधिक मार्गों वाले आवेदन दूसरे और संयुक्त मार्गों के आवेदन अंतिम वरीयता में रहेंगे। प्रस्तावित मार्ग के जिले का निवासी होने व संचालन अनुभव होने पर भी अतिरिक्त वरीयता मिलेगी।

सोने की बालियां लूटने वाले गिरोह का भंडाफोड़, तीन आरोपी गिरफ्तार

जयपुर। जयपुर ग्रामीण जिले के एक गांव में खेत में सो रहे दंपती पर आधी रात को लुटेरों ने हमला कर दिया। चाकू की नोक पर मारपीट कर महिला के कान से सोने की बालियां तोड़ ले गए। घटना 19 जून 2025 की रात करीब दो बजे की है, जब अजमेर जिले के नरू पनगढ़ निवासी श्रवण गुर्जर अपने खेत में बने डेरे पर परिवार सहित सो रहे थे। पीड़ित ने बताया कि उन्होंने डेरे के गेट पर ताला लगा रखा था और अपने मवेशियों के साथ भीतर सो रहे थे। तभी तीन अज्ञात युवक गेट का ताला तोड़कर डेरे में घुस आए।

सोते समय श्रवण गुर्जर को अचानक खटपट की आवाज आई। जब वह उठने की कोशिश कर ही रहे थे, तब तक आरोपियों ने उनके कानों से सोने की बालियां तोड़ लीं। विरोध करने पर एक आरोपी ने चाकू दिखाकर धमकाया और उनके साथ मारपीट की। शोर सुनकर झोपड़ी में सो रही पत्नी रत्नि देवी और उनकी बेटियां सीमा और देवकी जाग गई, लेकिन तब तक तीनों आरोपी सोने की बालियां लेकर भाग निकले।

पीड़ित के अनुसार, लूटपाट के दौरान आरोपियों ने उसके साथ जमकर मारपीट की। उनके दोनों कान, हाथ और पीठ पर गंभीर चोटें आई हैं। आरोपियों के चेहरे पीड़ित ने देखे हैं और उन्हें सामने आने पर पहचानने की बात भी कही है। घटना के बाद पुलिस ने गंभीर धाराओं में प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान शुरू कर दिया। घटना को गंभीरता से लेते हुए पुलिस उपायुक्त पश्चिम जयपुर पदम के निर्देशन में एक विशेष टीम का गठन किया गया। टीम में सहायक पुलिस आयुक्त गुरू, थाना प्रभारी दिदायक, उप निरीक्षक मोहनसिंह, हेड कांस्टेबल छोटूराम, महेंद्र कुमार और जुगल किशोर को शामिल किया गया। पुलिस टीम ने घटनास्थल और आसपास के सीसीटीवी कैमरों की जांच शुरू की। जांच के दौरान सीसीटीवी फुटेज में तीन संदिग्धों को एक मोटरसाइकिल पर घटनास्थल की तरफ जाते और फिर लौटते हुए देखा गया। फुटेज के आधार पर संदिग्धों की पहचान कर उनकी कॉल डिटेल रिपोर्ट (सीडीआर) निकाली गई और टेक्निकल एनालिसिस के जरिए लोकेशन ट्रेस की गई। जांच में सामने आया कि आरोपी राजस्थान के विभिन्न जिलों के रहने वाले हैं, जो पहले भी आपराधिक गतिविधियों में शामिल रहे हैं। इनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने तीन अलग-अलग टीमों को लगाया और सफलता भी हाथ लगी।

कल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए अन्तर्राज्यीय मंथन आवश्यक : दिनाकर लंका

जयपुर। आंध्र प्रदेश के बीसूका चेयरमेन श्री दिनाकर लंका ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन में विकसित भारत 2047 की परिकल्पना को साकार करने दिशा में केन्द्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएं अहम भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार से सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित हो रहा है। विकसित भारत की परिकल्पना को वास्तविक रूप देने के लिए केन्द्र और राज्यों की कल्याणकारी योजनाओं का अन्तर्राज्यीय मंथन आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कल्याणकारी योजनाओं की क्रियान्विति पर मंथन, प्रचलित पद्धतियों और विचारों के आदान-प्रदान से अन्य राज्य भी अपनी योजनाओं को सुदृढ़ कर और अधिक प्रभावी बना सकते हैं। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में सर्वोत्तम प्रथाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि एक-दूसरे से सीखकर और सफल मॉडलों का अनुकरण करके हम विभिन्न विकासात्मक पहलों की दक्षता और प्रभाव को बढ़ा सकते हैं। दिनाकर लंका बुधवार को प्रमुख शासन सचिव आयोजना भवानी सिंह देथा की अध्यक्षता में योजना भवन में बीस सूत्रीय कार्यक्रम, विकसित भारत 2047 के लिए सतत विकास लक्ष्यों को अर्जित करने व योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के संबंध में आयोजित बैठक में सहभागिता कर रहे थे।

विशेष निरीक्षण दलों के गठन से कार्यक्रम की गुणवत्तापूर्ण मॉनिटरिंग की जाए : नवीन महाजन

जयपुर। मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवीन महाजन ने निर्देश दिए कि प्रदेश में चुनाव आयोग के एसआईआर (स्पेशल इंटेंसिव रिविज़न) अभियान की जागरूकता के लिए ग्राम पंचायत से लेकर जिला स्तर तक आवश्यक संख्या में हेल्प डेस्क स्थापित की जाए एवं इन हेल्प डेस्क पर कार्यक्रम और उसके दिशा-निर्देशों से पूर्ण रूप से अवगत व्यक्ति को नियुक्त किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश का प्रत्येक पात्र नागरिक अपने मताधिकार का सही तरीके से प्रयोग कर सके, इसके लिए एसआईआर कार्यक्रम के माध्यम से मतदाता सूचियों के शोधन और पारदर्शिता को सुनिश्चित किया जाएगा। महाजन बुधवार को शासन सचिवालय में भारत निर्वाचन आयोग द्वारा फोटोयुक्त मतदाता सूचियों के प्रस्तावित विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम (स्पेशल इंटेंसिव रिविज़न) एवं अन्य निर्वाचन संबंधी कार्यों की तैयारियों को लेकर आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। महाजन ने कहा कि अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यक मानव संसाधनों जैसे बीएलओ, सूचना सहायक, पर्यवेक्षक आदि की समय रहते नियुक्ति कर विशेष प्रशिक्षण दिया जाए। इसके साथ ही, स्वयंसेवकों का शीघ्र चयन कर उन्हें भी आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि रैंडम चेकिंग के लिए विशेष निरीक्षण दलों का गठन कर अभियान की मॉनिटरिंग की जाए ताकि प्रदेश का कोई भी पात्र व्यक्ति मतदाता बनने से वंचित न रह सके। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि सभी संबंधित राजनीतिक दलों से समन्वय करते हुए बूथ लेवल एजेंट्स की नियुक्ति शीघ्र करवाई जाए। उन्होंने कहा कि पोलिंग स्टेशनों के रेशनलाइजेशन का कार्य मतदाताओं की संख्या, दूरी, पहुंच, सहूलियत और मूलभूत सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए पूरा किया जाए।

प्रदेश में सरकार नाम की चीज नहीं, सदन से सड़क तक संघर्ष करेंगे : डोटासरा

जयपुर। पीसीसी चीफ गोविन्द सिंह डोटासरा के कार्यकाल के 5 साल पूरे होने पर कांग्रेस नेताओं, पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने मंगलवार को पीसीसी मुख्यालय पर उनका स्वागत किया। डोटासरा ने सभी का आभार जताते हुए कांग्रेस को मजबूत करने का संकल्प दिलाया।

स्वागत के बाद डोटासरा ने मीडिया से बातचीत में कहा कि 5 साल के कार्यकाल में हमने लोकसभा और विधानसभा का चुनाव अच्छे से लड़ा। हमने संगठन का निर्माण किया। अभी संगठन को काम देंगे, जो डेढ़ साल में राजस्थान में सरकार जो कर रही है उस पर हमारी नजर है। संगठन के लोग वॉच कर रहे हैं। सरकार जिस दिन से बनी पर्ची से तब से कोई काम नहीं किया केवल कांग्रेस को बदनाम करने की कोशिश की। हमारा 6 महीने की समीक्षा की बात कही,उसमें क्या किया यह नहीं बताया। किसी भी डिपार्टमेंट में तनख्वाह देने के भी लाले पड़ रहे हैं ,माफिया हावी है। विधायक बालमुकुंद को के पुलिस अधिकारी की कुर्सी पर बैठने पर कहा कि जनप्रतिनिधि अलोकतांत्रिक हो चुके हैं। मर्यादाहीन हो चुके हैं। प्यार मोहब्बत की जगह हिंदू मुस्लिम का झगड़ा कैसे हो कैसे नफरत हो उसकी बात करते है। एक विधायक पहले थानेदार की कुर्सी पर जाकर विधायक बैठ जाता है तो एक भाजपा एमएलए के पैर पकड़ता है। प्रदेश में बारिश से 12 से ज्यादा मौत हो गई। बारिश में कलेक्टर एसपी ट्रैक्टर में सवारी करके ड्रामा कर रहे हैं। सरकार में किसी भी मंत्री ने अतिवृष्टि को लेकर कोई ट्वीट तक नहीं किया। कैबिनेट में केवल जनता पर कुठाराघात होता है।

नई टाउनशिप पॉलिसी लाए हैं वह जनता को परेशान करने के लिए है। हमने इतने पट्टे दिए आज एक पट्टा नहीं मिल रहा। कोर्ट इनकी रोजाना फजीती कर रहा है मुझे तो डर है कि कहीं मुख्यमंत्री को कोर्ट नहीं बुला ले जो जानबूझकर नए-नए बहाने कर पंचायत और नगर निकाय का चुनाव नहीं करवा रहे हैं। कल कैबिनेट की बैठक में कह रहे है कि आरपीएससी का पुनर्गठन कर दिया, क्या इसे पुनर्गठन कहते हैं 7 मेंबर को 10 मेम्बर बना दिया। पुनर्गठन उनकी योग्यता तय करना, भर्ती पारदर्शिता लाने की बातें जो अध्यक्ष बनेंगे उनके लिए मापदंड निर्धारित करने की बात थी।

आगे से पेपर लीक न हो समय पर तरीके से युवाओं के एग्जाम हो उसकी बात थी आप कह रहे हैं। कांस्टीट्यूशनल संस्था है उसे भंग नहीं किया जा सकता तो फिर पहले क्यों ऐसी बातें कीं। डोटासरा ने कहा कि मुझे संगठन ने मेरी पार्टी को मजबूत करने का काम दिया है। मैं उसमें लगा हुआ हूं इस संगठन के द्वारा लोगों की दुख दर्द में सहायता करना मदद करना और वोटर लिस्ट के माध्यम से एवं के माध्यम से चोरी करना चाहते हैं चुनाव नहीं करवा कर सरकार की संस्थाओं का दुरुपयोग करना चाहते हैं उनके खिलाफ हम सड़क और सदन में लड़ाई लड़ेंगे और जनता को राहत दिलाने का काम करेंगे।

कांग्रेस के पापों को धोने में लग रहा है समय, व्यक्तिगत नहीं, समान अवसर को मिलेगी प्राथमिकता : मदन राठौड़

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और कांग्रेस नेताओं द्वारा की जा रही बयानबाजी पर मीडिया से बातचीत करते हुए तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने जो पाप किए थे, उन पापों को धोने में समय लग रहा है। गहलोत सरकार ने अनियमित और अव्यवस्थित ढंग से वार्ड और पंचायतों का गठन किया, कोई वार्ड 250 मतदाताओं का तो कोई 8000 मतदाताओं का बना दिया गया।

अब भाजपा सरकार इन सभी गलतियों को सुधार कर व्यवस्थापन का कार्य कर रही है, जिससे सभी को समान अवसर मिल सके। किसी के व्यक्तिगत लाभ के लिए वार्ड या पंचायतों का गठन नहीं होना चाहिए। कांग्रेस को केवल छिद्रान्वेषण और आलोचना की आदत हो गई है। वो हर समय नकारात्मक सोच के साथ रहते हैं। उन्हें अब सकारात्मक पहल करनी चाहिए। उपचुनाव और निकाय उपचुनावों के परिणामों का हवाला देते हुए मदन राठौड़ ने कहा, 36 में से 29 सीटें भाजपा ने जीती हैं, इसके बावजूद कांग्रेस खुद को विजयी बता रही है तो यह कांग्रेसियों के लिए चिंतन का विषय है।

कैसे जाए पाठशाला, रावनगुराडी विद्यालय में अव्यवस्थाओं का आलम

चौमहला। गंगधार उपखंड क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रावनगुराड़ी में बिजली सड़क पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। छात्र छात्राओं को कच्ची डगर कीचड़ गंदगी से सने रास्ते से स्कूल जाना पड़ रहा है, जिससे खफा ग्रामीणों ने सोमवार को छात्र छात्राओं को स्कूल जाने से रोका तथा बीच सड़क पर प्रदर्शन किया। ग्रामीण क्षेत्र का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रावनगुराड़ी दो भवनों में संचालित होता है पुराने स्कूल भवन में कक्षा 1 से 8 तक कक्षाएं संचालित है नए भवन में कक्षा 9 से 12 तक कक्षाएं संचालित होती है, नया भवन गांव से आधा किमी दूर बनाया गया है गांव से स्कूल जाने का रास्ता कच्चा है रास्ते के दोनों ओर झाड़ियां ही झाड़ियां उग रही है। रास्ते में बरसात के कारण जगह - जगह पानी भरा हुआ है तथा कीचड़ ही कीचड़ हो रहा है जिससे छात्र छात्राओं को विद्यालय आने जाने में काफी परेशानी हो रही है विद्यालय में 225 छात्र छात्रा अध्यनरत है। विद्यालय गांव से बाहर होने के कारण इसमें चार दिवारी, बिजली पानी जैसी सुविधाएं नहीं है, गागरिन पेयजल योजना का कनेक्शन है लेकिन उसमें पानी नहीं आता, विद्यालय द्वारा बिजली कनेक्शन के लिए आवेदन किया लेकिन एक लाख सत्ताविस हजार का डिमांड नोटिस जारी किया गया जो स्कूल जमा करने में सक्षम नहीं है। सोमवार को अव्यवस्थाओं से खफा होकर ग्रामीणों ने छात्र छात्राओं को स्कूल नहीं जाने दिया तथा

करीब दो घंटे तक विद्यालय के रास्ते पर प्रदर्शन किया, सोमवार को कोई छात्र छात्रा विद्यालय नहीं गए। ग्रामीणों ने बताया कि स्कूल की समस्या को लेकर उन्होंने कई बार उच्च अधिकारियों व विधायक को अवगत कराया लेकिन कोई समाधान नहीं हुआ।

विद्यालय तक सड़क नहीं होने से बच्चों को बरसात के दिनों में काफी परेशानी होती है पूरा रास्ता खराब हो रहा।

- कालुसिंह, पूर्व सरपंच रावनगुराड़ी

स्कूल में बिजली पानी सड़क की समस्या है बिजली विभाग 127000 रु का डिमांड जारी किया गया ,स्कूल के पास फंड नहीं है।

- ईश्वर सिंह ग्रामीण

स्कूल में बिजली पानी सड़क चार दिवारी की शीघ्र उचित व्यवस्था करवाई जावे,खराब सड़क के कारण बच्चो को स्कूल जाने में परेशानी होती है।

- कमल सिंह सिसोदिया ग्रामीण

स्कूल में बिजली पानी सड़क चार दिवारी को लेकर कई बार उच्च अधिकारियों जनप्रतिनिधियों को अवगत कराया गया लेकिन कोई समाधान नहीं हुआ।

- बालू सिंह वार्ड पंच

बिजली पानी,सड़क,चार दिवारी के लिए उच्च अधिकारियों को अवगत करवा दिया गया है।

- चंद्रगुप्त बुनकर, प्रधानाचार्य, उच्च माध्यमिक विद्यालय रावनगुराडी

बिजली के लिए फाइल लगा रखी है, चार दिवारी के प्रस्ताव बनाकर भेज रखे है,सड़क का मामला शिक्षा विभाग के अधीन नहीं है।

- रमेश चंद वर्मा, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी डग

शिविर के दौरान एसडीएम के साथ इस सड़क का मौका देखा था,विकास अधिकारी को गिट्टी ग्रेवल सड़क को सही करवाने के निर्देश दिए है ।

- कालूराम वर्मा, विधायक डग

उप–मुख्यमंत्री ने नायक पुष्पेंद्र नेगी की शहादत पर शोक व्यक्त किया

शिमला। उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने किन्नौर ज़िला की सांगला तहसील के थैमगारंग पंचायत निवासी एवं डोगरा रेजीमेंट में तैनात नायक पुष्पेंद्र नेगी की असम में डयूटी के दौरान शहादत पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि राष्ट के प्रति उनका समर्पण अविस्मरणीय है और प्रदेश को उनके बलिदान पर गर्व है। उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने ईश्वर से पुष्पेंद्र नेगी की आत्मा की शांति और परिजनों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की है।

उप–मुख्यमंत्री ने समाजवादी पार्टी के महासचिव एवं हिमाचल कांग्रेस के प्रभारी मंत्री से...

शिमला। उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने आज नई दिल्ली में न्यूनतम एवं हिमाचल प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी रजनी पाटिल से डेमोक्रेट की। इस अवसर पर दोनों नेताओं के बीच प्रदेश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति, क्षेत्रीय सहयोग और विकास से जुड़े मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हुई। श्री अग्निहोत्री ने प्रदेश सरकार द्वारा जन कल्याण के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी दी और केंद्र से कृषि सहायता के संदर्भ में विचार-विमर्श किया। महिला शिष्या ने प्रदेश सरकार के निर्देशन में पार्टी संगठन को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाई।

मुख्यमंत्री ने नायक पुष्पेंद्र नेगी के निधन पर शोक व्यक्त किया

शिमला। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने डोगरा रेजिमेंट के नायक पुष्पेंद्र नेगी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। असम में नायकेन्द्र नेगी के पुष्प के दौरान एक दुर्घटना में देहांत हो गया था। वह किन्नौर जिले के सांगला तहसील के थामगारंग पंचायत में रहने वाले थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि वीर युवा प्रदेश को सदैव श्रद्धा और कर्तव्य के साथ याद रखेंगे। उन्होंने ईश्वर से दिव्य आत्मा को शांति और शोक संत परिवार को इस अपूर्ण क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा देने के लिए 18 जुलाई से एग्री मशीनरी पोर्टल होगा सक्रिय

शिमला। कृषि विभाग के एक प्रवक्ता ने आज यहां बताया कि किसानों को आधुनिक मशीनरी की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए विभाग द्वारा एग्री मशीनरी पोर्टल 18 जुलाई, 2025 को दोपहर 12 बजे से सक्रिय किया जा रहा है। इसके माध्यम से प्रदेश के किसान विभिन्न कृषि यंत्रों के लिए पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर अनुदान हेतु आवेदन कर सकेंगे। प्रवक्ता ने बताया कि कृषि कार्यों के मशीनीकरण से किसानों की कार्यक्षमता एवं आमदनी बढ़ती है, लागत में कमी आती है और उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार होता है। कृषि विभाग का उद्देश्य किसानों को नई, आधुनिक और उन्नत किस्म की कृषि मशीनरी व उपकरण उपलब्ध करवाना है। उन्होंने बताया कि प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों और छोटे खेतों को ध्यान में रखते हुए पहाड़ी क्षेत्रों के अनुकूल कृषि यंत्रों को बढ़ावा दिया जा रहा है। किसानों को ट्रैक्टर, पावर टिल्लर, पावर वीडर और अन्य कृषि उपकरण ीजजचरूध्ध्हतपउंबीपदमतलण्दपबण्पद पोर्टल के माध्यम से अनुदान पर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार ने लघु, सीमांत, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा महिला किसानों को कृषि यंत्रों पर 50 प्रतिशत अनुदान का प्रावधान किया है। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे केवल केंद्र सरकार से पंजीकृत फर्मों तथा स्वीकृत मॉडल की मशीनरी की खरीद करें ताकि बाद में किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।उन्होंने कहा कि कृषि विभाग किसानों को आधुनिक मशीनरी के माध्यम से खेती को लाभकारी बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने किसानों से इस पोर्टल का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा देने के लिए 18 जुलाई से एग्री मशीनरी पोर्टल होगा सक्रिय

शिमला। । कृषि विभाग के एक प्रवक्ता ने आज यहां बताया कि किसानों को आधुनिक मशीनरी की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए विभाग द्वारा एग्री मशीनरी पोर्टल 18 जुलाई, 2025 को दोपहर 12 बजे से सक्रिय किया जा रहा है। इसके माध्यम से प्रदेश के किसान विभिन्न कृषि यंत्रों के लिए पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर अनुदान हेतु आवेदन कर सकेंगे। प्रवक्ता ने बताया कि कृषि कार्यों के मशीनीकरण से किसानों की कार्यक्षमता एवं आमदनी बढ़ती है, लागत में कमी आती है और उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार होता है। कृषि विभाग का उद्देश्य किसानों को नई, आधुनिक और उन्नत किस्म की कृषि मशीनरी व उपकरण उपलब्ध करवाना है। उन्होंने बताया कि प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों और छोटे खेतों को ध्यान में रखते हुए पहाड़ी क्षेत्रों के अनुकूल कृषि यंत्रों को बढ़ावा दिया जा रहा है। किसानों को ट्रैक्टर, पावर टिल्लर, पावर वीडर और अन्य कृषि उपकरण http://agrimachinery.nic.in पोर्टल के माध्यम से अनुदान पर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार ने लघु, सीमांत, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा महिला किसानों को कृषि यंत्रों पर 50 प्रतिशत अनुदान का प्रावधान किया है। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे केवल केंद्र सरकार से पंजीकृत फर्मों तथा स्वीकृत मॉडल की मशीनरी की खरीद करें ताकि बाद में किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि कृषि विभाग किसानों को आधुनिक मशीनरी के माध्यम से खेती को लाभकारी बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने किसानों से इस पोर्टल का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

मंत्रिमण्डलीय उप–समिति ने आपदा प्रबंधन के लिए पूर्व चेतावनी तंत्र स्थापित करने को मंजूरी दी

शिमला। राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी ने आज यहां आपदा प्रबंधन और पुनर्वास पर गठित मंत्रिमण्डलीय उप-समिति की बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में हाल ही में प्रदेश में बादल फटने और बाढ़ की घटनाओं के दृष्टिगत राहत एवं पुनर्वास कार्यों की समीक्षा की। बैठक में प्रभावित क्षेत्रों में अवरूद्ध सड़कों की बहाली, पुलों के पुनर्निर्माण और जलापूर्ति योजनाओं की मरम्मत जैसे आवश्यक बुनियादी ढांचे को दुरुस्त करने पर भी विचार-विमर्श किया। मंत्रिमण्डलीय उप-समिति ने आपदा प्रबंधन के लिए अर्ली वार्निंग सिस्टम (पूर्व चेतावनी तंत्र) स्थापित करने को स्वीकृति दी। इस प्रणाली के माध्यम से समय-समय पर मौसम की निगरानी, पूर्वानुमान और चेतावनी आदि की सुविधा सुनिश्चित होगी। इसके सुचारू संचालन से समय रहते सावधानी बरतने से आपदा के प्रभाव को कम कर, जान-माल के नुकसान में कमी आएगी। उप-समिति ने आपदा के समय राहत एवं बचाव कार्य में तेजी लाने के लिए हेलीकॉप्टर किराए पर लेने का भी निर्णय लिया ताकि राहत कार्यों में सहायता मिल सके। जगत सिंह नेगी की अध्यक्षता में आयोजित एक अन्य बैठक में मंत्रिमण्डलीय उप-समिति ने छोटे और सीमांत किसानों के लिए भूमि नियमितीकरण से जुड़े मामलों पर भी चर्चा की।

बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही प्रदेश सरकार : डॉ. शांडिल

बद्दी में राज्य औषधि परीक्षण प्रयोगशाला का किया निरीक्षण

सोलन । स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता तथा सैनिक कल्याण मंत्री कर्नल डॉ. धनीराम शांडिल ने कहा कि मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के नेतृत्व में वर्तमान सरकार लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। डॉ. शांडिल आज सोलन ज़िला के बद्दी में राज्य औषधि परीक्षण प्रयोगशाला का निरीक्षण करने के उपरांत उपस्थित दवा उद्योगपतियों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं अन्य को संबोधित कर रहे थे।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम इस वर्ष प्रदेश में आई प्राकृतिक आपदा के कारण असमय दुःखद मृत्यु को प्राप्त 62 व्यक्तियों की आत्मिक शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया और शोकाकुल परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

डॉ. शांडिल ने कहा कि बद्दी स्थित औषधि प्रयोगशाला देश की तीन सर्वश्रेष्ठ दवा परीक्षण प्रयोगशाला में से एक है। उत्तर भारत की यह एकमात्र प्रयोगशाला है। इस प्रयोगशाला में प्रति वर्ष 6000 दवा सैंपल परीक्षण की क्षमता है। अब तक इस प्रयोगशाला में 2783 सैंपल प्राप्त हुए हैं। इनमें से 1845 सैंपल की जांच की गई है और 28 सैंपल निर्धारित मानक अनुसार नहीं पाए गए हैं।

उन्होंने कहा कि इस प्रयोगशाला के निर्माण पर लगभग 37 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य के सभी चिकित्सा महाविद्यालयों को आधुनिक तकनीक से लैस करने के लिए 1,730 करोड़ रुपये का निवेश सुनिश्चित बनाएगी। इससे लोगों को प्रदेश के भीतर ही उच्च गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त होंगी। उन्होंने कहा कि लोगों को विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के लिए प्रदेश सरकार उच्च गुणवत्ता एवं तकनीक उक्त चिकित्सा उपकरण स्थापित करने पर बल दे रही है। रोगियों को बेहतर एवं सुगम स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए पैरामेडिकल स्टाफ, नर्स, तकनीशियन और अन्य सहायक कर्मियों के पद भरे जा रहे हैं। नर्सिंग सुविधाओं में बढ़ौतरी के दृष्टिगत जीएनएम सीटों की संख्या भी बढ़ाई जाएगी।

डॉ. शांडिल ने कहा कि प्रदेश सरकार के अब तक के कार्यकाल में स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क और अन्य आधारभूत क्षेत्रों में आवश्यक निवेश किया गया है ताकि लोगों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें। उन्होंने कहा कि शिक्षा क्षेत्र में प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे सुधारों के परिणामस्वरूप हिमाचल एनएएस-2025 सर्वेक्षण में पांचवें स्थान पर आ गया है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र में किए जा रहे सुधारों के परिणाम शीघ्र ही सभी के सामने होंगे। प्रदेश सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान कर रही है तथा वर्तमान बजट में स्वास्थ्य सेवाओं के स्तरोनयन के लिए पर्याप्त धनराशि आबंटित की गई है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार सामाजिक सुरक्षा क्षेत्र के माध्यम से वंचित एवं लक्षित वर्गों को हर स्तर पर राहत प्रदान कर रही है। इस अवसर पर दून के विधायक रामकुमार चौधरी, नालागढ़ के विधायक हरदीप सिंह बावा, नगर परिषद बद्दी के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ कांग्रेसी नेता मदन चौधरी, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता कुलतार सिंह, प्रदेश स्वास्थ्य विभाग के विशेष सचिव नीरज कुमार, बद्दी-बरोटीवाला-नालागढ़ विकास प्राधिकरण की मुख्य कार्यकारी अधिकारी सोनाक्षी तोमर, उपमण्डलाधिकारी बद्दी राजकुमार, उपनिदेशक उद्योग योगेश गुप्ता, मुख्य चिकित्सा अधिकारी सोलन डॉ. अजय पाठक, राज्य औषधि नियंत्रक मनीष कपूर, हिमाचल ड्रग मैन्युफैक्चर्स एसोसिएशन बद्दी के अध्यक्ष डॉ. राजेश गुप्ता सहित अन्य दवा निर्माता एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा प्रदान करने में खेल सहायक : रोहित ठाकुर

दो दिवसीय राज्य स्तरीय कुराश प्रतियोगिता आरम्भ

सोलन । शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने कहा कि खेल युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें विकास की दिशा में और अधिक समर्पित होकर कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। रोहित ठाकुर आज यहां डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी व वानिकी विश्वविद्यालय नौणी में हिमाचल प्रदेश एमेच्योर एसोसिएशन कुराश द्वारा आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कुराश प्रतियोगिता का शुभारम्भ करने के उपरांत खिलाड़ियों को संबोधित कर रहे थे।दो दिवसीय इस राज्य स्तरीय कुराश प्रतियोगिता में लगभग 408 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। रोहित ठाकुर ने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं के समग्र विकास के लिए खेल-कूद एवं शिक्षण गतिविधियों पर विशेष बल दे रही है। खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान की जा रही है और उन्हें पहले से अधिक वित्तीय सहायता भी दी जा रही है। शिक्षा मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने स्कूल प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की डाईट मनी 120 रुपए से बढ़ाकर 250 रुपए प्रतिदिन की गई है। यह सुविधा सभी खेल छात्रावासों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्रों को भी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने वाले स्कूली खिलाड़ियों को पहली बार प्रदेश सरकार और शिक्षा विभाग द्वारा सम्मानित किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने वरिष्ठ खिलाड़ियों की डाईट मनी राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए बढ़ाकर 400 रुपए और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए बढ़ाकर 500 रुपए किया गया है।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को आने-जाने के लिए 3 ए.सी. का किराया दिया जा रहा है। शिक्षा मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने ऑलम्पिक और पैरा-ऑलम्पिक खेलों तथा एशियाई खेलों में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि में अभूतपूर्व वृद्धि की है। रोहित ठाकुर ने कहा कि प्रदेश में इस वर्ष में जुब्बल में छात्राओं के लिए कबड्डी और बेडमिंटन छात्रावास तथा मण्डी ज़िला के संधोल में वॉलीबॉल छात्रावास आरम्भ किया गया है। राज्य में अब कुल 09 खेल छात्रावास हैं, जिनमें 253 खिलाड़ी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार शिमला के कटासनी में बहुउद्देशीय खेल स्टेडियम निर्मित कर रही है। उन्होंने कहा कि कुराश, उज़्बेकिस्तान का राष्ट्रीय खेल है और एक पारंपरिक मार्शल आर्ट है। यह खेल हमारे पारम्परिक प्राचीन खेल कुश्ती से मिलता-जुलता है। रोहित ठाकुर ने सभी खिलाड़ियों को बधाई दी और आशा जताई कि कुराश युवाओं को मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने में सहायक सिद्ध होगा। इस अवसर पर अवगत करवाया गया कि स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित अंडर-19 और अंडर-17 खेलों में हिमाचल के खिलाड़ियों ने 34 पदक प्राप्त किए। इनमें से 10 पदक कुराश में जीते गए। रोहित ठाकुर ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले राजकीय छात्रा वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला सोलन की छात्राओं को 15000 रुपए, राजकीय महाविद्यालय सोलन के बच्चों को सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने पर 15 हजार रुपए तथा कुराश संघ को 50 हजार रुपए देने की घोषणा की। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए।

ग्राम पंचायत नौणी के प्रधान मदन हिमाचली, डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी के कुलपति प्रो. राजेश्वर चंदेल, प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेता चंद्रमोहन, भारतीय कुराश संघ के अध्यक्ष तथा विश्व कुराश तकनीकी निदेशक रवि कपूर, कृषि ग्रामीण विकास बैंक के अध्यक्ष देवेन्द्र नेगी, हिमाचल प्रदेश एमेच्योर एसोसिएशन कुराश के अध्यक्ष कुशाल मुंगटा, प्रधान डॉ. सुरेन्द्र कुल्ला, महासचिव वीरेन्द्र सिंह धोल्टा, विकास कालटा सहित कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता, कुराश संघ के पदाधिकारी, खिलाड़ी एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

सीएमओ ने अल्ट्रासाउंड मशीनों के निरीक्षण करने के दिए निर्देश

कायाकल्प में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने को सराहा

धर्मशाला । मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा राजेश गुलेरी ने जिला कांगड़ा की सभी अल्ट्रासाउंड मशीनों के निरीक्षण करने के निर्देश संबंधित चिकित्सा अधिकारियों को दिए हैं। बुधवार को जोनल अस्पताल में जिला स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए डा राजेश गुलेरी ने कहा कि कायाकल्प में जिला कांगड़ा के लिए यह वर्ष अत्यंत उपलब्धिपूर्ण रहा है।

मुख्यचिकित्सा अधिकारी डॉ राजेश गुलेरी ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला कांगड़ा के कुल 131 स्वास्थ्य संस्थानों ने विभिन्न श्रेणियों में कायाकल्प मानकों की कसौटी पर खरा उतरते हुए क्वालिफाई किया। डॉ राजेश गुलेरी ने बताया कि कायाकल्प मानकों में जिला कांगड़ा के उत्कृष्ट प्रदर्शनकरने वाले स्वास्थ्य संस्थानों की कैटेगरी-1 में बड़े स्वास्थ्य संस्थानों (में सिविल अस्पताल पालमपुर को प्रथम स्थान तथा पुरस्कार राशि ?35 लाख, जोनल अस्पताल धर्मशाला को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए द्वितीय स्थान तथा सिविल अस्पताल कांगड़ा को प्रथम बार सहभागिता व सांत्वना पुरस्कार मिला है। कैटेगरी-2 में सीएचसी बीड़ को सांत्वना पुरस्कार तथा पुरस्कार राशि ?1 लाख मिली है। जबकि कैटेगरी-3 में आयुष्मान आरोग्य मंदिर में पीएचसी धड़ूं को प्रथम स्थान तथा पुरस्कार राशि ?2 लाख तथा आयुष्मान आरोग्य मंदिर कोट पलाहडी नूरपुर हैल्थ ब्लाक को प्रथम स्थान, आयुष्मान आरोग्य मंदिर ढन्दोल हैल्थ ब्लाक महाकाल को द्वितीय तथा आयुष्मान आरोग्य मंदिर को वदूही नूरपुर हैल्थ ब्लाक को तृतीय स्थान मिला है । डॉ राजेश गुलेरी ने इस समीक्षा बैठक के दौरान सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वास्थ्य कार्यक्रमों एवम योजनाओं, क्षय निवारण कार्यक्रम, राष्ट्रीय बाल सुरक्षा कार्यक्रम, राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम नई दिशा केंद्र पीएमएसए, राष्ट्रीय टीकाकरण मिशन के बारे में विस्तार से चर्चा की गई एवं विभाग द्वारा इन कार्यक्रमों को सुदृढ़ करने के लिए जिला कांगड़ा के सभी बीएमओ को दिशा निर्देश दिए। इस बैठक में एम.एस. जोनल अस्पताल डॉ अनुराधा शर्मा, जिला स्वास्थ्य एवं क्षयरोग अधिकारी डॉ राजेश सूद, जिला कांगड़ा एस एम ओ, जिला कार्यक्रम अधिकारी तथा सभी बीएमओ तथा स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। बैठक का संचालन जिला स्वास्थ्य अधिकारी एवम जिला क्षय रोग कार्यक्रम अधिकारी डॉ राजेश सूद ने किया।

रोहित ठाकुर ने लीफ स्पॉट रोग से बचाव के लिए नौणी विश्वविद्यालय को दिए निर्देश

सोलन । शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी को निर्देश दिए हैं कि सेब के 'लीफ स्पॉट' रोग से बचाव के लिए बागवानी विभाग के साथ मिलकर कार्य करें और वैज्ञानिकों को प्रभावित सेब के बागीचों में भेजें ताकि बागवानों को शीघ्र राहत मिल सके। रोहित ठाकुर ने आज विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. राजेश्वर चंदेल से विश्वविद्यालय में बागवानी सहित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों एवं परियोजनाओं पर सारगर्भित चर्चा की। शिक्षा मंत्री ने इस अवसर पर कहा कि हिमाचल प्रदेश की आर्थिकी में सेब का महत्वपूर्ण योगदान है और सेब के माध्यम से बागवानों एवं राज्य की आर्थिकी को और मज़बूत करने के लिए यह आवश्यक है कि सेब की ऐसी नई किस्में ईजाद करने पर निरंतर कार्य किया जाए जो वर्तमान मौसम के अनुकूल हों। उन्होंने कहा कि इस दिशा में नौणी विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है। विश्वविद्यालय को निरंतर शोध के माध्यम से बागवानों को सेब फसल विविधीकरण की दिशा में अवगत करवाते रहना चाहिए।

उन्होंने इस अवसर पर विश्वविद्यालय में चलाए जा रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों और भविष्य में आरम्भ किए जा रहे पाठ्यक्रमों की जानकारी भी ली। डॉ. राजेश्वर चंदेल ने रोग उन्मूलन के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी।विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राजेश्वर चंदेल ने इस अवसर पर अवगत करवाया कि प्रदेश सरकार ने विश्व बैंक पोषित योजना के तहत विश्वविद्यालय को एक महत्वपूर्ण परियोजना स्वीकृत की है। इस परियोजना के तहत विश्वविद्यालय को 2.80 करोड़ रुपए आबंटित किए गए हैं। परियोजना के तहत कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में 'स्कूल टू वर्क ट्रांजिशन' सुविधा के लिए इनक्यूबेशन केन्द्र स्थापित किया जाएगा। 9वीं से 12वीं क्षेत्र के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम भी विकसित किया जाएगा। उन्होंने परियोजना की प्रगति की जानकारी दी। रोहित ठाकुर ने तदोपरांत उनसे मिलने आए एन.एस.यू.आई. के छात्रों को आश्वस्त किया कि उनकी विभिन्न मांगों पर सहानुभूति पूर्वक विचार किया जाएगा। शिक्षा मंत्री का इससे पूर्व, विश्वविद्यालय परिसर पहुंचने पर राष्ट्रीय भारतीय छात्र संगठन के छात्रों ने एन.एस.यू.आई. के सोलन ज़िला अध्यक्ष तुषार स्तान की अध्यक्षता में गर्मजोशी से स्वागत किया और छात्रों की विभिन्न मांगों से उन्हें अवगत करवाया। विश्वविद्यालय के कुल सचिव सिद्धार्थ आचार्य, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

सुक्खू सरकार की बड़ी जीत, कड़छम-वांगतू से अब मिलेगी 18 प्रतिशत रायल्टी

- **सरकार ने अदालत में बेहतर ढंग से रखा पक्ष, होगी 250 करोड़ रुपए की अतिरिक्त आय**
- **वाइल्ड फ्लावर हॉल केस के बाद सीएम के नेतृत्व में दूसरी ऐतिहासिक सफलता**

शिमला। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश सरकार को सुप्रीम कोर्ट से एक महत्वपूर्ण कानूनी सफलता मिली है। सर्वोच्च न्यायालय ने कड़छम- वांगतू जलविद्युत परियोजना से रॉयल्टी को लेकर राज्य सरकार के पक्ष में ऐतिहासिक निर्णय सुनाया है। इस फैसले के तहत अब जेएसडब्ल्यू एनर्जी कंपनी को 1045 मेगावाट क्षमता वाली इस परियोजना से राज्य को 12 प्रतिशत के बजाय 18 प्रतिशत रॉयल्टी देनी होगी। सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि कड़छम-वांगतू पर इस निर्णय से प्रदेश सरकार को लगभग 150 रुपए करोड़ की वार्षिक अतिरिक्त आय होगी। इसके अतिरिक्त बारह वर्ष पूर्ण कर चुकी अन्य परियोजनाओं के लिए भी सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला मील का पत्थर बनेगा और राज्य सरकार को उम्मीद है कि इस फैसले से खजाने में प्रति वर्ष 250 करोड़ से अधिक की आय आएगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने इस मुद्दे को व्यक्तिगत प्राथमिकता पर लिया और प्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों पर राज्य के अधिकार सुनिश्चित करने के लिए दृढ़ प्रयास किए। यह फैसला न केवल प्रदेश की आय में वृद्धि करेगा, बल्कि हिमाचल की जनता को उनके संसाधनों का वास्तविक लाभ भी दिलाएगा। सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मई 2024 में आए आदेश को निरस्त करता है, जिसमें कंपनी को केवल 12 प्रतिशत रॉयल्टी देने की अनुमति दी गई थी। वर्ष 1999 में राज्य सरकार और कंपनी के बीच हुए समझौते के अनुसार परियोजना के पहले 12 वर्षों तक 12 प्रतिशत और उसके बाद शेष 28 वर्षों तक 18 प्रतिशत रॉयल्टी निर्धारित की गई थी। सितम्बर 2011 में परियोजना के संचालन के आरंभ होने के बाद कंपनी ने 12 वर्षों तक 12 प्रतिशत रॉयल्टी दी, लेकिन सितम्बर 2023 से अतिरिक्त 6 प्रतिशत रॉयल्टी देने से इनकार कर दिया। विवाद हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट में पहुंचा और कंपनी की जीत हुई। लेकिन राज्य सरकार ने उच्च न्यायालय के निर्णय को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। मुख्यमंत्री सुक्खू के निर्देश पर सरकार ने देश के अग्रणी विधि विशेषज्ञों की मदद से यह मामला सशक्त रूप से रखा और अंततः न्यायालय ने राज्य सरकार के पक्ष में फैसला सुनाया। इस मामले में राज्य सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल, प्राग त्रिपाठी, महाधिवक्ताा अनूप कुमार रतन तथा अतिरिक्त महाधिवक्ता बैभव श्रीवास्तव सुप्रीम कोर्ट में पेश हुए। प्रवक्ता ने यह भी बताया कि मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू के नेतृत्व में प्रदेश सरकार लगातार राज्य हितों की प्रभावी पैरवी कर रही है और यह निर्णय उसी दिशा में एक मजबूत कदम है, जिससे हिमाचल प्रदेश अपने हकों की पुनः प्राप्ति में सफल हो रहा है। इससे पहले भी वर्तमान राज्य सरकार ने मजबूत इच्छा शक्ति का प्रदर्शन करते हुए वर्ष 2002 से कानूनी विवाद में उलझे होटल वाइल्ड फ्लावर हॉल केस का फैसला भी कोर्ट से अपने हक में करवाया, जिसमें हिमाचल प्रदेश सरकार और एक निजी होटल समूह के बीच स्वामित्व व प्रबंधन अधिकारों को लेकर लड़ाई चल रही थी। कोर्ट के निर्णय के बाद यह संपत्ति अब फिर से राज्य सरकार के नियंत्रण में आ गई है, जिससे भविष्य में इस हेरिटेज प्रॉपर्टी से सरकार को राजस्व लाभ मिलेगा।

आकाशीय बिजली गिरने से महिला की मौत

धमतरी (निप्र)। जिले में आज बुधवार को खेत में रोपाई के दौरान आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला की मौत हो गई। जबकि दो महिलाएं घायल हो गईं। जिनका इलाज जारी है। यह घटना रुद्री थाना क्षेत्र के ग्राम सोरम की है। जानकारी के मुताबिक, किसान राजेंद्र साहू के खेत में रोपाई का काम चल रहा था। इस दौरान आकाशीय बिजले की चपेट में आने से लताबाई साहू (35) की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि साथ में काम रहीं प्रमोतिन निर्मलकर (35) और ममता साहू (34) की घायल हो गई। घायलों को फौरन जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जहां उनका इलाज जारी है। घटनास्थल पर पहुंची रुद्री थाना पुलिस ने मृतिका के शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है। पीएम के बाद लाश परिजनों को सौंप दी जाएगी।

पत्रकारिता विश्वविद्यालय की अमानत राशि में कटौती, छात्रों को मिलेगी बड़ी राहत

रायपुर (निप्र)। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर ने छात्र हित में सभी स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की अमानत राशि में बड़ी कटौती की है। अब तक प्रवेश के समय एक बार ली जाने वाली 3000 रुपए की अमानत राशि को कम करके 1000 रुपए कर दिया गया है। इसके साथ ही डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का शिक्षण शुल्क घटाकर मात्र 1000 रुपए किया गया है। इससे छात्रों को बड़ी राहत मिलेगी। विश्वविद्यालय में संचालित पीजीडीसीए और डीसीए पाठ्यक्रमों का शिक्षण शुल्क 4400 रुपए से घटाकर 1000 प्रति सेमेस्टर किया गया है, वहीं पीजीडीजे पाठ्यक्रम की फीस भी 4950 से घटाकर 1000 प्रति सेमेस्टर निर्धारित की गई है। कुलपति एवं संगागायुक्त श्री महादेव कावरे ने कहा कि इस पहल से छात्रों पर आर्थिक भार कम होगा और अधिक विद्यार्थी उच्च शिक्षा की ओर आकर्षित होंगे। इससे विभिन्न सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा। सभी पाठ्यक्रमों की अमानत राशि और डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के शिक्षण शुल्क को कम करने का उद्देश्य यह है कि अधिक से अधिक संख्या में छात्र कम खर्च में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकें। विश्वविद्यालय की विद्यापरिषद की बैठक में शिक्षण शुल्क युक्तियुक्तकरण की अनुशंसा की गई थी। इसका कार्यपरिषद की बैठक में अनुमोदन किया गया है। तत्पश्चात अधिसूचना जारी की गई।

लैंगिक समानता एवं सतत् विकास पर कार्यशाला का आयोजन

जांजगीर-चांपा (निप्र)। कलेक्टर श्री जन्मेजय महोबे के निर्देशन में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के क्रियान्वयन में लैंगिक समानता एवं सतत् विकास थीम पर विकासखण्ड नवागढ़ के सामुदायिक भवन में कार्यशाला आयोजित किया गया। जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती अनिता अग्रवाल ने बताया कि कार्यशाला में परियोजना नवागढ़ एवं उपस्थित जन प्रतिनिधियों द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के अंतर्गत जनसंख्या प्रबंधन, परिवार नियोजन, बाल योजनाओं एवं अधिकारों पर चर्चा की गई। इस दौरान लैंगिक समानता पर चर्चा करते हुए बताया कि लिंग (स्त्री या पुरुष) के भेदभाव के बिना सभी के लिए समान अधिकार, अवसर और व्यवहार सुनिश्चित करना ही सतत विकास का माध्यम है। कार्यक्रम में संबंधित विषयों पर हितग्राहियों ने अपने अनुभव साझा किए एवं उनके प्रश्नों जवाब दिया गया। इसके साथ ही परियोजना पामगढ़ में जनसंख्या प्रबंधन एवं लैंगिक समानता का संदेश देते हुए ग्रामीण स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। कार्यशाला में विभिन्न जनप्रतिनिधि, परियोजना अधिकारी, सूपरवाइजर, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाएं, महिलाएं, स्कूली बालिकाएं उपस्थित थी।

कृषि विभाग के उड़नदस्ता टीम द्वारा जिले के विभिन्न उर्वरक विक्रय केन्द्रों का किया गया औचक निरीक्षण

जांजगीर-चांपा (निप्र)। कलेक्टर जन्मेजय महोबे के निर्देशन में जिले के कृषकों को सुगमता पूर्वक गुणवत्तायुक्त कृषि आदान (बीज उर्वरक कीटनाशक) उपलब्ध कराने के लिए जिला स्तरीय उड़दस्ता दल द्वारा जिले के विभिन्न उर्वरक विक्रय केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया गया। उप संचालक कृषि एल एम भगत ने बताया कि जिला स्तरीय उड़दस्ता दल द्वारा विकासखंड बम्हनीडीह के मेसर्स अग्रवाल कृषि केन्द्र बम्हनीडीह, मेसर्स आनंत ट्रेडर्स बम्हनीडीह, मेसर्स एग्रो सर्विस सेंटर चांपा, मेसर्स सिद्धी कृषि केन्द्र सिवनी, मेसर्स साहू खाद भण्डार सिवनी एवं मेसर्स राठौर खाद भण्डार सिवनी चांपा के उर्वरक विक्रय स्थलों का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मेसर्स अग्रवाल कृषि केन्द्र बम्हनीडीह के विक्रय स्थल में भण्डारित उर्वरक प्राप्ति का स्त्रोत नही होने के कारण यूरिया 188 बोरी, एस.एस.पी. 147 बोरी, डी.ए.पी. 52 बोरी, एन.पी.के. 102 बोरी जप्ती की कार्यवाही की गई। मेसर्स आनंत टेऊडर्स बिना स्त्रोत के उर्वरक प्राप्ति के चलते सिंगल सूपर फास्फेट 45 बोरी जप्ती की कार्यवाही करते हुए संबंधित को सुपुर्द किया गया। मेसर्स एग्रो सर्विस सेंटर चांपा में लाइसेंस में दर्शित नक्शा अन्यत्र स्थल का होने के कारण गोदाम को सील बंद की कार्यवाही की गई। इसी प्रकार मेसर्स सिद्धी कृषि केन्द्र सिवनी, मेसर्स साहू खाद भण्डार सिवनी, मेसर्स राठौर खाद भण्डार सिवनी चांपा विभिन्न प्रकार के अनियमितता के चलते कारण बताओ नोटिस एवं मेसर्स साहू कृषि केन्द्र में बिना स्त्रोत के यूरिया 130 बोरी रखने पर जप्ती करते हुए संबंधित को सुपुर्द किया गया। निरीक्षण के दौरान सहायक संचालक कृषि श्रीमती नीलम आजाद, सहायक मिट्टी परीक्षण अधिकारी मनीष कुमार मरकाम, निरीक्षक शिव कुमार राठौर, निरीक्षक एन.के.दिनकर एवं रवि साहू उपस्थित रहे।

सहायता समूहों के बैंक लिंकेज के लिए बैंकर प्रशिक्षण सह कार्यशाला सम्पन्न

जांजगीर-चांपा (निप्र)। कलेक्टर जन्मेजय महोबे के निर्देशन एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत गोकुल रावटे के मार्गदर्शन में दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत स्व-सहायता समूहों के बैंक क्रेडिट लिंकेज को सशक्त करने, मिशन की मूल अवधारणाओं, ऑनलाइन ऋण आवेदन प्रक्रिया तथा आरबीआई मास्टर सर्कुलर की समग्र जानकारी प्रदान करने हेतु आज जिला पंचायत के सभा कक्ष में बैंकर प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में श्रीमती नियति ध्रुवे एवं एन आर पी गगन बिहारी भुईयाँ, एलडीएम नरोत्तम साहू, जिला मिशन प्रबंधक उपेन्द्र कुमार, समस्त बैंक शाखाओं के शाखा प्रबंधक, विकासखंड प्रभारी, एफएलसीआरपी, बैंक मित्र, बैंक सखी तथा बिहान टीम के सदस्य उपस्थित रहे। प्रशिक्षण में बैंकरों को स्व-सहायता समूहों को बैंक ऋण से जोड़ने की प्रक्रिया, ऑनलाइन आवेदन प्रणाली, ऋण स्वीकृति एवं वितरण, दस्तावेजीकरण तथा आरबीआई के मास्टर सर्कुलर की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में पीपीटी के माध्यम से बताया गया कि बैंकर्स की सक्रिय भागीदारी और सहयोग से महिला स्व-सहायता समूहों की आर्थिक स्थिति में सशक्त सुधार संभव है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। यह प्रशिक्षण कार्यशाला बैंकों एवं स्व-सहायता समूहों के बीच समन्वय को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

स्टेशन मास्टर ने चुना मौत का रास्ता, सुसाइड से हड़कंप

रायपुर (निप्र)। डिप्रेशन में एक ऑन ड्यूटी स्टेशन मास्टर के सुसाइड करने की घटना सामने आई है। ये घटना छत्तीसगढ़ के गुदुम रेलवे स्टेशन की बताई जा रही है. सूचना मिलने के बाद रायपुर रेल मंडल के तमाम अधिकारी गुदुम रवाना हो गए है। जानकारी के मुताबिक स्टेशन मास्टर एसएल ठाकुर 16 जुलाई को रात 8 : 00 बजे से ड्यूटी पर थे. इस बीच रात करीब 12 बजे उन्होंने मालगाड़ी के सामने आकर सुसाइड कर लिया।उनको जानने वाले लोग बताते है कि वे पिछले कुछ दिनों से काफी स्ट्रेस में थे और ज्यादा किसी से बातचीत नहीं करते थे। सूत्रों के मुताबिक ऐसी आशंका है कि वे कर्ज से परेशान थे।

प्लास्टर करते समय मजदूर गिरे, एक की मौत

रायपुर (निप्र)। राजधानी के वार्ड 35 में एक बड़ा हादसा हुआ है। पुजारी स्कूल के सामने एक निर्माणाधीन मकान के बाहरी हिस्से में

प्लास्टर करते समय चैली टूटने से दो मजदूर जमीन पर आ गिरे। ये मजदूर तीसरे माले पर काम कर रहे थे। इनमें एक की मौत हो गई दूसरे की हालत गंभीर है। गिरने के बाद मजदूर जीवित था। मकान मालिक ने तत्काल अस्पताल लेकर गए ।बताया गया है कि मकान मालिक के लापरवाही के चलते यह हादसा हुआ। वह बिना ठेकेदार के चौड़ी से मजदूर लाकर काम करवा रहा था।मकान मालिक और मजदूर को काम का अनुभव नहीं था। कम पैसे में काम करवा लेने के चलते ठेका नहीं दिया था। और अब मामले को दबाने का कोशिश कर रहा। सिविल लाइन पुलिस जांच कर रही है।

मजदूरों के शोषण मामले में केस दर्ज तीन लोगों को पुलिस ने बनाया आरोपी

रायपुर। छत्तीसगढ़ के खरोरा के मशरूम कंपनी में मजदूरों के शोषण मामले में पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। महिला बाल विकास विभाग की शिकायत के बाद पुलिस ने ठेकेदारों के खिलाफ एक्शन लिया है। ठेकेदार विकास तिवारी,विपिन तिवारी और नितेश तिवारी पर मजदूरों के शोषण करने का आरोप है। वहीं मामले में मशरूम कंपनी संचालक को आरोपी नहीं बनाया गया है।

क्या है पूरा मामला – खरोरा में 52 से अधिक लोगों को 6 महीने तक बंधक बनाकर रखने और उनसे मजदूरी कराने का एक गंभीर मामला सामने आया था। इन लोगों को बंधक बनाकर मशरूम उगाने के काम में लगाया गया था। इस मामले की सूचना मिलने के बाद जिला प्रशासन, पुलिस व बच्चों के अधिकारों की रक्षा करने वाले संगठन के लोग मौके पर पहुंचे और वहां से बंधकों की रिहाई करवाई गई थी।

50-52 लोगों को बनाया गया था बंधक – मामले की प्रारंभिक सूचना इस रूप में जिला प्रशासन रायपुर को मिली थी कि खरोरा गांव में एक स्थान पर बच्चों को बंधक बनाकर उन्हें मशरूम उत्पादन संबंधी काम में लगाया गया है। ये लोग करीब 6 महीने से बंधक थे। इस सूचना पर जिला प्रशासन के

अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग में बच्चों से संबंधित कामकाज देखने वाली एक कमेटी और बच्चों के हितों की रक्षा में काम करने वाले एक स्वयंसेवी संगठन को सूचना देकर बुलवाया गया। इस दल ने खरोरा जाकर जांच पड़ताल की। इस दौरान वहां करीब 50-52 लोग मिले। इनमें महिलाएं, पुरुष और कुछ बच्चे भी शामिल थी।

सब कुछ छिपाने की कोशिश – इस मामले से जुड़ी एक खास बात ये है कि इस पूरे घटनाक्रम पर पर्दा डालने की भरपूर कोशिश की जा रही थी। मामले की जानकारी मिलने पर हरिभूमि के छायाकार भी वहां पंहुचे थे। पहले तो उन्हें प्रवेश करने से रोकने की कोशिश की गई। किसी तरह प्रवेश करने के बाद जब तस्वीरे ली गई, तो इसका भी विरोध हुआ। एक अनजान व्यक्ति ने छायाकार पर फोटो डिलीट करने के लिए दवाब भी डाला और समाचार पत्र में समाचार प्रकाशित न होने देने की चेतावनी भी दी।

हालात चिंताजनक – इस मामले में छत्तीसगढ़ बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष वर्णिका शर्मा ने हरिभूमि से चर्चा में कहा था कि, वे खुद वहां गई थीं। बंधक लोगों की स्थिति अच्छी नहीं थी। उन्हें बंधक बनाकर काम लिया जा रहा था। इस तरह काम करवाना किसी भी हाल में उचित नहीं है। वहां बड़े लोगों के साथ बच्चे भी शामिल थे। इनकी संख्या 50 के आसपास होगी। अब आयोग इस पूरे मामले की जांच करवाएगा।

पॉवर कंपनी के वृक्षारोपण महोत्सव में उपभोक्ता भी बन रहे भागीदार

रायपुर (निप्र)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज़ के 50 हजार वृक्षारोपण के लक्ष्य को तेजी से पूरा किया जा रहा है। उत्पादन कंपनी के संयंत्रों, पारेषण कंपनी के सभी उपकेंद्रों और वितरण कंपनी के दफ्तरों में पौध रोपण का कार्य प्रारंभ हो चुका है। इसकी मॉनिटिरिंग मुख्यालय स्तर पर की जा रही है। साथ ही मुख्यालय दफ्तर में अधिकारी-कर्मचारियों के साथ उपभोक्ता और आमजन भी इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज ने प्रदेशभर में फैले बिजली दफ्तरों में 50 हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। इसका शुभारंभ डिस्ट्रीब्यूशन एवं जनरेशन कंपनी के अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव ने किया। जिसके बाद तीनों कंपनी ने कंट्रोल रूम बनाकर इसकी सतत् मॉनिटरिंग के लिए सेल

बनाया है। अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री विनोद कुमार अग्रवाल ने बताया कि पॉवर कंपनी ने पूरे प्रदेश में फैले तीन हजार से अधिक बिजली दफ्तर, विद्युत उपकेंद्र और विद्युत उत्पादन संयंत्रों की रिक्त भूमि में छायादार और फलदार पौधे लगाने का संकल्प लिया है। अगले 10 अगस्त तक इस लक्ष्य को पूरा कर लिया जाएगा। इसके तहत सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में नोडल अधिकारी तैनात किये गए हैं, जो हर बिजली दफ्तर, उपकेंद्र और संयंत्र में पौधरोपण की मानिटिरिंग कर रहे हैं। इसके अलावा अधिकारी-कर्मचारियों को पौधरोपण के लिए प्रेरित करने पॉवर कंपनी के डंगनिया मुख्यालय में भी पौधे वितरित करने की व्यवस्था की गई है, जिसमें बिजली बिल जमा करने एटीपी सेंटर पहुंचे उपभोक्ता भी पौधे ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि अधिकारी-कर्मचारी पौधे लगाकर मोर बिजली कंपनी एप में अपनी फोटो अपलोड कर रहे हैं, अभी तक 300 से अधिक फोटो अपलोड हो चुके हैं। इनमें से चुने हुए अधिकारी-कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाएगा।

कलेक्टर डॉ. कन्नौजे ने सरिया क्षेत्र के मक्का उत्पादक किसानों को प्रोत्साहित किया

सारंगढ़ बिलाईगढ़ (निप्र)। सरिया के समीप गांव तोरा के किसान प्रदीप साहू सहित अन्य किसानों से कलेक्टर डॉ. संजय कन्नौजे ने उसके मक्का के खेत में मुलाकात किया। कलेक्टर ने किसान को कहा कि धान के बदले अन्य फसल लेने पर 11 हजार रूपए और दलहन तिलहन अरहर, उड़द, मूंगफली, तिल, मक्का, कोदो कुटकी फसल लेने पर कृषक उन्नति योजना से 10 हजार प्रति एकड़ की दर से आदान सहायता प्रोत्साहन राशि के लिए गिरदावरी जांच में फसल दर्शाने और फसल पंजीयन कराएं।

इस प्रकार कलेक्टर ने धान के बदले और दलहन तिलहन फसल का उत्पादन करने के लिए किसान को प्रोत्साहित किया। कलेक्टर डॉ. कन्नौजे ने मक्का बिक्री के लिए बाजार, रेट, कृषि, पानी आदि के बारे में किसान से जानकारी लिए। किसान ने बताया कि वे दो एकड़ में मक्का के फसल का उत्पादन कर रहे हैं और उसका बिक्री के लिए रायगढ़ भेजते हैं।

कृषि उप संचालक आशुतोष श्रीवास्तव ने कहा कि पात्र किसान योजना के तहत कृषि विभाग से बीज सहित अन्य कृषि उत्पाद प्राप्त कर सकते हैं और यदि वे बीज की खरीदी किए हैं तो बीज का बिल प्रस्तुत करने पर किसान के खाते में बिल की राशि का भुगतान किया जाएगा। इस दौरान डिप्टी कलेक्टर अनिकेत साहू, तहसीलदार कोमल साहू उपस्थित थे।

महाविद्यालय कोरबा छत्तीसगढ़ में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

कोरबा (निप्र)। विश्व सर्प दिवस के अवसर पर अग्रसेन कन्या महाविद्यालय, कोरबा में नोवा नेचर वेलफेयर सोसाइटी ने पीपीटी के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम आयोजन किया। यह दिवस हर साल लोगों में सांपों के संरक्षण, उनके महत्व और उनके बारे में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

सांप पारिस्थितिकी तंत्र में चूहे और अन्य जीवों की आबादी को नियंत्रित कर कृषि और प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। इस जागरूकता कार्यक्रम में महाविद्यालय के बीए, बीकॉम, बीएससी जूलॉजी और बी.एड. से 200 से अधिक छात्राओं ने भाग लिया, कार्यक्रम के दौरान छात्राओं में सांपों को लेकर काफी उत्सुकता देखने को मिली, उन्होंने सांपों से जुड़े कई प्रश्न पूछे, जिनके रोचक और वैज्ञानिक उत्तरों ने सभी को रोमांचित कर दिया। इस अवसर पर जितेंद्र सारथी ने विषैले और गैर विषैले सांपों की पहचान, सर्पदंश की स्थिति में प्राथमिक उपचार और सर्पदंश से बचाव के उपायों की जानकारी दी। वहीं नोवा नेचर से जीव विज्ञानी सिद्धांत जैन ने सांपों की शरीर रचना, पारिस्थितिकी तंत्र में उनके महत्व, सर्पविष के दुष्प्रभाव और उनके उपचार के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में छात्राओं ने सांपों के महत्व को समझा और उनके संरक्षण की आवश्यकता को महसूस किया।

कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं में प्रकृति और वन्यजीवों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाना था ताकि समाज में सांपों जैसे महत्वपूर्ण जीवों के संरक्षण में भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इस कार्यक्रम में कोरबा एसडीओ श्री सूर्यकांत सोनी, ,नोवा नेचर वेलफेयर सोसाइटी से जितेंद्र सारथी, सिद्धांत जैन ,भूपेंद्र जगत , अग्रसेन कॉलेज के अध्यक्ष सुनील जैन,महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मनोज कुमार झा, एनईपी नोडल अधिकारी मिस अंजना चौधरी तथा समस्त सहायक प्राध्यापकगण उपस्थित रहे, जिन्होंने कार्यक्रम की सराहना करते हुए छात्राओं को प्रकृति और वन्यजीव संरक्षण में सहभागी बनने के लिए प्रेरित किया।

मनेंद्रगढ़ क्षेत्र को मिली 25.99 करोड़ की विकास योजनाओं की सौगात

एमसीबी (निप्र)। शासन की प्राथमिकता में शामिल नगरीय विकास को लेकर मनेंद्रगढ़ क्षेत्र के लिए एक और खुशखबरी सामने आई है। मुख्यमंत्री नगर उत्थान योजना, अधोसंरचना मद एवं सेंट्रल लाइटिंग मद अंतर्गत राज्य बजट से मनेंद्रगढ़ विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों के लिए कुल 25 करोड़ 99 लाख 82 हजार रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई है। स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने चिरमिरी नगर क्षेत्र के लिए 25 करोड़ 99 लाख रुपए से अधिक की विकास परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान करने हेतु मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय तथा उपमुख्यमंत्री अरुण साव का आभार व्यक्त किया है।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा है कि इन योजनाओं की स्वीकृति से गौरव पथ सड़क, बाईपास सड़क निर्माण, प्रकाश व्यवस्था एवं सेंट्रल लाइब्रेरी जैसे महत्वपूर्ण कार्य अब धरातल पर उतरेंगे, जिससे चिरमिरी के समग्र विकास के संकल्प को नई गति प्राप्त होगी। यह स्वीकृति नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग द्वारा प्रदान की गई है, जिसके

अंतर्गत चिरमिरी नगर पालिका क्षेत्र के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य स्वीकृत किए गए हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, स्वीकृत कार्यों में गोदरीपारा से डोमनहिल तक गौरवपथ निर्माण कार्य हेतु 2 करोड़ रुपये, वार्ड क्रमांक 8 बड़ा ग्राउंड से सिद्धबाबा मंदिर तक सीसी रोड एवं नाली निर्माण कार्य हेतु 2 करोड़ 40 लाख रुपये, प्रकाश व्यवस्था हेतु 20 लाख रुपये की राशि मंजूर की गई है।

इसके साथ ही सांस्कृतिक मंच ग्राम पंचायत से आत्मानंद स्कूल मुख्य मार्ग, चित्ताझोर पोड़ी तक रिटेनिंग वॉल एवं फुटपाथ निर्माण हेतु 2 करोड़ रुपये, सोनामनी नाका से दीनदयाल चौक पोड़ी तक बायपास कोरिया होते हुए निर्माण हेतु 8 करोड़ 75 लाख 47 हजार रुपये, अन्य अतिरिक्त कार्यों हेतु 6 करोड़ 22 लाख 86 हजार रुपये, तथा सेंट्रल लाइटिंग सह री-डिंग जोन (250 सीटर्स) हेतु 4 करोड़ 41 लाख 49 हजार रुपये की स्वीकृति दी गई है। इस प्रकार कुल मिलाकर चिरमिरी नगर पालिका क्षेत्र को 25.99 करोड़ रुपये की विकास योजनाओं की सौगात प्राप्त हुई है, जिससे क्षेत्र में आधारभूत संरचनाओं को मजबूती मिलेगी एवं आमजनो को सुविधाएं प्राप्त होंगी।

स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के सतत प्रयासों से यह बड़ी स्वीकृति मनेंद्रगढ़ विधानसभा क्षेत्र को प्राप्त हुई है। स्थानीय नागरिकों ने इसके लिए शासन एवं जनप्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त किया है।

आंगनबाड़ी केन्द्रों में विकसित की गई पोषण वाटिका

राजनांदगांव (निप्र)। बच्चों को पौष्टिक आहार देने के लिए आंगनबाड़ी केन्द्रों में पोषण वाटिका का निर्माण किया गया है। जिससे बच्चों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पौष्टिक साग-सब्जी एवं फल मिल रही है। राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम भोथीपार खुर्द के आंगनबाड़ी केन्द्र में खुबसूरत पोषण वाटिका किचन गार्डन की तर्ज पर विकसित की गई है। जहां खट्टा भाजी, भिण्डी, केला, भाटा, कांदा भाजी, जरी, अरबी, चेच भाजी, लेमन ग्रास, अमरूद, शहतूत, सीताफल, नारियल लगाए गए हैं। वहीं फलदार पौधों के साथ जिनिया, हरसिंगार, गुड़हल, गुलाब, मोंगरा जैसे मोहक फूल भी लगाए गए हैं।

ग्राम भोथीपार खुर्द के किचन गार्डन में अधिक से अधिक हरी पत्तेदार और आयरन से भरपूर सब्जी उत्पादन किया जा रहा है। ग्रामवासियों को बच्चों को हरी साग-सब्जी एवं पौष्टिक आहार के लाभ के लिए जागरूक भी किया जा रहा है। आंगनबाड़ी में उत्पादित साग- सब्जियों का उपयोग बच्चों का भोजन बनाने के लिए किया जा रहा है। विटामिन प्रोटीन, आयरन, खनिज एवं पोषक तत्वों से भरपूर सब्जियां सेहत के लिए फायदेमंद है। आंगनबाड़ी केन्द्र सिंघोला की पोषण वाटिका में पपीता, केला, कटहल, अमरूद, भाजी में मुनगा, कांदा भाजी लगाया गया था। बच्चों को दाल, चावल के साथ केले की सब्जी परोसी गई थी। नाश्ते में पोहा एवं रेडी टू ईट दिया गया। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती रेवती साहू ने बताया कि बच्चे प्रतिदिन आते हैं और सक्रिय रहते है।

विद्यालयों में 6 से 12 अगस्त तक मनाया जाएगा 'संस्कृत सप्ताह'

अम्बिकापुर (निप्र) । राज्य शासन के निर्देशानुसार जिले के समस्त हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी विद्यालयों में इस वर्ष भी श्रावण पूर्णिमा (रक्षाबंधन) के तीन दिन पूर्व एवं तीन दिन बाद अर्थात 06 अगस्त से 12 अगस्त 2025 तक 卐संस्कृत सप्ताह卐 का आयोजन किया जाएगा। जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. दिनेश कुमार झा ने जानकारी देते हुए बताया कि संस्कृत सप्ताह के आयोजन संबंधी निर्देश सचिव, छत्तीसगढ़ संस्कृत विद्यामण्डलम्, रायपुर द्वारा जारी किए गए हैं। कार्यक्रम की रूपरेखा के अनुसार इस अवधि में विद्यालयों में निबंध लेखन, वाद-विवाद, संस्कृत नाटक, कहानी लेखन जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। साथ ही संस्कृत आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, विद्वानों की संगोष्ठी, साहित्य प्रदर्शनी, भाषण, परिचर्चा एवं संस्कृत गीत आदि कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत विषय में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों और शिक्षकों को सम्मानित भी किया जाएगा। जिला शिक्षा अधिकारी ने सभी विद्यालय प्रमुखों को निर्देशित किया है कि निर्धारित तिथि अनुसार कार्यक्रम का आयोजन सुनिश्चित करें एवं संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

कोण्डागांव की रंजीता ने एशियन कैडेट जूडो चैंपियनशिप में जीता

रायपुर (निप्र)। कोण्डागांव जिले की बालिका रंजीता कोरेटी ने ताइपे (ताईवान) में आयोजित एशियन कैडेट जूडो चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत और छत्तीसगढ़ का नाम रोशन किया है। छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद बालगृह बालिका कोण्डागांव की रंजीता ने कई देशों के खिलाड़ियों को पराजित करते हुए यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस गौरवशाली उपलब्धि पर रंजीता को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि यह न केवल कोण्डागांव जिले बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ राज्य के लिए अत्यंत गर्व का क्षण है। उन्होंने कहा कि रंजीता जैसी बेटियाँ राज्य की उम्मीद और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा हैं, जो यह सिद्ध कर रही हैं कि छत्तीसगढ़ की बेटियाँ अब वैश्विक मंच पर अपनी अलग पहचान बना रही हैं।

रंजीता ने वर्ष 2021 में चंडीगढ़ में आयोजित ओपन नेशनल जूडो टूर्नामेंट में 40 किलोग्राम वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए अपनी खेल यात्रा की प्रभावशाली शुरुआत की। इसके पश्चात् वर्ष 2022 में भोपाल में आयोजित ओपन नेशनल जूडो प्रतियोगिता में रंजीता ने ब्रॉन्ज मेडल जीता। वर्ष 2024 में केरल में आयोजित खेलो इंडिया नेशनल जूडो टूर्नामेंट में 52 किलोग्राम वर्ग में सिल्वर मेडल प्राप्त किया। इसी वर्ष महाराष्ट्र के नासिक में आयोजित खेलो इंडिया रीजनल जूडो प्रतियोगिता में उसने गोल्ड मेडल हासिल किया। इसके साथ ही त्रिशूर (केरल) में 52 किलोग्राम वर्ग में पुनः स्वर्ण पदक प्राप्त कर अपनी श्रेष्ठता को दोहराया। पुणे में आयोजित राष्ट्रीय ओपन नेशनल जूडो चैंपियनशिप में रंजीता ने असम, तेलंगाना, महाराष्ट्र और दिल्ली जैसे प्रमुख राज्यों की खिलाड़ियों को पराजित करते हुए गोल्ड मेडल अपने नाम किया। खेलो इंडिया यूथ गेम्स, पटना (बिहार) में भी उसने जूडो चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक प्राप्त कर जिले और राज्य को गौरवान्वित किया।

राष्ट्रीय स्तर पर निरंतर उपलब्धियों के पश्चात रंजीता ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। अप्रैल 2025 में जॉर्जिया में आयोजित कैडेट यूरोपियन कप 2025 में रंजीता ने 52 किलोग्राम वर्ग में 5वाँ स्थान प्राप्त किया। इसके बाद ताशकंद (उज़्बेकिस्तान) में वर्ष 2025 में आयोजित एशियन कैडेट चैंपियनशिप में भी उसने अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन जारी रखा। अंततः 12 जुलाई से 15 जुलाई 2025 तक ताइपे (ताईवान) में आयोजित एशियन कैडेट जूडो चैंपियनशिप में रंजीता ने स्वर्ण पदक जीतकर भारत के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मेडल हासिल किया।

रंजीता की इस प्रेरणादायक यात्रा को देखते हुए जनवरी 2023 में उसका चयन भोपाल स्थित स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया में हुआ, जहाँ वह वर्तमान में शिक्षा के साथ-साथ जूडो का उच्चस्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि यह सफलता यह दर्शाती है कि यदि बेटियों को अवसर, संसाधन और सही मार्गदर्शन मिले, तो वे किसी भी

प्रज्ञानंद ने कार्लसन को हराया

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानंद ने लास वेगास में फ्रीस्टाइल शतरंज ग्रैंड स्लैम टूर में दुनिया के नंबर 1 मैग्नस कार्लसन पर शानदार जीत दर्ज की। 19 वर्षीय प्रज्ञानंद ने पांच बार के विश्व चैंपियन को मात्र 39 चालों में मात दी।

नॉर्वे के ग्रैंडमास्टर कार्लसन, जो हाल ही में भारत के मौजूदा विश्व चैंपियन डी गुकेश से लगातार हार चुके हैं, उन्हें एक और हार का सामना करना पड़ा। कार्लसन को 19 साल के आर प्रज्ञानंद ने टूर्नामेंट के ग्रुप स्टेज के चौथे राउंड में हरा दिया। इस टूर्नामेंट में हर खिलाड़ी को 10 मिनट का समय और हर चाल पर 10 सेकंड अतिरिक्त मिलते हैं। प्रज्ञानंद अब आठ खिलाड़ियों वाले ग्रुप व्हाइट में 4.5 अंकों के साथ संयुक्त बढ़त बनाए हुए हैं। प्रज्ञानंद ने टूर्नामेंट की शुरुआत नोदिरबेक अब्दुसत्तोरोव के खिलाफ काले मोहरों से ड्रॉ खेलकर की। इसके बाद उन्होंने असाउबायेवा को हराया। तीसरे राउंड में उन्होंने काले मोहरों से खेलते हुए कीमर को हराया और फिर चौथे राउंड में कार्लसन को चौंका दिया। हालांकि, कार्लसन पेरिस और कार्लज़ूए में फ्रीस्टाइल शतरंज ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट जीत चुके हैं। वह पूरे टूर में शीर्ष पर थे, लेकिन उन्हें अब लास वेगास में खिताबी

फ्रीस्टाइल शतरंज ग्रैंड स्लैम में संयुक्त बढ़त बनाई

दौड़ से बाहर होना पड़ा है। राउंड-रॉबिन चरण में उतार-चढ़ाव भरे दिन के बाद कार्लसन अपने ग्रुप में संयुक्त रूप से चौथे स्थान पर रहे और प्लेऑफ में लेवोन अरोनियन से हारकर बाहर हो गए।

अब वह निचले ब्रैकेट में पहुंच गए हैं, जहां तीसरे से ऊपर नहीं आ सकते। कार्लसन ने दो जीत के साथ शुरुआत की, लेकिन फिर उनकी परफॉर्मेंस गिर गई। प्रज्ञानंद और वेस्ली सो से हार और दो ड्रॉ के बाद, उन्हें अंतिम दौर में जीत की जरूरत थी, ताकि टाईब्रेकर हो सके। उन्होंने बिबिसारा अस्सौबायेवा को हराया, लेकिन फिर दोनों प्लेऑफ गेम अरोनियन से हार गए। इसके चलते वह टॉप ब्रैकेट में नहीं जा सके। इसी ग्रुप में, प्रज्ञानंदा, नोदिरबेक अब्दुसत्तोरोव और जावोखिर सिंडारोव ने 4.5/7 अंक हासिल करके तालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। अरोनियन ने 4 अंक हासिल किए और कार्लसन को पछाड़ दिया। ब्लैक ग्रुप में हिकारू नाकामुरा ने शानदार प्रदर्शन किया और 7 में से 6 अंक लेकर टॉप पर रहे।

हांस नीमन, जिन्होंने शुरुआत में 5 में से 4.5 अंक हासिल किए थे, उन्होंने भी अगले दौर में जगह बना ली। उनके साथ फैबियानो कारूआना और अर्जुन एरिगैसी भी आगे बढ़े। कारूआना ने अपने शुरुआती छह मुकाबले ड्रॉ खेले थे, लेकिन आखिरी राउंड में नीमन को हराकर जरूरी जीत दर्ज की। लास वेगास के विंन होटल में फ्रीस्टाइल शतरंज की यूएस में पहली बार हो रही शुरुआत के साथ अब 16 खिलाड़ी नॉकआउट स्टेज में पहुंच चुके हैं। इनमें से आधे खिलाड़ी, जैसे कार्लसन और कीमर, निचले ब्रैकेट से आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे, जबकि बाकी खिलाड़ी सीधे खिताब की दौड़ में बने रहेंगे। गुरुवार को क्वार्टरफाइनल मुकाबले खेले जाएंगे।

इनमें हारने वाले खिलाड़ी ऊपरी ब्रैकेट से निकलकर निचले ब्रैकेट में चले जाएंगे, जबकि जीतने वाले खिलाड़ी 2 लाख अमेरिकी डॉलर की इनामी राशि के लिए मुकाबला जारी रखेंगे।

मैंने यह ऋषभ पंत से सीखा है, दीप्ति शर्मा ने एक हाथ से लगाए छक्के का श्रेय पंत को दिया

साउथेम्प्टन (यूके), एजेंसी। भारतीय ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा ने इंग्लैंड महिला टीम के खिलाफ पहले वनडे में अपनी शानदार पारी पर बात की, जहां वह जेमिमा के साथ साझेदारी बनाने की कोशिश कर रही थीं और ऐसे ही मौके का इंतजार कर रही थीं। दीप्ति शर्मा के शानदार अर्धशतक और ऑलराउंडर स्नेह राणा के शानदार स्पेल ने गुरुवार को साउथेम्प्टन में तीन मैचों की सीरीज के पहले वनडे में इंग्लैंड पर चार विकेट से जीत हासिल करने में भारत की अहम भूमिका निभाई। भारतीय महिला टीम ने अब अपने पिछले 12 वनडे में से 11 जीते हैं, और यह सिलसिला दिसंबर में वेस्टइंडीज के खिलाफ घरेलू सीरीज से शुरू हुआ था।

दीप्ति शर्मा ने मैच के बाद कहा, मैं ऐसे ही मौके का इंतजार कर रही थी। मैं जेमिमा के साथ साझेदारी बनाना चाहती थी, लगातार 5-6 रन प्रति ओवर बनाना चाहती थी। (उनके स्वीप शॉट्स पर) मैंने शुरुआती दिनों में इस पर काफी काम किया है, और इस तरह की पिच पर इससे मदद मिलती है। (एक हाथ से छक्का लगाने पर) मैं ये शॉट अभ्यास में खेलती हूं, मैंने ये ऋषभ पंत से सीखा है।

विराट कोहली ही जिम्मेदार!

कर्नाटक सरकार ने बेंगलुरु भगदड़ केस में सौंपी रिपोर्ट, गंभीर लापरवाहियों का जिक्र

नई दिल्ली, एजेंसी। बेंगलुरु में आईपीएल टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की जीत के जश्न के दौरान मची भगदड़ को लेकर कर्नाटक सरकार ने हाईकोर्ट में विस्तृत रिपोर्ट सौंपी है. इस रिपोर्ट में कई गंभीर लापरवाहियों का जिक्र किया गया है और खास बात यह है कि इस पूरी घटना में टीम के दिग्गज खिलाड़ी विराट कोहली का नाम भी सामने आया है. बेंगलुरु में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की जीत के जश्न के दौरान मची भगदड़ को लेकर कर्नाटक सरकार ने हाईकोर्ट में अपनी रिपोर्ट सौंपी है. बेंगलरु में 4 जून को विक्ट्री परेड से पहले यह भगदड़ हुई थी. जो रिपोर्ट सरकार ने हाइकोर्ट में सौंपी है, उसमें कई तरह की गंभीर लापरवाहियों का जिक्र है. गौर करने वाली बात यह है कि इस पूरी घटना में विराट कोहली का नाम भी सामने आया है. रिपार्ट में कहा गया है कि विराट कोहली ने वीडियो में फैन्स से फ्री में विक्ट्री परेड में आने की अपील की.

संन्यास लेने जा रहे आंद्रे रसेल!

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 सीरीज में घरेलू मैदान पर खेलेंगे आखिरी मैच

नई दिल्ली, एजेंसी। वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर आंद्रे रसेल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करने वाले हैं। रसेल को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 5 मैचों की टी20 सीरीज में चुना गया है। वह इस सीरीज में अपने घरेलू मैदान पर आखिरी मैच खेलेंगे। रिपोर्ट के अनुसार आंद्रे रसेल अपना फेयरवेल मैच घरेलू मैदान जमैका के सबीना पार्क में खेलेंगे। सीरीज के शुरुआती दो मैच यहीं 20 और 22 जुलाई को खेले जाएंगे। रसेल 2019 से इंटरनेशनल क्रिकेट में केवल टी20 खेले हैं और वर्तमान में 84 मैच खेल चुके हैं। रसेल ने अगले टी20 विश्व कप से सात महीने पहले संन्यास का ऐलान किया है। फरवरी 2026 में भारत और श्रीलंका में टी20 विश्व कप होगा। निकोलस पूरन के बाद रसेल दो महीने से भी कम समय में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले वेस्टइंडीज के दूसरे हाई-प्रोफाइल खिलाड़ी होंगे।

जापान ओपन बेडमिंटनः

सिंधू के बाद लक्ष्य सेन और सात्विक-चिराग भी हारे, जापान ओपन से हुए बाहर

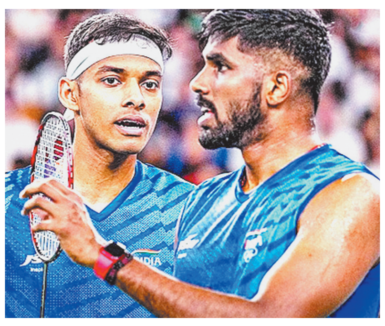

टोक्यो, एजेंसी। 23 वर्षीय लक्ष्य ने पहले मैच में चीन के वांग झेंग जिंग पर 21-11, 21-18 से जीत दर्ज की थी, लेकिन वह अपनी इस लय को बरकरार नहीं रख सके। भारतीय खिलाड़ियों का जापान ओपन में निराशाजनक प्रदर्शन गुरुवार को भी जारी रहा। लक्ष्य सेन और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की पुरुष युगल जोड़ी दूसरे दौर में हारकर इस सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट से बाहर हो गई। विश्व के 18वें नंबर के खिलाड़ी लक्ष्य को पुरुष एकल में जापान के कोडाई नाराओका के हाथों 19-21, 11-21 से हार का सामना करना पड़ा। यह मुकाबला करीब एक घंटे तक चला। इस 23 वर्षीय खिलाड़ी ने पहले मैच में चीन के वांग झेंग जिंग पर 21-11, 21-18 से जीत दर्ज की थी, लेकिन वह अपनी इस लय को बरकरार नहीं रख सके। इससे पहले पुरुष युगल में सात्विक और चिराग की भारतीय जोड़ी को चीन के लियांग वेई केंग और वांग चांग की पांचवीं वरीयता प्राप्त जोड़ी से 44 मिनट तक चले मुकाबले में 22-24, 14-21 से हार का सामना करना पड़ा। इस जीत से पेरिस ओलंपिक रजत पदक विजेता वेई केंग और वांग चांग ने भारतीय जोड़ी के खिलाफ अपना रिकॉर्ड 7-2 कर लिया। सात्विक और चिराग ने धीमी शुरुआत की लेकिन जल्द ही लय हासिल करके पहले गेम में 18-14 से बढ़त बना ली।

भारतीय जोड़ी हालांकि अपनी इस लय को बरकरार नहीं रख पाई और चीन की जोड़ी ने वापसी करते हुए पहला गेम अपने नाम कर दिया। दूसरे गेम में भारतीय टीम आक्रमण और रक्षा दोनों में लड़खड़ा गई और उसे वेई केंग और वांग चांग के खिलाफ लगातार चौथी हार का सामना करना पड़ा।

ला लीगा के शुरुआती मैच से बाहर

बेलिंगहैम ने करवाई कंधे की सर्जरी

नई दिल्ली, एजेंसी । रियल मैड्रिड के मिडफील्डर जूड बेलिंगहैम ने अपने कंधे की सफल सर्जरी करवाई है। ऐसे में अब बेलिंगहैम को कम से कम छह हफ्तों के लिए मैदान से दूर रहना होगा। वह ला लीगा के शुरुआती मुकाबले नहीं खेल सकेंगे। बेलिंगहैम को नवंबर 2023 से कंधे में तकलीफ थी। ला लीगा मैच के दौरान उनका कंधा खिसक गया था। तभी से बेलिंगहैम अपनी जर्सी के नीचे सपोर्ट ब्रेस पहनकर खेलते रहे। बेलिंगहैम ने क्लब वर्ल्ड कप के बाद ही सर्जरी कराने का फैसला किया था, ताकि रियल मैड्रिड के लिए उस टूर्नामेंट में खेल सकें। हालांकि, उनकी टीम सेमीफाइनल में पेरिस सेंट-जर्मेन से हारकर बाहर हो गई थी।

रियल मैड्रिड ने अपने बयान में कहा, बार-बार होने वाले खिसकाव की समस्या के इलाज के लिए जूड बेलिंगहैम के कंधे की सर्जरी हुई। यह ऑपरेशन डॉक्टर मैनुएल लेयेस और एंड्रयू वालेस ने रियल मैड्रिड मेडिकल सर्विसेज की निगरानी में किया।

ऋषभ पंत को तकनीकी खामियों को दूर करने की जरूरत है: जैक रसेल

लंदन, एजेंसी। लंदन के एक पॉश इलाके में पेंटिंग बनाने में व्यस्त इंग्लैंड के पूर्व विकेटकीपर-बल्लेबाज जैक रसेल का मानना है कि भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत अपने खेल से दर्शकों का मनोरंजन करते हैं लेकिन उन्हें विकेटकीपिंग की कुछ तकनीकी खामियों को दूर करने की जरूरत है। रसेल को क्रिकेट जगत की खबरों पर नजर रखना पसंद है। अगर वह मैदान पर नहीं होते तो वह लाइव स्कोर देखते हैं। वह रोज पेंटिंग करते है, फिर भी उन्होंने भारत और इंग्लैंड के बीच तीसरे टेस्ट के लिए लॉर्ड्स जाने का समय निकाला।

खुद एक विकेटकीपर होने के नाते उनके पास जैमी स्मिथ और पंत जैसे खिलाड़ियों के लिए एक सलाह भी है। उन्होंने कहा, 'कई अच्छे विकेटकीपर रहे हैं। मैं कहूंगा कि मेरे समय में एलन नॉट और बॉब टेलर मेरे दो नायक थे। रसेल ने कहा, 'लेकिन मुझे सैयद किरमानी को देखना पसंद था। जब मैं छोटा था, तब मैं उन्हें बहुत देखता था। मुझे लगता था कि वह एक अच्छे विकेटकीपर हैं।

मौजूदा विकेटकीपरों के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, 'पंत की बात करूं तो आपको उन्हें खेलते हुए देखना पंसद आएगा ही। वह चाहे बल्लेबाजी कर रहे हों, या विकेटकीपिंग, आपको उन्हें देखना अच्छा लगेगा। इसलिए वह एक मनोरंजक खिलाड़ी हैं। उन्होंने कहा, 'और यह देखकर बहुत अच्छा लग रहा है कि वह कार दुर्घटना के बाद भी क्रिकेट भी खेल रहे हैं। मुझे लगता है कि युवा खिलाड़ी जैमी स्मिथ इंग्लैंड के सर्वकालिक महानतम बल्लेबाज और विकेटकीपर बनेंगे क्योंकि उनमें बहुत हुनर है। आप उसे गिलक्रिस्ट की श्रेणी में रख सकते हैं। पंत की विकेटकीपिंग में किसी कमी के बारे में पूछने पर रसेल ने कहा, 'वह गलतियां करेगा क्योंकि तकनीकी रूप से कुछ चीजें हैं जिन्हें दूर करने की जरूरत है। लेकिन वह शानदार प्रदर्शन करेगा और गलतियां भी करेगा। ज्यादातर विकेटकीपर गलतियां करते हैं। इंग्लैंड में विकेट लेना काफी मुश्किल है।

इसलिए वह यहां परफेक्ट नहीं होगा, लेकिन उसकी बल्लेबाजी बहुत मजबूत है। रसेल ने कहा, 'पर उसे विकेटकीपिंग में कुछ काम करने की जरूरत है, स्टंप तक खड़े होने में बस थोड़े-बहुत बदलाव करने होंगे। अगर वह मुझसे पूछेगा तो मैं उसे बता दूंगा। लेकिन ये छोटी चीजें हैं। यह 61 वर्षीय काउंटी क्रिकेट से संन्यास लेने के 20 साल से भी ज्यादा समय बाद अपनी चित्रकला के जरिए खेल से जुड़े हुए हैं। राइडर स्ट्रीट स्थित गैलरी की यात्रा किसी भी क्रिकेट प्रेमी को पुरानी यादों की सैर करा देगी। वह सोशल मीडिया पर अपनी पेंटिंग्स प्रोमोट करते हैं जिसमें उनके ज्यादातर फोलोअर्स भारतीय हैं। रसेल ने हाल में इंग्लैंड के लिए खेलने वाले पहले भारतीय रणजीतसिंहजी का चित्र बनाया।

रसेल ने कहा, 'हर साल मैं इतिहास के पन्नों से किसी का चित्र बनाने की कोशिश करता हूं। पिछले साल मैंने इंग्लैंड के पूर्व कप्तान डगलस जार्डिन का चित्र बनाया था। इस साल मैंने रणजीतसिंहजी को चुना। अगर आप उनके बारे में पढ़े और उनके करियर पर नजर डालें तो वे एक 'स्ट्रोक प्लेयर थे। यह प्रदर्शनी में मेरे पसंदीदा चित्रों में से एक है। रसेल ने कहा, 'भारत और इंग्लैंड के बीच मौजूदा मैच को देखते हुए मुझे लगा कि यह सही समय है।

बांग्लादेशी स्पिनर महेदी हसन की शानदार गेंदबाजी

● हरभजन सिंह का 13 साल पुराना रिकॉर्ड टूटा

ढाका, एजेंसी। स्पिनर महेदी हसन ने बांग्लादेश और श्रीलंका के बीच निर्णायक टी20आई मैच में 4-1-11-4 के औसत से शुरुआत की जिससे टाइगर्स ने आर प्रेमदासा स्टेडियम में मैच और सीरीज दोनों जीतते हुए इतिहास रच दिया। एक छोर से गेंदबाजी की शुरुआत करते हुए महेदी ने हरभजन सिंह का 13 साल पुराना रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। महेदी ने पावरप्ले में दो ओवर फेंकते हुए किफायती चार विकेट लिए जिससे उन्होंने श्रीलंका के शीर्ष 5 बल्लेबाजों में से चार को आउट कर दिया, जिससे श्रीलंकाई टीम कोलंबो में निर्णायक मैच में सिर्फ 132/7 पर सिमट गई।

महेदी ने अपने शानदार स्पेल के जरिए आर प्रेमदासा स्टेडियम में टी20आई मैच में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले मेहमान गेंदबाज होने का हरभजन का रिकॉर्ड तोड़ दिया। हरभजन ने 2012 के टी20 विश्व कप में इंग्लैंड के खिलाफ जबरदस्त प्रदर्शन किया था और केवल 12 रन देकर 4 विकेट लिए थे जबकि महेदी ने 4 विकेट के लिए 11 रन दिए।

किसी गेंदबाज के रूप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का रिकॉर्ड इस भारतीय स्पिनर के नाम था, लेकिन 2021 की सीरीज में वानिंदु हसरंगा ने 4-9 के उल्लेखनीय आंकड़े के साथ भारतीय के रिकॉर्ड को तहस-नहस कर दिया।

टिम रॉबिंसन की करियर की सबसे बड़ी पारी

न्यूजीलैंड ने साउथ अफ्रीका को 21 रन से हराया

नई दिल्ली, एजेंसी। जिम्बाब्वे में चल रही टी20 ट्राई-सीरीज 2025 के दूसरे मुकाबले में न्यूजीलैंड ने शानदार प्रदर्शन करते हुए साउथ अफ्रीका को 21 रन से हराया. इस जीत के नायक रहे युवा बल्लेबाज टिम रॉबिंसन, जिन्होंने संकट की घड़ी में 75 रन की नाबाद और मैच जिताऊ पारी खेली. एक समय न्यूजीलैंड की टीम महज 70 रन पर अपने 5 विकेट गंवा चुकी थी, लेकिन रॉबिंसन की संयमित और आक्रामक बल्लेबाजी ने मैच की तस्वीर ही बदल दी.

न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 5 विकेट के नुकसान पर 173 रन बनाए. शुरुआत बेहद खराब रही, जब सलामी बल्लेबाज टिम सीफर्ट (22) और डेवोन कॉनवे (9) जल्दी आउट हो गए. इसके बाद डेरिल मिचेल (5), जेम्स नीशम (0) और मिचेल हे (2) भी कुछ खास नहीं कर सके.

टीम संकट में थी, लेकिन टिम रॉबिंसन ने एक छोर संभाले रखा और 57 गेंदों में 6 चौके और 3 छक्कों की मदद से नाबाद 75 रन बनाए. यह उनके अंतराष्ट्रीय टी20 करियर का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है. उनकी इस पारी में न सिर्फ क्लास थी बल्कि ज़रूरत के अनुसार आक्रामकता भी थी.

बेवन जैकब्स के साथ मजबूत साझेदारी

रॉबिंसन को अंत तक बेवन जैकब्स का साथ मिला, जिन्होंने 44 रन की नाबाद पारी खेली. दोनों ने मिलकर छठे विकेट के लिए 103 रन की अविजित साझेदारी की, जिसने न्यूजीलैंड को सम्मानजनक नहीं बल्कि मैच जिताऊ स्कोर तक पहुंचा दिया.

हॉकी: प्रो लीग का प्रदर्शन एशियाई खेलों और विश्व कप से पहले अच्छा सबक

नई दिल्ली, एजेंसी। श्रीजेश ने बुधवार की रात को एक कार्यक्रम के दौरान कहा, मुझे लगता है कि खिलाड़ियों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया, हमने कई मौके बनाए। हमने कड़ी चुनौती दी लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है जब परिणाम आपके पक्ष में नहीं आते हैं।

पूर्व भारतीय कप्तान और गोलकीपर पी आर श्रीजेश का मानना है कि हाल ही में समाप्त हुई एफआईएच प्रो लीग अगले साल होने वाले एशियाई खेलों और विश्व कप से पहले पुरुष राष्ट्रीय हॉकी टीम के लिए अच्छा सबक है। भारत को प्रो लीग के यूरोपीय चरण में संघर्ष करना पड़ा और वह नौ टीमों में से आठवें स्थान पर रहा। टोक्यो और पेरिस ओलंपिक में भारत की कांस्य पदक विजेता टीमों का हिस्सा रहे श्रीजेश का मानना है कि खिलाड़ियों ने बहुत खराब प्रदर्शन नहीं किया, लेकिन दुर्भाग्य से परिणाम टीम के पक्ष में नहीं रहे। श्रीजेश ने बुधवार की रात को एक कार्यक्रम के दौरान कहा, मुझे लगता है कि खिलाड़ियों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया, हमने कई मौके बनाए। हमने कड़ी चुनौती दी लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है जब परिणाम आपके पक्ष में नहीं आते हैं। हमारी तैयारी अच्छी थी, लेकिन दुर्भाग्य से परिणाम हमारे लिए अच्छे नहीं रहे लेकिन कोचों के पास एशिया कप के लिए टीम तैयार करने के लिए पर्याप्त समय है और

निश्चित रूप से अगले साल एशियाई खेल और विश्व कप भी है। श्रीजेश ने कहा, मुझे लगता है कि इस प्रो लीग ने हमें विश्व कप और एशियाई खेलों की तैयारी के लिए कड़ा सबक सिखाया है।

एशियाई खेलों का आयोजन 19 सितंबर से चार अक्तूबर तक जापान के आइची-नागोया में किया जाएगा। विश्व कप 15 से 30 अगस्त तक नीदरलैंड और बेल्जियम में आयोजित किया जाएगा। पेरिस ओलंपिक खेलों के बाद संन्यास लेने के बाद श्रीजेश अब भारतीय पुरुष जूनियर हॉकी टीम के कोच हैं और वह इसका आनंद ले रहे हैं। उन्होंने कहा, मेरी दिनचर्या पहले जैसी ही है। जब आप सुबह जल्दी उठते हैं तो खिलाड़ियों को तैयार करने के बारे में सोचते हैं। यह सुनिश्चित करते हैं कि वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं और बाकी दिन अगले सत्र की तैयारी करते हैं। अंतर सिर्फ इतना है कि पहले शारीरिक हिस्से पर अधिक जोर देना पड़ता था लेकिन अब दिमाग पर ज्यादा जोर देना पड़ता है लेकिन मैं इसका पूरा आनंद ले रहा हूं। भारत इस वर्ष 28 नवंबर से 10 दिसंबर तक चेन्नई और मदुरै में एफआईएच जूनियर विश्व कप की मेजबानी करेगा और श्रीजेश अपने खिलाड़ियों को तैयार करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। उन्होंने कहा, उनके (खिलाड़ियों) लिए सबसे बड़ी चुनौती जूनियर विश्व कप है क्योंकि चार देशों के टूर्नामेंट और इस तरह की अन्य प्रतियोगिताएं उन पर जूनियर विश्व कप जितना दबाव नहीं डालतीं।

मेरा काम उन्हें इन टूर्नामेंट के लिए अच्छी तरह से तैयार करना है। जूनियर विश्व कप में भारत को पूल बी में पाकिस्तान, चिली और स्विट्जरलैंड के साथ रखा गया है। हालांकि ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के कारण जूनियर विश्व कप में पाकिस्तान की भागीदारी पर अनिश्चितता के बादल मंडरा रहे हैं, लेकिन श्रीजेश किसी एक विशेष टीम पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहते हैं।

सावन में बेलपत्र घर की इस दिशा में लगाएं, महादेव होंगे प्रसन्न, धन-दौलत से भर जाएगी तिजोरी

बेलपत्र को वास्तु में धन लाभ, सकारात्मकता और सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, बेलपत्र भगवान शिव को बहुत प्रिय है। ऐसे में सावन के दौरान इसे घर में सही स्थान पर लगाने से शिवजी प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा जातक पर बनी रहती है। मान्यता है कि इस पेड़ का संबंध माता लक्ष्मी से भी होता है। यही कारण है कि सावन के दौरान बेलपत्र को घर में लगाना बेहद फलदायी माना गया है।सावन का महीना शुरू हो चुका है, जो भगवान शिव को बहुत प्रिय होता है। इसी माह में कांवड़ यात्रा भी निकलती है, सावन शिवरात्रि के दौरान इसका समापन होता है। ऐसे में सावन के इस पूरे महीने में शिवजी के भक्त पूरी श्रद्धा से पूजा-पाठ और व्रत करते हैं। वहीं, इस दौरान शिवजी को बेलपत्र अर्पित करने का भी खास महत्व बताया गया है। कहा जाता है कि बेलपत्र भगवान शिव और माता लक्ष्मी से संबंधित होता है। पौराणिक कथाओं में बताया गया है कि बेलपत्र भगवान शिव को बेहद प्रिय है। ऐसे में वास्तु के अनुसार अगर आप घर की सही दिशा में इस पेड़ को लगा लें, तो इससे जीवन के दुखों से निजात मिल सकती है। साथ ही, भोले बाबा की विशेष कृपा जातक पर बनी रहती है और धन लाभ के योग बनते हैं। ऐसे में आइए विस्तार से जानें सावन में बेलपत्र लगाने की सही दिशा, नियम और लाभ के बारे में...

बेलपत्र का पेड़ किस दिशा में लगाएं

वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर में बेलपत्र का पेड़ सही दिशा में लगाना बहुत जरूरी होता है। इसे गलत स्थान या दिशा में रखने से जातक को शुभ की जगह अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। माना जाता है कि बेलपत्र को घर में हमेशा उत्तर-पूर्व दिशा यानी ईशान कोण में लगाना चाहिए। इसके अलावा, आप उत्तर या पूर्व दिशा में भी इस पेड़ को रख सकते हैं। ऐसा करने से घर का वातावरण सकारात्मक होता है और जीवन की कई समस्याओं से भी जातक को निजात मिल सकती है। घर की इस दिशा को सबसे शुभ माना गया है। ऐसे में कभी भी बेलपत्र लगाते समय इस दिशा का ख्याल जरूर रखें।

बेलपत्र का पेड़ घर में किस दिन लगाएं

सावन के महीने में बेलपत्र का पेड़ घर में किसी भी दिन लगाया जा सकता है। लेकिन इस माह में सोमवार के दिन बेलपत्र को घर लाना सबसे उत्तम माना गया है। हिंदू धर्म में सोमवार का दिन भगवान शिव को समर्पित माना गया है। ऐसे में अगर आप इस खास दिन बेलपत्र का पेड़ घर में लगाते हैं, तो इससे शिवजी बेहद प्रसन्न होते हैं और जातक पर उनकी विशेष कृपा बनी रहती है। साथ ही, प्रत्येक सोमवार बेलपत्र को शिवजी की पूजा में भी जरूर शामिल करना चाहिए।

बेलपत्र घर में लगाने के जरूरी वास्तु नियम

वास्तु के अनुसार, बेलपत्र का पेड़ कभी भी घर की दक्षिण-पश्चिम दिशा यानी नैत्रृत्य कोण में नहीं लगाना चाहिए।

रसोई घर, टॉयलेट, बाथरूम और घर के मध्य स्थान पर भी बेलपत्र के पेड़ को लगाना वर्जित माना गया है।

बेलपत्र के पौधे को साफ स्थान पर रखना चाहिए और वहां की नियमित साफ-सफाई करनी चाहिए। गंदगी वाली जगह पर इस शुभ पेड़ को भूलकर भी नहीं रखना चाहिए।

वास्तु के अनुसार घर में कभी भी ऐसा बेलपत्र का पेड़ नहीं रखना चाहिए जिसके पत्ते पूरी तरह सूख गए हों। इस प्रकार का पेड़ घर में नकारात्मकता लाता है।

माना जाता है कि सावन के महीने में बेलपत्र के पेड़ की नियमित रूप से पूजा करना बहुत फलदायी होता है। इससे जीवन में तरक्की हासिल होती है।

बेलपत्र का पेड़ सही दिशा में लगाने के लाभ

वास्तु के अनुसार अगर आप सही दिशा में बेलपत्र का पेड़ लगाते हैं, तो इससे बेहद शुभ फल की प्राप्ति होती है। इसे विशेष रूप से सावन में लगाना बहुत फलदायी माना गया है। क्योंकि सावन का महीना भगवान शिव को समर्पित होता है और यह पेड़ शिवजी को बेहद प्रिय है। ऐसे में अगर आप इस पवित्र माह में बेलपत्र को घर में लगा लें, तो इससे परिवार के सदस्यों पर शिवजी की कृपा बनी रहती है। साथ ही, हर सोमवार बेलपत्र शिवलिंग पर भी चढ़ाएं। ऐसा करने से जातक को पापों से मुक्ति मिल सकती है और जीवन में खुशहाली आने लगती है। माना जाता है कि घर में बेलपत्र का पेड़ लगाने से वास्तु दोष दूर होता है और घर में सकारात्मकता आने लगती है। घर में इसके हरा-भरा होने से शिवजी प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा से जातक को कभी भी धन की कमी नहीं होती है। इससे तिजोरी हमेशा धन-दौलत से भरी रह सकती है।

शिवरात्रि पर 24 साल बादपर एक साथ तीन राजयोग का दुर्लभ संयोग, इन 5 राशियों की चमकेगी किस्मत, होंगे मालामाल

सावन शिवरात्रि पर इस बार ग्रहों का बेहद ही शुभ संयोग बनने जा रहा है। शिवरात्रि पर इस बार कई महायोग एक साथ बनेंगे। जो 24 साल बाद फिर से सावन शिवरात्रि पर उपस्थित होंगे। आपको बता दें कि 24 साल पहले 18 जुलाई 2001 को चंद्रमा मिथुन राशि में गोचररत थे और उस वर्ष भी शिवरात्रि बुधवार की थी और वर्ष 2025 में भी सावन शिवरात्रि बुधवार की है। इसके साथ ही 24 साल बाद सावशिवरात्रि पर शुक्र अपनी मूलत्रिकोण राशि वृषभ में विराजमान होकर मालव्य राजयोग बना रहे हैं जबकि चंद्रमा और गुरु भी 24 साल के बाद सावन की शिवरात्रि पर मिथुन राशि में गोचर करते हुए गजकेसरी योग बना रहे हैं। इसके अलावा भी इस वर्ष कई अन्य शुभ योग सावन शिवरात्रि पर बन रहे हैं तो भक्तों को शिवकृपा का विशेष लाभ दिलाने के साथ ही ग्रहों के दोष को भी दूर करने वाले रहेंगे। इन्हीं में से एक योग है बुधादित्य योग। और कमाल की बात है कि इस बार 24 साल बाद एक कतार में शुक्र, गुरु सूर्य भी सावन की शिवरात्रि पर उपस्थित होकर उत्तम संयोग बना रहे हैं। तो आइए जानते हैं सावन की शिवरात्रि पर अबकी बार शुभ ग्रह योग और शिवजी की कृपा से किन-किन राशियों को लाभ मिलेगा।

वृषभ राशि को मिलेगा धन संपत्ति का सुख

इस समय शुक्र आपकी राशि में ही विराजमान हैं। ऐसे में शुक्र आपके लग्न भाव में मालव्य राजयोग बना रहे हैं। जिससे वृषभ राशि का जातकों की भगवान शिव की कृपा से बंपर कमाई होगी। साथ ही इन राशि के लोगों को उन्नति के साथ साथ सफलता के भी अच्छे परिणाम मिलेंगे। वहीं, इस अवधि में आपको कमाई के कई अच्छे मौके मिलेंगे। जिसका लाभ आपको हर तरह से मिलेगा। वहीं, इस दौरान आपको धन संपत्ति का सुख मिलेगा। यानी इस दौरान आप कोई संपत्ति आदि खरीद सकते हैं और

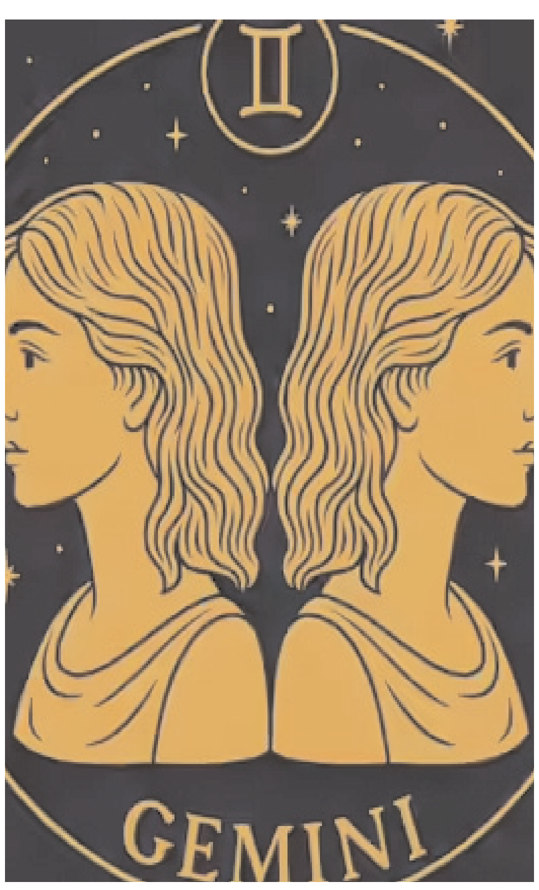

जीवन में तरक्की के साथ साथ पारिवारिक मामलों में सुख प्राप्त कर सकते हैं। आपकी कोई अधूरी इच्छा इस दौरान पूरी होगी।

मिथुन राशि का बढ़ेगा मान सम्मान

मिथुन राशिवालों के लग्न भाव में गजकेसरी राजयोग बनेगा। गुरु और चंद्रमा एक साथ मिथुन राशि में रहेंगे। ऐसे में गजकेसरी राजयोग से आपको विशेष लाभ मिलने वाला है। मिथुन राशि के लोगों को करियर में कमाई के अच्छे अवसर मिलेंगे। गजकेसरी राजयोग से धन, समृद्धि और मान-सम्मान मिलेगा। कार्यस्थल पर लोग अब आपके काम की सराहना करेंगे। साथ ही आपको उनके साथ तालमेल बनाने का भी मौका मिलेगा। वहीं, इस दौरान नौकरीपेशा जातकों को कमाई के भी कई अच्छे अवसर मिलेंगे। आपको बस उन्हें पहचानना होगा।

वृश्चिक राशि को मिलेगा राजयोग का लाभ

वृश्चिक राशि के लोगों को मालव्य राजयोग से धन लाभ के साथ साथ वाहन आदि का सुख भी मिल सकता है। साथ ही इस दौरान आपको अपने जीवनसाथी का पूरा सहयोग मिलेगा। इस राशि के लोग कला और संगीत जगत से जुड़े हैं उन्हें सम्मान मिलेगा। साथ ही साथ भौतिक सुख सुविधाओं का आनंद ले पाएंगे। शादीशुदा लोगों के लिए यह समय विशेष फलदायी रहेगा क्योंकि, अब आपके रिश्ते पहले से मजबूत होंगे। वहीं, अविवाहितों को सुंदर, संस्कारी और सहयोगी जीवनसाथी का रिश्ते आ सकता है। आप इस दौरान कोई नया वाहन आदि भी खरीद सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति इस दौरान पहले से काफी मजबूत होगी।

धनु राशि को मिलेगा आर्थिक लाभ

धनु राशि के लोगों पर गजकेसरी राजयोग का लाभ मिलेगा। दरअसल, आपकी राशि पर गुरु और चंद्रमा की सप्तम दृष्टि रहेगी। ऐसे में आपको मान-सम्मान, उच्च पद, मिलने के साथ साथ आर्थिक लाभ मिलने की भी संभावनाएं हैं। समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। वहीं, इस दौरान आपका स्वभाव काफी परोपकारी बनेगा। आपका झुकाव धर्म कर्म के कार्यों पर अधिक रहेगा। नौकरीपेशा लोगों को प्रमोशन, पारिवारिक जीवन में सुख शांति मिलेगी। अगर आपकी कुंडली में कोई अशुभ ग्रह बाधा डाल रहा है तो अब आपकी परेशानियां दूर होने वाली है। इतना ही नहीं आपको विदेश यात्रा के भी योग बन रहे हैं। जो लोग संतान सुख की कामना कर रहे हैं उन्हें संतान सुख मिल सकता है।

क्या कहते आपके सितारे

मेष आज का दिन आपके लिए उलझनों भरा रहने वाला है। आप अपने मन में किसी के प्रति ईर्ष्या की भावना ना रखें। माता-पिता के आशीर्वाद से आपका कोई रुका हुआ काम पूरा हो सकता है। वाहनों का प्रयोग आपको थोड़ा सावधान रहकर करना होगा। आप कार्यक्षेत्र में अपने बॉस की दी गई जिम्मेदारियां पर पूरा ध्यान दें। आपको किसी काम को लेकर योजना बनाकर चलने की आवश्यकता है। आपके मन में किसी काम को लेकर कश्मकश बनी रहेगी।

वृषभ आज का दिन आपके लिए उन्नति की राह पर आगे बढ़ने के लिए रहेगा। आपका कोई पुराना मित्र लंबे समय बाद आपसे मेल-मुलाकात करने आ सकता है। आप अपने बिजनेस में पार्टनरशिप थोड़ा सोच समझकर करें, लेकिन जल्दबाजी में कोई डिसीजन ना लें। आप अपने घर के लिए कुछ चीजों की शॉपिंग कर सकते हैं। जीवनसाथी को कहीं घूमाने-फिराने लेकर जा सकते हैं। आपको पेट संबंधित समस्याओं पर पूरा ध्यान देना होगा, इसलिए खानपान पर थोड़ा संयम रखें।

मिथुन आज का दिन आपके लिए मौज-मस्ती से भरा रहने वाला है। भाई बहनों का आपको पूरा साथ मिलेगा। यदि आपको किसी काम को लेकर संशय हो, तो आप उस काम में बिल्कुल आगे ना पड़ें। आपका कोई कानूनी मामला आपके लिए सिरदर्द बन सकता है। कार्यक्षेत्र में आपके विरोधी आपके कामों को बिगाड़ने की कोशिश करेंगे, जिनसे आपको बचना होगा। आपके घर किसी अतिथि का आगमन होने से माहौल खुशनुमा रहेगा।

कर्क आज का दिन आपके लिए अकस्मात धन लाभ लेकर आने वाला है। आपको अपने धन को लेकर कोई समस्या चल रही थी, तो वह भी दूर हो सकती है। आपके चारों ओर का वातावरण खुशनुमा रहेगा। आपको अपनी ऊर्जा को सही कामों में लगाने की आवश्यकता है। संतान ने यदि किसी परीक्षा को दिया था, तो उसका परिणाम आ सकते हैं। आप किसी काम को लेकर थोड़ा समझदारी दिखाएं। आपका कुछ नया करने की कोशिश रंग लाएगी।

सिंह आज का दिन आपके लिए बढ़ते खर्चों पर ध्यान देने के लिए रहेगा। नौकरी को लेकर परेशान चल रहे लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। मित्रों के साथ आपको कुछ समय मौज-मस्ती करने में व्यतीत करेंगे। परिवार में आपको सदस्यों में एकजुटता बनाए रखना होगी। आप कहीं घूमने फिरने जाएं, उसमें माता-पिता से आशीर्वाद अवश्य लेकर जाएं। आप अपने बिजनेस में थोड़ा सोच समझकर भी धन लगाएं, तो आपके लिए बेहतर रहेगा, नहीं तो बाद में कोई नुकसान हो सकता है।

कन्या आज का दिन आपके लिए बढ़िया रहने वाला है। आपका कोई लंबे समय से रुका हुआ काम पूरा हो सकता है। सरकारी योजनाओं का आपको पूरा लाभ मिलेगा, लेकिन सेहत को लेकर आपको कुछ जरूरी टेस्ट आदि कराने पड़ सकते हैं। आप किसी बात को लेकर थोड़ा टेंशन ले सकते हैं, लेकिन आपको अपनी संतान से किए हुए वादे को पूरा करना होगा, नहीं तो वह आपसे नाराज हो सकते है।

तुला आज का दिन आपके लिए कुछ नई योजनाओं को बनाने के लिए रहेगा। आप अपने बिजनेस में योजनाओं को लेकर काम करेंगे। आपकी कोई मन की इच्छा पूरी हो सकती है। परिवार में किसी धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन हो सकता है। भाई व बहनों से रिश्तों में यदि कड़वाहट चल रही थी, तो वह भी दूर होगी, लेकिन आप अपनी वाणी पर संयम बनाए रखें। आप किसी दूसरे के मामले में बेवजह ना बोले। प्रेम व सहयोग की भावना आपके मन में बनी रहेगी।

वृश्चिक आज का दिन आपके लिए धैर्य और संयम से कामों को करने के लिए रहेगा। आपको अपने कामों में एकाग्र होकर जुटने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को पढ़ाई-लिखाई में अच्छी सफलता मिलेगी। आपका किसी पुरानी गलती से पर्दा उठ सकता है। जो जातक सरकारी नौकरी की तैयारी में लगे हैं, उन्हें अपने प्रयासों में तेजी लानी होगी। यदि कोई पैतृक संपत्ति को लेकर मतभेद चल रहा था, तो वह भी दूर हो सकता है।

धनु आज का दिन आपके लिए ऊर्जावान रहने वाला है। आपको अपने कामों पर पूरा ध्यान देना होगा। आप किसी काम को लेकर अच्छा खासा खर्च कर सकते हैं। आप अपने घर के रिनोवेशन का भी काम शुरू कर सकते हैं। आपकी किसी बात से परिवार में कहासुनी हो सकती है। आप किसी वरिष्ठ सदस्य से काम को लेकर कोई सलाह लें, तो आप उस पर अमल अवश्य करें, लेकिन आपका कोई मित्र आपके लिए इन्वेस्टमेंट संबंधित प्लान लेकर आ सकता है, जिसमें आप थोड़ा सोच समझकर ही इन्वेस्टमेंट करें, तो ही बेहतर रहेगा।

मकर आज का दिन राजनीति में कार्यरत लोगों के लिए बढ़िया रहने वाला है आपको काम के लिए कोई पुरस्कार भी मिल सकता है। आपका कोई नया काम करने की इच्छा जागृत हो सकती हैं। आपके घर मेहमानों का आगमन होने से माहौल खुशनुमा रहेगा। संतान पक्ष की ओर से आपको आज कोई खुशखबरी सुनने को मिल सकती है। आपकी कोई प्रॉपर्टी को लेकर डील हुई थी तो उसके भी फाइनल होने की संभावना है। जीवनसाथी से आपके रिश्ते बेहतर रहेंगे।

कुंभ आज का दिन आपके लिए सेहत के लिहाज से उतार-चढ़ाव से भरा रहने वाला है। आपको किसी काम को लेकर आप विदेश यात्रा पर जाना पड़ सकता है। बिजनेस में आप कोई निर्णय जल्दबाजी में ले सकते हैं जो आपकी टेंशन को बढ़ाएगा। आपको अपने काम को लेकर मनमर्जी चलाने से बचना होगा और किसी बाहरी व्यक्ति से कोई जरूरी जानकारी शेयर ना करें। बैंकिंग क्षेत्र में कार्यरत लोग किसी अच्छी स्कीम में धन लगा सकते हैं।

मीन आज का दिन आपके लिए समस्याएं लेकर आने वाला है। आपके घर में मनमुटाव बढ़ेंगे, जिससे सदस्यों के बीच कड़वाहट उत्पन्न हो सकती है और दूरियां आने की संभावना है। आपके ऊपर कार्यक्षेत्र में कोई बड़ी जिम्मेदारी आ सकती है। आपको अपने माता-पिता से पारिवारिक मामलों को लेकर बातचीत करनी होगी। जीवनसाथी की नौकरी से संबंधित किसी समस्या को लेकर यदि परेशान थे, तो वह दूर होती दिख रही है। आपको अपनी संतान के करियर को लेकर कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना होगा।

संक्षिप्त समाचार

ओडिशा में तीन तेंदुओं की खाल बरामद, सात लोग गिरफ्तार

मयूरभंज, एजेंसी। ओडिशा के मयूरभंज जिले में वन्यजीवों के अंगों का व्यापार करने के आरोप में तीन तेंदुओं की खाल जब्त की गई और इस संबंध में एक सरकारी शिक्षक समेत सात लोगों को गिरफ्तार किया गया। एक वरिष्ठ वन अधिकारी ने यह जानकारी दी। सिमिलिपाल बाघ अभयारण्य (एसटीआर) के उप निदेशक सम्राट गौड़ा ने यहां संवाददाताओं को बताया कि एक गोपनीय सूचना के आधार पर एसटीआर के अधिकारियों ने उदाला थाना क्षेत्र के कुटलिंग गांव और बादसाही थाना क्षेत्र के चंदनचतुरी गांव में छापेमारी की। उन्होंने बताया कि पांच साल के तेंदुओं की दो खाल और एक साल के तेंदुए की खाल जब्त की गई। हालांकि, अभी यह पता नहीं चल पाया है कि तीनों तेंदुओं को कहां मारा गया। गौड़ा ने बताया कि गिरफ्तार किए गए सात लोगों के एसटीआर क्षेत्र और छत्तीसगढ़ के जंगलों के शिकारियों से संबंध हैं। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार किए गए सात लोगों में सरकारी प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक मनोरंजन टिपिरिया भी शामिल है।

भाजपा विधायक ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के गुणों की तुलना राम और कृष्ण से की

मुंबई, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक परिणय फुके ने बुधवार को कहा कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का चरित्र भगवान राम जैसा और बुद्धि भगवान कृष्ण जैसी है। फुके ने विधान परिषद में कहा कि फडणवीस ने महाराष्ट्र को विकास की नयी ऊंचाइयों पर पहुंचाया है और इसे शीर्ष राज्य बनाया है। उन्होंने कहा, ''हम उनके भजन गाते हैं क्योंकि वह हमारे लिए भगवान के समान हैं। मुझे नहीं पता कि देवेंद्र फडणवीस भगवान हैं या नहीं, लेकिन वह एक ईश्वरीय व्यक्ति हैं।'' फुके ने कहा, ''उनका (फडणवीस का) भगवान श्री राम जैसा चरित्र, कृष्ण जैसी बुद्धि, महादेव जैसी सहनशीलता एवं विष को पचाने की क्षमता, सूर्य जैसा तेज और चंद्रमा जैसा शांत स्वभाव है।'' उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता फडणवीस की प्रशंसा करते हैं और उनका आभार व्यक्त करते हैं।

ओम बिरला ने कोटा बाढ़ पीड़ितों के परिजन से मुलाकात की, जलभराव रोकने के लिए कदम उठाने के निर्देश दिए

कोटा, एजेंसी। कोटा-बूंदी से सांसद ओम बिरला ने कोटा जिले के वर्षा प्रभावित क्षेत्रों का बुधवार को दौरा किया और उन लोगों के परिवारों से मुलाकात की जो पिछले कुछ दिनों में या तो बहने या अन्य कारणों से मारे गए। लोकसभा अध्यक्ष ने आवासीय क्षेत्रों में वर्षा जल के प्रवेश को रोकने के लिए किए जा रहे विकास कार्यों और वृक्षारोपण का भी जायजा लिया। बिरला सबसे पहले रणपुर क्षेत्र गए, जहां भारी बारिश से व्यापक नुकसान हुआ है। उन्होंने उस स्थान का दौरा किया जहां सोमवार को 27 वर्षीय एक महिला अपने एक रिश्तेदार के साथ स्कूटर पर नाले को पार करते समय उसमें बह गई थी।

मादक पदार्थ सौदे में असफल होने पर तस्कर का अपहरण करने वाले सात आरोपी गिरफ्तार

मुंबई, एजेंसी। मुंबई पुलिस की अपराध शाखा ने मादक पदार्थ के तस्कर और उसके सहयोगी का अपहरण किए जाने समेत जबरन वसूली के लिए हमला करने के मामले में अंडरवर्ल्ड डॉन छोटा शकील से कथित रूप से जुड़े एक 'अंतरराष्ट्रीय गिरोह' के सात सदस्यों को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। सूरत निवासी साजिद इलेक्ट्रिकवाला नाम के मादक पदार्थों के तस्कर को करीब एक महीने तक आरोपियों ने बंधक बनाकर रखा था और अपराध शाखा द्वारा उसे बचा लिया गया। शब्बीर 10 जुलाई को भागने में सफल रहा और उसने मुंबई के ओशिवारा थाने में संपर्क किया। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान सरवर खान, मेहताब, संतोष वाघमारे, सतीश कड़ू, यूनुस थेवरपल्ली, तौसीफ सैंडी और राहुल सावंत के रूप में हुई है। जांच के दौरान पुलिस को आरोपियों और छोटा शकील के बीच संबंधों का पता लगा। जांचकर्ताओं के अनुसार, 12 जून को गिरोह ने तीन गाड़ियों का इस्तेमाल करके ओशिवारा के एक होटल से इलेक्ट्रिकवाला और शब्बीर का अपहरण किया था।

अमेरिका में लाखों रुपये के सामान की चोरी करते पकड़ी गई भारतीय महिला

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में एक भारतीय महिला टारगेट स्टोर में लाखों रुपये के सामान की चोरी करते हुए पकड़ी गई। आरोपी महिला को पुलिस ने हिरासत में लिया है। महिला टारगेट स्टोर में सात घंटे से अधिक समय तक रही, जिससे स्टोर के स्टाफ को उसके स्वभाव पर शक हुआ। इसके बाद पुलिस को सूचित किया गया।

हम करेंगे नेतृत्व और मैं बनूंगा मुख्यमंत्री: पलानीस्वामी

चेन्नई, एजेंसी। ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (एआईएडीएमके) प्रमुख एडप्पादी के पलानीस्वामी ने बुधवार को यहां कहा कि तमिलनाडु में पार्टी नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) अटूट है और भाजपा समेत इसके घटक दलों के बीच फूट डालने की कोई भी कोशिश सफल नहीं होगी। उन्होंने यह भी कहा कि गठबंधन के संबंध में उनका निर्णय अंतिम होगा।

विधानसभा में विपक्ष के नेता ने मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन के 'उंगलुदन स्टालिन' संपर्क कार्यक्रम की भी आलोचना की और इसे एक नाटक बताया। उन्होंने आरोप लगाया कि इसका उद्देश्य 2026 के विधानसभा चुनावों से पहले तमिलनाडु के लोगों को गुमराह करना है। पलानीस्वामी ने पूछा कि इस सरकार के बचे हुए आठ महीनों में लोग अपने मुद्दों के क्या ही समाधान की उम्मीद कर सकते हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा अगले साल राज्य में राजग के चुनाव जीतने पर गठबंधन सरकार बनाने संबंधी कथित टिप्पणी के बारे में पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए, पलानीस्वामी ने कहा कि भाजपा के वरिष्ठ नेता ने केवल इतना कहा कि गठबंधन सत्ता में आएगा।

पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, उनका कहना है कि हमारा गठबंधन सरकार बनाएगा। मैंने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि इस गठबंधन का नेतृत्व कौन कर रहा है? तो यह मेरा फैसला है, है ना? कौन मुख्यमंत्री बनेगा, कौन सरकार

बनाएगा - हम दोनों (शाह और मैं) यह स्पष्ट कर चुके हैं। यह स्पष्ट कर दिया गया है कि अन्नाद्रमुक राज्य में राजग का नेतृत्व करेगा और अगर गठबंधन विजयी होता है तो वह मुख्यमंत्री बनेंगे। उन्होंने कहा, गठबंधन में फूट डालने की कोई भी कोशिश सफल नहीं होगी। यह एक अटूट गठबंधन है।

पलानीस्वामी ने दावा किया कि द्रमुक को यह उम्मीद नहीं थी कि अन्नाद्रमुक गठबंधन करेगा और इसलिए वह डर के कारण विपक्षी गठजोड़ की आलोचना कर रहा है। उन्होंने याद दिलाया कि द्रमुक ने अतीत में भाजपा के साथ गठबंधन किया था और सवाल किया कि क्या द्रविड़ पार्टी का तब ऐसा करना स्वीकार्य था, लेकिन अब अन्नाद्रमुक ने जब भाजपा के साथ गठबंधन किया है तो वह भाजपा को सांप्रदायिक बता रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार, सूत्रों ने बताया है कि ईपीएस ने शाह से कह दिया है कि जीत की स्थिति में न्यूनतम स्तर पर पावर शेयरिंग पर विचार किया जा सकता है। दरअसल, शाह ने साफतौर पर कहा था, हम चुनाव एडप्पाडी जी के नेतृत्व में लड़ेंगे। साथ ही उन्होंने गठबंधन सरकार का जिक्र किया था। कहा जा रहा है कि इसके चलते एआईएडीएमके नेताओं में हलचल तेज हुई थी। कहा जा रहा है कि ईपीएस की तरफ से इस बात पर जोर दिया जाना भाजपा और एआईएडीएमके के बीच एक समझ स्थापित होने के संकेत दे रहा है, जिसके तहत यह साफ हो चुका है कि चुनाव से पहले गठबंधन सरकार की बात को बढ़ाना देना नुकसान करा सकता है। इसकी वजह कोर द्रविड़ मतदाताओं के विरोध का डर माना जा रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार, ईपीएस की टिप्पणियों को जनता की धारणा बदलने की ठोस कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। अखबार को एक सूत्र ने बताया कि गठबंधन काफी प्रगति कर रहा है। उन्होंने कहा, हम दोनों पहले ही तय कर लिया है कि अन्नाद्रमुकनेतृत्व कर रहा है। ईपीएस सीएम बनेंगे। आप और क्या जानना चाहते हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, एआईएडीएमके और भाजपा के बीच बातचीत की जानकारी रखने वाले राय के ही एक वरिष्ठ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य ने कहा था, अगर गठबंधन सरकार की बात होती है, तो एआईएडीएमके कैडर खुश नहीं होगा। ईपीएस ने शाह को बता दिया है कि वह जीत की स्थिति में अपनी पार्टी के नेताओं को पावर शेयरिंग के लिए मना लेंगे।

मान्यता प्राप्त पत्रकारों के संगठन ने वरिष्ठ पत्रकार अजीत अंजुम के खिलाफ दर्ज एफआईआर पर गहरी चिंता जताई

मान्यता प्राप्त पत्रकार संघ (रजि.) ने लोकप्रिय, निर्भीक और वरिष्ठ पत्रकार तथा मीडिया न्यूज चैनल के प्रधान संपादक श्री अजीत अंजुम के विरुद्ध बिहार में दर्ज की गई प्राथमिकी (एफआईआर) पर गहरा रोष और गंभीर चिंता व्यक्त की है। संघ का स्पष्ट कहना है कि लोकतंत्र में मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और जब इस स्तंभ को सच दिखाने की सजा दी जाती है, तब यह केवल एक पत्रकार पर नहीं, बल्कि पूरे लोकतांत्रिक ताने-बाने पर हमला माना जाता है।

सत्य और साहस की पत्रकारिता पर दमन का प्रयास निंदनीय है: प्राप्त जानकारी के अनुसार, श्री अजीत अंजुम ने बिहार में मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण अभियान के दौरान बीएलओ द्वारा हो रही तमाम प्रशासनिक अनियमितताओं और खामियों को तथ्यपरक ढंग से उजागर किया। उन्होंने बिना किसी भय या दबाव के, जनता के हित में, प्रशासन की गंभीर गड़बड़ियों को अपने चैनल पर प्रमुखता से दिखाया। यही रिपोर्टिंग उनके ऊपर एफआईआर का कारण बनी, जो अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण और खतरनाक प्रवृत्ति का संकेत है।

संघ के अध्यक्ष विजय शंकर चतुर्वेदी का स्पष्ट और सशक्त बयान: संघ के अध्यक्ष श्री विजय शंकर चतुर्वेदी ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा- अजीत अंजुम पत्रकारिता की दुनिया का एक प्रतिष्ठित नाम है, जिनकी निष्पक्षता और ईमानदार रिपोर्टिंग को दशकों से देश भर में सराहा गया है। उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करना लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के विरुद्ध सीधा हमला है। प्रशासन का यह कदम प्रेस की आज़ादी को दबाने और सच को छुपाने का घृणित प्रयास है।

उन्होंने कहा- लोकतंत्र का मूलभूत सिद्धांत है 'सत्य का सम्मान'। अगर सच्चाई को उजागर करने वालों को इस प्रकार प्रताड़ित किया जाएगा तो यह समाज और राष्ट्र के भविष्य के लिए अत्यंत चिंताजनक संकेत है।

संघ ने प्रशासन से रखी तीन प्रमुख मांगे-

एफआईआर की तटस्थ और निष्पक्ष जांच कर निष्कलंक पत्रकार की गरिमा बहाल की जाए।

पत्रकारों को प्रताड़ित करने और दबाव में लेने की प्रवृत्ति पर तत्काल रोक लगे।

पत्रकारिता की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति के अधिकार की पूर्ण रक्षा सुनिश्चित की जाए।

संघ का संकल्प – पत्रकारों के मान-सम्मान की रक्षा के लिए हर स्तर पर संघर्ष जारी रहेगा

मान्यता प्राप्त पत्रकार संघ ने स्पष्ट कर दिया है कि जब भी किसी पत्रकार की स्वतंत्रता या गरिमा पर प्रहार होगा, पूरा पत्रकार समाज एकजुट होकर उसका डटकर मुकाबला करेगा।

हम अजीत अंजुम जैसे निर्भीक पत्रकारों के साथ खड़े हैं। हम हर उस पत्रकार के साथ हैं जो सत्य की राह पर डटकर खड़ा है। प्रेस की आज़ादी और लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए हम हर मंच पर संघर्षरत रहेंगे।

पत्रकारिता कोई अपराध नहीं – पत्रकारों का दमन बर्दाश्त नहीं!

लोकतंत्र का प्रहरी झुकेगा नहीं – सच बोलना बंद नहीं होगा!

विजय शंकर चतुर्वेदी
अध्यक्ष
मान्यता प्राप्त पत्रकार संघ (रजि.)

महाराष्ट्र के नक्सल प्रभावित गांव में आजादी के बाद पहली बार चली बस

गढ़चिरौली, एजेंसी। कभी नक्सलियों का गढ़ रहे महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले के एक सुदूर गांव में आजादी के बाद अब पहली बार सरकारी बस सेवा शुरू हुई है। पुलिस ने यह जानकारी दी। बुधवार को जब पहली बस मरकनार गांव पहुंची तो स्थानीय लोगों ने राष्ट्रध्वज लहराकर उसका स्वागत किया। पुलिस ने बयान जारी कर बताया कि इस सेवा से मरकनार और आसपास के गांवों के छात्रों समेत लगभग 1,200 निवासियों को लाभ होगा।

पुलिस की ओर से दावा किया गया है कि गढ़चिरौली पुलिस के प्रयासों के बाद आजादी के बाद पहली बार सुदूर मरकनार गांव से अहेरी तक बस सेवा शुरू की गई है। आदिवासी आबादी और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के लिए जाना जाने वाला गढ़चिरौली जिला खराब कनेक्टिविटी की समस्या से जूझ रहा था। मरकनार गांव गढ़चिरौली जिले के भामरागढ़ उपखंड में अबूझमाड़ की तलहटी में स्थित है, जो नक्सलियों का गढ़ था। बुधवार को ग्रामीणों ने पहली बार अपने इलाके में बस सेवा देखी।

गढ़चिरौली के पुलिस अधीक्षक नीलोत्पल की पहल पर शुरू की गई राज्य परिवहन सेवा का स्वागत करने के लिए ग्रामीण तिरंगा लेकर एकत्रित हुए। इस सेवा से मरकनार, मुरुंभुशी, फुलनार, कोपरशी, पोयारकोठी और गुंडुरवाही जैसे गांवों के 1,200 से ज्यादा निवासियों, खासकर मरीजों, छात्रों और अन्य यात्रियों को लाभ होगा। गढ़चिरौली पुलिस ने दूरदराज के इलाकों में परिवहन को आसान बनाने के लिए कई बुनियादी ढांचा परियोजनाएं शुरू की हैं। कहा गया है कि एक जनवरी 2025 को गट्टा-गरदेवड़ा-वांगेतुरी मार्ग पर और 27 अप्रैल को कटेझर से गढ़चिरौली के लिए बस सेवा शुरू की गई। पिछले पांच वर्षों में, गढ़चिरौली पुलिस के संरक्षण में जिले में 420.95 किलोमीटर लंबी 20 सड़कें और 60 पुल बनाए गए हैं। बता दें कि होम मिनिस्टर अमित शाह ने 31 मार्च, 2026 तक नक्सलवाद को पूरी तरह से खत्म करने का टारगेट रखा है।

अलास्का में 7.3 तीव्रता का भूकंप, सुनामी की चेतावनी वापस ली गई ,एक हफ्ते में 400 भूकंप दर्ज किए गए

जूनो, एजेंसी। अमेरिकी राज्य अलास्का में गुरुवार तड़के करीब 2 बजे (भारतीय समयानुसार) भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर इसकी तीव्रता 7.3 रही। इसके बाद राज्य के तटवर्ती इलाकों में सुनामी की चेतावनी जारी की गई है। हालांकि, कुछ घंटों बाद इसे वापस ले लिया गया। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी के मुताबिक भूकंप अलास्का के पॉपोफ आइलैंड पर सैंड पॉइंट के पास आया। इसका केंद्र जमीन से 36 किलोमीटर नीचे था। हालांकि, इसमें अभी तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। अलास्का भूकंप एजेंसी के मुताबिक यहां एक सप्ताह में, लगभग 400 भूकंप दर्ज किए गए। सबसे बड़ा भूकंप 16 जुलाई को अटका के पास 5.1 तीव्रता का था। मिशिगन टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी के अनुसार, 7.0 से 7.9 तीव्रता वाला भूकंप नुकसान पहुंचाने में सक्षम माना जाता है। अलास्का में हर साल लगभग 10-15 ऐसे भूकंप दर्ज किए जाते हैं।

लोगों से सुरक्षा निर्देशों का पालन करने की अपील: भूकंप के बाद, सुनामी चेतावनी प्रणाली ने अलास्का के कुछ तटीय हिस्सों के लिए सुनामी की चेतावनी जारी की है। प्रभावित क्षेत्रों में अधिकारियों ने लोगों से सतर्क रहने और सुरक्षा निर्देशों का पालन करने की अपील की है। अमेरिकी जियोलॉजिकल सर्वे ने बताया कि सैंड पॉइंट के दक्षिण में आया यह भूकंप प्रशांत और उत्तर अमेरिकी प्लेटों के बीच सबडक्शन जोन पर या उसके पास थ्रस्ट फॉल्टिंग के कारण हुआ।

रूसियों पर यूक्रेनी ड्रोन का गहराया खौफ, बंद किया मोबाइल-इंटरनेट

मास्को, एजेंसी। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के सरकारी आवास क्रेमलिन की तरफ से यह बात कही गई है कि यूक्रेन के ड्रोन अटैक से बचने के लिए इंटरनेट बंद किया गया है। समाचार एजेंसी रॉयटर्स की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि क्रेमलिन ने गुरुवार को कहा कि यूक्रेन से उत्पन्न खतरों से लोगों की सुरक्षा के लिए रूस में कभी-कभी मोबाइल इंटरनेट बंद करने का फैसला उचित है। क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव इंटरनेट आउटेज ट्रैकिंग सेवा स्ङ्घश्वद्ब.ह्वद्ब द्वारा इस हफ़्ते रूस के दर्जनों क्षेत्रों में अस्थिर इंटरनेट की सूचना दिए जाने के बाद इंटरनेट आउटेज के बारे में एक सवाल का जवाब दे रहे थे। पेसकोव ने कहा कि यूक्रेनी ड्रोन हमलों को रोकने के लिए जरूरत पड़ने पर अधिकारी मोबाइल इंटरनेट बंद कर देते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि दुश्मन को मात देने के लिए रणनीतिक कदम उठाने पड़ते हैं। रात भर रूस के 11 अलग-अलग इलाकों में ड्रोन हमले इस बीच, रूसी अधिकारियों ने गुरुवार को बताया कि यूक्रेनी ड्रोनों ने रात भर रूस के 11 अलग-अलग इलाकों में हमले किए, जिनमें आवासीय इमारतों को नुकसान पहुँचा है और कई नागरिक घायल हुए हैं। इसके अलावा यूक्रेनी ड्रोनों ने हवाई अड्डों पर भी हमले किए हैं। रूसी रक्षा मंत्रालय ने कहा कि वायु रक्षा बलों ने देश भर में और क्रीमिया के कब्जे वाले क्षेत्र में 122 ड्रोनों को रोककर नष्ट कर दिया।

किराए के लिए ख़ाली है

1-3600 वर्ग फुट कमर्शियल हॉल सेमी फर्निश्ड मेन रोड सेक्टर 10 टी सी काम्प्लेक्स फ़रीदाबाद में।
2-1620 वर्ग फुट ऑफिस सेमी फर्निश्ड मेन रोड टी सी काम्प्लेक्स सेक्टर 10 फ़रीदाबाद में ।
3 - टू बेड रूम सेट ग्राउंड फ्लोर वेल फर्निश्ड सेक्टर 7 डी ब्लॉक फरीदाबाद में ।
4- वन रूम सेट वेल फर्निश्ड सेकंड फ्लोर सेक्टर 7 डी ब्लॉक फ़रीदाबाद में ।
इच्छुक व्यक्ति फ़ोन नंबर 9999446252,,9811157562 पर संपर्क करें ।

- सूचना -

फ़रीदाबाद ज़िला में भेदीनज़र समाचारपत्र में अपने समाचार,विज्ञापन देने और अख़बार की कापी प्राप्त करने के लिये सम्पर्क करें –
1-गोपाल न्यूज़ एजेन्सी
अम्बेडकर चौक बल्लभगढ़
मोबाइल नम्बर-9811477 204
2-नरेंद्र बुक्स शाप
मूँगफली चौक ऐन.आई. टी. नम्बर -5 फ़रीदाबाद
मोबाइल नम्बर : 9810229192
3-दीक्षित न्यूज़ एजेन्सी ओल्ड फ़रीदाबाद
मोबाइल-98111 59238

छोटा विज्ञापन बड़ा फायदा
आज ही स्पेस बुक कराएं
कॉल करें
0120-4152063,
9811157 562

नई एवं तरोताजा खबरों के लिए भेदी नजर पढ़िए, समय के साथ चलिए
सुनहरा मौका वार्षिक ग्राहक बनिए और
वीआईपी एल्फा सूटकेस कीमत रु. 900 प्राप्त करिए
भेदी नजर समाचार पत्र के ग्राहक बनें
मात्र 700 रूपये दीजिए और वार्षिक ग्राहक बनने के अलावा तुरंत पाइए
और अन्य आकर्षक उपहार के लिए
बम्पर ड्रा
पहला इनाम

एक हीरो बाईक
दूसरा इनाम

एक सोनी एलसीडी 32 इंच व अन्य आकर्षक ईनाम
तीसरा इनाम

बीस मोबाईल फोन
+ कोई भी व्यक्ति एजेंट 500 से अधिक मेंबर बना लेगा तो उसे अलग से उपहार दिया जाएगा।
+ ये स्कीम एक जनवरी 2025से 31 दिसम्बर 2025तक चलेगी।
+ 31 दिसम्बर 2025 को 1000 सदस्य बनाने पर बम्पर ड्रा निकाला जाएगा जिसमें उपरोक्त इनाम
+ हरियाणा के किसी भी मंत्री द्वारा दिए जाएंगे।
+ ड्रा बम्पर ड्रा में भेदी नजर के वार्षिक मेम्बर ही भाग ले सकते है।
+ भेदी नजर प्रत्येक माह की पहली तारिख को कूपन छापेगा।

आर.एन.आई. नं.
DEL/HIN/2004/13528
प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी एवं संपादक उमा शर्मा द्वारा
उमा पब्लिकेशनस्
1001/1002 दसवां तल नौरंग हाऊस, 21 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली -1 से प्रकाशित
एवं नीलू प्रिंटिंग प्रेस
ई-33 सेक्टर -7 नोएडा से मुद्रित
संपादक
उमा शर्मा
प्रधान संपादक
गिरीश चन्द्र शर्मा
फोन नं. -
011-66304689
0120-4189808
0129-2290152
0129-2267 07 8
0129-2977562
फैक्स नं. -
011-66304690
0129-2297 640
मो. : 9811157 562,
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र फरीदाबाद होगा ।
पीआईबी एक्ट अनुसार सभी विवादित समाचारों की ज़िम्मेदारी समाचार लेखक की होगी भेदीनज़र संस्थान ,संपादक और प्रधान संपादक क़ानूनन ज़िम्मेदार नहीं होगा